अध्याय 15

यीशु की पेशियां, क्रूस पर चढ़ाया जाना और दफ़नाया जाना

यीशु के जवाब न देने पर पिलातुस की हैरानी (15:1-5)[1]

[1]भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों, पुरनियों, और शास्त्रियों ने वरन् सारी महासभा ने सलाह करके यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पिलातुस के हाथ सौंप दिया। [2]पिलातुस ने उससे पूछा, ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' उसने उसको उत्तर दिया, ''तू आप ही कह रहा है।'' [3]प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे। [4]पिलातुस ने उससे फिर पूछा, ''क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?'' [5]यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।

आयत 1. अगला वचन स्पष्ट बताता है कि यहूदी धार्मिक अगुवे सीधे तौर पर यीशु की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार थे। **भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों, पुरनियों, और शास्त्रियों ने वरन् सारी महासभा ने सलाह** की। दिन चढ़ने के बाद, ''सारी महासभा'' ने यह निर्णय करने की सलाह की कि उसका क्या किया जाए। यह मन्दिर के ''चैम्बर'' में हुई सभा की मीटिंग में हुआ होगा (लूका 22:66)। केवल मन्दिर की भूमि पर लिए गए निर्णयों को ही मान्य माना जाता था और ये कपटी अगुवे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि देखने में ये कार्यवाहियां कानूनी लगें।

यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर पुंतियुस **पिलातुस** के घर ले गए (देखें लूका 3:1),[2] जोकि स्पष्टतया अंटोनिया के किले में या पर, मन्दिर के मैदान के ऊपर था। पिलातुस का मुख्य निवास झील के किनारे कैसरिया में था, परन्तु यरूशलेम में उसे सुरक्षित स्थान पर रहना पड़ता था। पर्व के समय ख़तरनाक होते थे और किले की रक्षा का ज़िम्मा रोमी सेना का होता था।

1961 में कैसरिया मैरिटीमा में पिलातुस का पहला पुरातत्वीय प्रमाण जहां से पिलातुस और पिलातुस के मित्र और वरिष्ठ अधिकारी उसे रोम की ओर से हाकिम बनाकर पलिश्तीन में भेजने वाले तिबरियुस कैसर के नामों वाला शिलालेख मिला।[3] साहित्यिक संदर्भों में पिलातुस को ''अटल,'' ''कठोर,'' और ''हठी'' कहा गया है।[4] गवर्नर रहते उसने यहूदियों से दुश्मनी मोल लेकर अपनी गद्दी को खतरे में डाल दिया था। पिछले ''गवर्नरों''[5] ने जहां लोगों को परमेश्वर की आराधना करने से रोकने का साहस नहीं किया था, वहीं साफ़ तौर पर पिलातुस हस्तक्षेप करने से डरा नहीं। उसने रोमी सिपाहियों को कैसर के झण्डे लेकर यरूशलेम में आने दिया। इन झण्डों पर सम्राट आकृति थी, जिस कारण यहूदी लोग उन्हें मूर्तिपूजक मानते थे।[6]

परमेश्वर के लोगों के विरोध में एक और बड़ा अपराध पिलातुस द्वारा यरूशलेम के लिए पच्चीस मील दूर एक चश्मे से नहर बनाने के लिए मन्दिर के धन का इस्तेमाल करना था। यहूदियों ने इस पर बलवा करने पर पिलातुस ने बहुत से यहूदियों को मार डाला और उसका।

लहू उनके दिए बलिदानों के साथ मिला दिया (जैसा लूका 13:1 में मिलता है)।[7]

एक अन्य अवसर पर, लगभग 36 ई. में, पिलातुस ने किसी झूठे नबी के यह दावा करने के कारण कि वह उन्हें दिखाएगा कि मूसा ने इस्राएलियों के कुछ पवित्र बर्तन कहां रखे हुए हैं चढ़ाने के लिए इकट्ठा हुए कई सामरियों को मार डाला। इस क्रूरता की दोहाई इतनी अधिक थी कि पिलातुस को उसके पर लगाए गए आरोपा का उत्तर देने के लिए तुरन्त रोम को बुलाना पड़ा।[8] परन्तु उसने जाने में देर कर दी और पिलातुस के रोम में पहुंचने से पहले तिबरियुस की मृत्यु हो गई (37 ई. में)।[9] इस पेशी का क्या हुआ यह तो पता नहीं है परन्तु यूसबियुस ने लिखा है कि ग्यूस के शासनकाल में आत्महत्या करके पिलातुस "अपना ही हत्यारा और जल्लाद बन गया"[10] (कलिगुला; 37–41 ई.)। यदि यूसबियुस की बात सही थी तो पिलातुस मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद दस से कम साल जीवित रहा।

हाकिम के रूप में पिलातुस को लगा कि जो चाहे वह कर सकता है। यीशु के मुकदमे की सुनवाई करते हुए उसने ऐसा ही किया। परन्तु पेशी वास्तव में मसीह की नहीं बल्कि पिलातुस की चल रही थी। यीशु को छोड़ देने के उसके दुल मुल प्रयासों से यह साबित हो गया कि वह कायर है। वह जानता था कि यीशु को रोम के लिए खतरा नहीं बनने देना, फिर भी उसे लगा कि कोई खतरा नहीं। यहूदियों को साथ मिलाने का उसका इरादा यही था कि वह उन्हें रोम के सामने शिकायत करने नहीं दे सकता था कि उसने यीशु को छोड़ दिया। कोई "अधीन राजा" रोम की सहमति के बिना शासन नहीं कर सकता था। इस कारण रोम की कोई भी शिकायत पिलातुस की गद्दी के लिए खतरा हो सकती थी। उसके केवल अपनी ही सत्ता की चिंता की बात से उसके स्वार्थी होने की बात जुड़ गई।

आयत 2. पिलातुस ने यीशु से पीछे छुड़ाने की कोशिश की। उसने कहा, "**क्या तू यहूदियों का राजा है?**" "राजा" (βασιλεύς, *basileus*) कैसर और हेरोदेस महान जैसे उसके अधीन अधिकारियों के लिए लागू होता था। "सम्राट" के लिए साधारण यूनानी शब्द Σεβαστός (*Sebastos*) लातीनी शब्द *आगस्तुस* के समान था[11] और इसे केवल रोम के सम्राट के लिए इस्तेमाल किया जाता था। हमारे प्रभु ने पिलातुस के प्रश्न का उत्तर हां में देते हुए कहा, "**तू आप ही कह रहा है**" (देखें लूका 23:3)। बुनियादी तौर पर इसका अर्थ यह है, "तूने सही कहा" है।

यीशु और उसके राज्य के बारे में पिलातुस के मन में जो भी उलझन थी, यहूदी कौन का हाकिम होन के नाते उसे स्पष्ट उत्तर मिलना आवश्यक था। यीशु के उत्तर देने का कारण यह हो सकता है। पिलातुस को पता था कि यीशु उसके शासन के लिए खतरा नहीं है क्योंकि वह यीशु की तीन वर्षों की सेवकाई के बारे में निश्चय ही अनजान नहीं था। उसके कुछ उपदेश और चंगाई पिलातुस के अपने इलाके में होती थी। इसके अलावा गवर्नरों के बहुत से जासूस होते होंगे जिस कारण पिलातुस को पता था कि प्रधान याजकों ने यीशु को "डाह से" पकड़वाया था (15:10; मत्ती 27:18)।

यूहन्ना 18 में यीशु और पिलातुस के बीच हुई चर्चा का और विवरण है। यीशु ने आगे बताया कि उसके राज्य के सेवकों ने क्यों नहीं लड़ना था। यह एक "आत्मिक" राज्य था, जिस कारण उसके चेलों ने कोई राजनैतिक विद्रोह आरम्भ नहीं करना था। यीशु ने कहा, "मेरा राज्य

इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)। जवाब में पिलातुस ने प्रश्न को दोहराया, ''तो क्या तू राजा है?'' (यूहन्ना 18:37)। यीशु ने कहा, ''तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है'' (यूहन्ना 18:37)। यीशु का राज्य सच्चाई का आत्मिक क्षेत्र है जिस कारण उसमें केवल सच्चे मन से विश्वास करने वाले ही प्रवेश कर सकते हैं। यीशु के सच्चाई की बात करने पर पिलातुस इस विचार से विरोध में ही वास्तविक ''सच्चाई'' हो सकती है, बाहर चला गया (देखें यूहन्ना 18:38)। मसीह ने पिलातुस को और बहुत कुछ बताया होगा, परन्तु साफ़ था कि हाकिम सच्चाई की किसी बात को सुनने को तैयार नहीं था। आज बहुत से लोगों का रवैया ऐसा ही है।

आयतें 3-5. जब **प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे** (15:3), तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने उचित अधिकारियों के प्रश्नों के उत्तर तो देने, परन्तु झूठे लोगों को जवाब नहीं देना था।[12] आम तौर पर अफ़वाह या झूठी गवाही का जवाब न देना अच्छा होता है, चाहे अदालत में शपथ दिलाकर कही जाने वाली बातों के लिए पर्याप्त उत्तर देना आवश्यक हो सकता है।

जब पिलातुस ने पूछा, ''तू कहां का है'' (यूहन्ना 19:9), तो यीशु ने उत्तर नहीं दिया। और प्रश्न पूछते हुए हाकिम ने यीशु से अपनी सफ़ाई देने को कहा। उसने पूछा, **''क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता? देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?''** (मरकुस 15:4)। जब **यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया** तो पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ (15:5)।

यीशु के साथ होने पर पिलातुस सच्चाई के सामने लाचार लगा, परन्तु उसका मानना था कि गद्दी पर बना रहने के लिए उसे राजनैतिक तरीका अपनाना पड़ेगा। अब तक पिलातुस को यह समझ में आ चुका था कि यीशु कोई राजनैतिक क्रांतिकारी नहीं था, परन्तु लहू की मांग करने वाली भीड़ के सामने पिलातुस की कायरता एक रुकावट थी कि यीशु की किसी बात का कोई असर नहीं होना था। सम्भवतया पिलातुस सच्चाई को इसलिए नकारा क्योंकि उसे लगा कि ''यीशु यहूदियों द्वारा लगाए गए इतने आरोपों में से किसी में तो दोषी होगा!'' साथ ही उसे बुरा लगा क्योंकि उसने यीशु द्वारा किए गए बहुत से आश्चर्यकर्मों के बारे में सुन रखा था और कहीं न कहीं उसके मन में था कि वह परमेश्वर की ओर से है।

अपने आपको परेशानी से निकालने की उम्मीद से, पिलातुस ने यीशु को हेरोदेस के पास भेज दिया; परन्तु थोड़े बहुत तिरस्कारपूर्ण प्रश्न पूछे जाने और ठट्ठा करने के बाद हेरोदेस ने उसे वापस भेज दिया (लूका 23:7-11)। अंत में पिलातुस ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसे सच बोलना पड़ेगा। यीशु को हेरोदेस के पास भेजने परन्तु फिर लौटा दिए जाने के बाद पिलातुस ने कहा, ''... जिन बातों का तुम उस पर दोष लगते हो, उन बातों के विषय में मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया है'' (लूका 23:14)।[13]

पिलातुस का डर जायज़ था क्योंकि उसने लोगों से सुन रखा था कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था (यूहन्ना 19:7-9)।[14] परन्तु उसका सबसे बड़ा डर यह था कि यदि वह यीशु को छोड़ देता है तो उस पर आरोप लगेगा कि ''उसकी भक्ति कैसर की ओर नहीं''

(देखें यूहन्ना 19:12)। उसे पता था कि यहूदियों द्वारा रोम के पास कोई भी और आरोप या शिकायत कैसर के दरबार में उसके अंत पर मोहर कर सकती था। इसके बाद से, उसके विवेक डर बैठ गया।

पिलातुस के यह कहने से पहले तक कि ''तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?'' (यूहन्ना 19:10) यीशु ने कोई जवाब नहीं दिया था। उसके जवाब का अर्थ यह था कि रोम से मिलने वाली थोड़ी सी शक्ति के विपरीत जो पिलातुस को दुविधा से नहीं निकाल सकता, उसके पास उसकी शक्ति परमेश्वर की ओर थी। हमारा प्रभु दिखा रहा था कि उसकी सामर्थ वास्तव में कहां से है; उसने अपने न्यायी को यह बताया कि बिना ईश्वरीय स्वीकृति के वह कुछ नहीं कर सकता था: ''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है उसका पाप अधिक है'' (यूहन्ना 19:11)। यीशु पिलातुस से यह कह रहा था कि यदि परमेश्वर की योजना में न होता तो उसने उसे मार नहीं पाना था, इस कारण और चर्चा की कोई आवश्यकता नहीं थी। यीशु को अपनी ताकत दिखाने के उसके प्रयास बेकार हो गए थे। यीशु ने पिलातुस ने इससे आगे और कुछ नहीं कहा। आर. सी. फोस्टर ने कहा है कि पिलातुस ''अदालत में असली कैदी था। परमेश्वर के पुत्र के विरोध में अपने हाथ उठा[या], उसे परमेश्वर को जवाब तो देना पड़ना था।''[15]

चाहे यीशु के साथ अन्याय करने के अपराधी हन्ना और काइफ़ा और पिलातुस[16] थे, परन्तु उनके ऊपर दोष साधारण लोग निर्दोष नहीं ठहरा जाते। यीशु की पेशियों के दौरान वहां उपस्थिति अधिकर लोग यहूदिया के रहने वाले थे। ऐसा लगता है कि भीड़ के रूप में उनके मन में धार्मिक अगुओं की मानने का भय था। उन्होंने सार्वजनिक रूप में चिल्लाते हुए कहा था कि यीशु की मृत्यु का दोष उनके ऊपर हो (मत्ती 27:20-25)।

यूहन्ना 18:30 लिखता है कि यहूदी अगुओं ने ही केवल उनके निराधार आरोपों के आधार पर यीशु को मार डालने के लिए पिलातुस के पास ले जाने की कोशिश की; परन्तु उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। बेशक महासभा भी दोषी थी (देखें प्रेरितों 4:10)।

यह जानते हुए कि परमेश्वर की निंदा करने के दोष के आधार पर, वे यीशु को मृत्यु दण्ड नहीं दिलवा सकते थे, सभा ने उस पर रोम का विद्रोह करने का आरोप लगाने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि वह लोगों को गुमराह करने, कैसर को कर देने से मना करने और अपने आपको राजा कहने का दोषी है (लूका 23:1, 2; देखें यूहन्ना 19:12)।

यदि यीशु ने यह कहा होता कि ''कैसर को कर न दो, तो उसने तो लोगों के बीच में अधिक लोकप्रिय होना था।'' बेशक, वह वास्तव में इसके विपरीत बताता था (मत्ती 22:15-22)। इन आरोपों में से केवल एक आरोप में थोड़ी बहुत सच्चाई थी, और पिलातुस ने झट से यह तय कर लिया कि यीशु वैसा राजा नहीं है जो रोम को किसी प्रकार की कोई हानि पहुंचाए (यूहन्ना 18:33-38)। वास्तव में यीशु ने रोम के शासन के विरोध में कभी कुछ नहीं कहा। बेशक पिलातुस वास्तव में हाकिम नहीं था क्योंकि उसने अपने आपको यहूदी अधिकारियों की कठपुतली बनने दिया था, जो मसीह को मार डालना चाहते थे।

बरअब्बा या यीशु? (15:6–11)[17]

[6]पिलातुस उस पर्व में किसी एक बन्दी को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था। [7]बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्दी था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी। [8]और भीड़ ऊपर जाकर उससे विनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर। [9]पिलातुस ने उनको उत्तर दिया, ''क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?'' [10]क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। [11]परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे।

आयत 6. पिलातुस उस पर्व में किसी एक बन्दी को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था। फसह के पर्व पर किसी कैदी को छोड़ देने की परम्परा के सही सही आरम्भ का किसी को कोई पता नहीं है, परन्तु ऐसी परम्पराएं यूनानी और रोमी लोगों में पाई जाती थीं।

आयतें 7, 8. बरअब्बा नाम के इस **मनुष्य** के बारे में हम उससे जो सुसमाचार के विवरणों में दिया गया है बढ़कर और कुछ नहीं जानते। वह कोई छोटा–मोटा चोर नहीं बल्कि डाकू था। **उन बलवाइयों के साथ बन्दी था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी।** उसने कुछ रोमी सिपाहियों को मारा होगा। मत्ती 27:16 में उसे ''माना हुआ बंदी'' बताया गया है जो यह सुझाव देता है कि वह कोई ख़तरनाक आतंकवादी था। स्पष्टतया मरकुस और उसके पाठकों की जानकारी में विद्रोह की बात थी; परन्तु ''किसका?'' के प्रश्न का उत्तर हम केवल इतना दे सकते हैं कि ''पता नहीं।''[18] भीड़ पिलातुस से कहने लगी कि **जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर**, यानी एक कैदी को छोड़ दे।

आयतें 9, 10. पिलातुस ने भीड़ से पूछा, **''क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?''** बरअब्बा को छोड़ देने की पेशकश स्पष्टतया यीशु को छोड़ देने की पिलातुस की इच्छा की जवाबी पेशकश थी। आखिर, **वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था।** ''प्रमाण से यह संकेत मिलता है कि पिलातुस यीशु को छोड़ने की बात इस्राएलियों पर डाल देना चाहता था, परन्तु अगली आयत यह बताती है कि ऐसा करने के लिए उसे इसे अगुओं पर डालना आवश्यक था!''[19]

एक आरम्भिक परम्परा में कहा गया है कि दूसरे कैदी का नाम ''यीशु बरअब्बा'' या ''अब्बा का पुत्र यीशु'' था; परन्तु यह पक्का नहीं है।[20] यह व्यंग्यपूर्ण होगा यदि वास्तविक यीशु अर्थात हमारा उद्धारकर्त्ता, अर्थात पिता का पुत्र ''यीशु/उद्धारकर्त्ता, पिता का पुत्र'' की जगह पर मर जाता।

आयत 11. भीड़ में बरअब्बा के पीछे चलने वाले भी काफ़ी लोग थे, जिस कारण **प्रधान याजकों** [के लिए] **लोगों को उभार** [ना] आसान हो जाना था **कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे।** भीड़ ने यीशु नासरी को छोड़ देने के बजाय किसी अपराधी को छोड़ देने को प्राथमिकता दी होगी।

यह रहस्य कि पिछले रविवार विजयी प्रवेश के समय कितने लोगों ने यीशु की महिमा की होगी (मत्ती 21:8–11), जबकि अब भीड़ के लोग उसकी मृत्यु की मांग कर रहे थे, इस बात में

बताया जा सकता है कि यह भीड़ अलग थी। कुछ अपवादों के साथ, यूहन्ना में यीशु को पकड़ने वालों, सताने वालों और मार डालने वालों को ''यहूदी'' कहा गया है (यूहन्ना 5:16, 18; 7:1; 18:12)। शाब्दिक रूप में ''यहूदियों'' का अर्थ ''यहूदिया के लोग,'' ''यहूदी,'' या ''यहूदा के लोग'' है। यह शाब्दिक व्याख्या इन्हें गलील तथा अन्य क्षेत्रों से आने वाले इस्राएलियों के लोगों से अलग करती है। वहां पर भीड़ में वे लोग थे जो महायाजक या अन्य धार्मिक अगुओं के प्रभाव में थे, न कि गलील के आम लोग जो यीशु की उपासना करते थे और पवित्र नगर में धर्म तंत्र से उनसे अधिक मुक्त थे।

मन्दिर के अधिकारियों ने भीड़ को भड़काकर उन्हें अपनी जाति के विरोध में पिलातुस के द्वारा किए गए अपराधों का स्मरण करवाया होगा। बरअब्बा ऐसा आदमी था जिसे रोम का तख्ता पलटने के लिए बल का प्रयोग करना था, इस कारण लोग उसे छोड़ देने के लिए पुकार कर रहे थे (मत्ती 27:21)। वास्तव में उन्होंने बरअब्बा को छुड़ाने की योजना पहले से बना ली होगी; विद्रोही होने के नाते उसने ''लोगों का आकर्षण होगा।''[21]

यीशु ने जिस प्रकार से डाकू बरअब्बा की जगह ली, वैसे ही उसने हर व्यक्ति की जगह ली। 1 पतरस 3:18 में हम पढ़ते हैं, ''इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने, पापों के कारण एक बार दु:ख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए; वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।''

भीड़ के शासन के सामने पिलातुस का समर्पण (15:12–15)[22]

[12]यह सुन पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, ''तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?'' [13]वे फिर चिल्लाए, ''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!'' [14]पिलातुस ने उनसे कहा, ''क्यों, इसने क्या बुराई की है?'' परन्तु वे और भी चिल्लाए, ''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!'' [15]तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

जब कोई हाकिम केवल जनमत को सुनकर ही अपना मन बना लेता है तो वह अच्छा अगुआ नहीं है। विशेष करके यह किसी नैतिक मुद्दे या न्याय की बात पर लागू होता है। पिलातुस को समझ में नहीं आ रहा था। ऐसा लगता है कि वह मन से तो यीशु छोड़ देना चाहता था परन्तु यहूदी अगुओं से वैर मोल नहीं ले सकता था। रोम में पहले ही उसके विरोध में बहुत सी शिकायतें जा चुकी थीं।[23]

आयतें 12–14. असमंजस में पड़े पिलातुस ने लोगों से पूछा, **''तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?''** (15:12)। यीशु के शत्रुओं को पिलातुस के उसे इस प्रकार कहने पर गुस्सा आया होगा (देखें 15:9)। वे चिल्ला उठे, **''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''** (15:13)। पिलातुस के यह पूछने पर कि **''क्यों, इसने क्या बुराई की है?''** लोग समझ गए कि पिलातुस उनकी बात मान रहा है (15:14)। वे फिर चिल्लाए, **''उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''** बाद में, पिलातुस के यह पूछने पर कि ''क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?'' प्रधान याजकों ने उत्तर दिया, ''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं'' (यूहन्ना 19:15)। यह

सबसे बड़ा कपट था। ये अगुवे पहले कैसर के अधिकार को नकारते रहते थे। वे कर इसलिए चुकाते थे क्योंकि रोम की ओर से विवश किया जाता था। वे कैसर को केवल इसी अर्थ में अपना "राजा" मानते थे। वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने को इतने उतावले थे कि उन्होंने ईमानदारी का हर मुखौटा उतार दिया और वह कहा जो सबको पता था कि झूठ था।

आयत 15. इस स्थिति में से निकलने का रास्ता निकलने की कोशिश करते हुए पिलातुस ने यीशु के लिए अनुशासनात्मक दण्ड का आदेश देने का निर्णय लिया (देखें मत्ती 27:26; लूका 23:16; और यूहन्ना 19:1)। **बरअब्बा को उनके लिये छोड़** देने के बाद उसने **यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए**। उसे उम्मीद होगी कि कोड़े खाया हुआ आदमी लाचार दिखने लगेगा और लोग शांत हो जाएंगे और उसे क्रूस पर चढ़ाने को नहीं कहेंगे। इसके बजाय उन्हें यह जानकर अच्छा लगा होगा कि पिलातुस उनकी इच्छा के सामने झुक गया है।

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले कोड़े मारे जाना आम बात थी।[24] कोड़ा सिरे पर छोटी-छोटी हड्डियां या धातु के टुकड़े लगा होता था।[25] दण्डित व्यक्ति के कपड़े उतारकर, और पीठ झुकाने पर शरीर का पिछला भाग दिखने के लिए खम्भे के साथ बांध दिया जाता था। पहले ही प्रहार से लहू फूटने लगता; कई बार आंख बाहर आ जाती थीं।[26] कैदी के दोनों ओर खड़े होकर दो जन बारी-बारी से उसे मारते। पिटाई से उसके शरीर में से खून निकल आता और मार और चोटों से बेहाल हो जाता।

यीशु के मामले में, यशायाह 53:3 की भविष्यद्वाणी पूरी हुई:

> वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि क्रूस उठाने के लिए उस सहायता की शमौन कुरेनी की आवश्यकता होनी थी (मरकुस 15:21)।

पिलातुस को पता था कि यीशु निर्दोष है (15:14); परन्तु जैसा कि यशायाह ने पेशनगोई की थी कि "दोष लगाकर वे उसे ले गए" (यशा. 53:8)। इसका अर्थ था कि "उसका न्याय नहीं होने पाया" (प्रेरितों 8:33; ESV; NRSV)। उसका न्याय करने वाले ने बार-बार घोषणा की, "मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता।"[27]

जब पिलातुस यह सोच रहा था कि यीशु का क्या करे तो उसकी पत्नी ने उसे एक संदेश भेजा। यीशु के कारण उसे बीती रात को एक भयानक सपना आया था और वह पिलातुस को चेतावनी दी रही थी, "तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दु:ख उठाया है" (मत्ती 27:19)। अपने आप को निर्दोष साबित करने की कोशिश में पिलातुस ने "पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए" (मत्ती 27:24); परन्तु हाथ धोना मन को धोने से आसान है।

हाथ धो लेने की रस्म से पिलातुस ने अपने आपको निर्दोष घोषित करना चाहा; सम्भवतया वह अपनी पत्नी की बात मानकर कर रहा था। किसी बात से "हाथ धो लेना" आज भी किसी

''मामले में हाथ न डालने'' के लिए मुहावरा है (मत्ती 27:19)। निर्दोष होने का हाकिम द्वारा चाहा जाने वाला यह सबसे ज़बर्दस्त काम था। यह उसकी कमज़ोरी, कपट और साहस की कमी को दिखाता है; वह राजनैतिक सुविधा के रास्ते पर चल रहा था, जो कि उसके लिए बड़ा काम नहीं होना था। फिर भी यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का आदेश देने की जिम्मेदारी उसी की थी और इतिहास में वह केवल इसी के लिए प्रसिद्ध है। यहूदा इस्करियोती के साथ-साथ उसके नाम पर भी कलंक है। इतिहास उन दोनों को घृणा से देखता है, क्योंकि एक ''अवसरवादी राजनेता'' था और दूसरा ''धन का लोभी गद्दार'' था।[28]

चाहे पिलातुस दोषी था, पर जो कुछ भी हुआ वह परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग था। प्रेरितों 2:23 कहता है कि यीशु को ''परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया ... अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला'' गया। पिलातुस के यीशु के मामले में अपने हाथ धो लेने पर लोग पुकार उठे, ''इसका लहू हम पर और हमारी संतान पर हो'' (मत्ती 27:25)। यीशु से पीछा छुड़वाने के लिए वे, अपने साथ-साथ अगली पीढ़ी को नरक में दण्ड दिलाने के लिए तैयार थे।

सिपाहियों द्वारा ठट्ठा करवाया जाना (15:16-20)[29]

[16]सैनिक उसे किले के भीतर के आँगन में ले गए जो प्रीटोरियुम कहलाता है, और सारी पलटन को बुला लाए। [17]तब उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, [18]और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, ''हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!'' [19]वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे। [20]जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहिनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए।

आयत 16. सैनिक यीशु को **किले के भीतर आंगम में** ले गए, उनकी यीशु से कोई निजी दुश्मनी नहीं थी, परन्तु सैनिक होने के कारण वे पत्थर दिल बन गए थे। काम के कारण वे तरस नहीं कर सकते थे, विशेषकर पिलातुस जैसे आदमी के अधीन काम करते हुए। उन्होंने यीशु का ठट्ठा उड़ाने के लिए उस पर थूकने से लेकर उसके हाथ में नकली छड़ी देने और उसके सामने माथा टेकने का दिखावा करने तक जो बन सका उन्होंने वही किया (15:17-19)। उन्होंने उसके कपड़े उतार दिए, उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और उसके सिर पर कांटों का एक मुकुट रख दिया (15:20)। स्पष्टतया **सारी पलटन** ने इसमें भाग लिया।

यूहन्ना 19:13 हमें बताता है कि पिलातुस यीशु को भीड़ के पास बाहर ले गया; वह ''गबथा'' या पत्थर के फर्श पर, अपने न्याय आसन पर बैठ गया; यरूशलेम में आने वाले पर्यटकों को ऐसा फर्श दिखाया जाता है। इस पत्थर पर लकीरें पड़ी हुई हैं। ये लकीरें इसलिए थीं ताकि वर्षा का पानी बहकर तालाब में जा सके। इसके अलावा इसमें उन खेलों के निशान भी हैं, जो क्रूस पर चढ़ाए जाने के बीच खाली समय बिताने के लिए रोमी सिपाहियों के द्वारा खेले जाते होंगे। यह अधिक सम्भावना बहुत है कि यही वह ''फर्श'' होगा, जहां सुनवाइयां किए जाने के समय, पिलातुस अपने न्याय आसन पर बैठता होगा।

आयतें 17, 18. मृत्यु दण्ड पाने वाले व्यक्ति का मज़ाक उड़ाना रोमी सिपाहियों के लिए मनोरंजन होता था। **उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर** रखते हुए उसका मज़ाक उड़ाया और पुकारने लगे, "**हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!**" यहूदियों के राजा के रूप में यीशु का मज़ाक उड़ाते हुए वे सब यहूदियों के प्रति घृणा को दिखा रहे होंगे। बैंजनी या गहरे लाल रंग के वस्त्र का अर्थ कइयों के लिए राजसी प्रतीक होने का संकेत देता है, परन्तु यह रोमी घुड़सवारों के वस्त्र का रंग भी था।[30]

दण्ड की आज्ञा की रोमी रस्म यह होगी: जज लातीनी भाषा में *"Illum duci ad crucem placet"* कहता था जिसका अर्थ यह है कि "दण्ड यह है कि इस आदमी को क्रूस पर चढ़ाया जाए।" एक सिपाही से वह कहता, *"I, miles, expedi crucem,"* जिसका अर्थ है, "हे सिपाही, जा और क्रूस को तैयार कर।"[31] रोमी सिपाहियों द्वारा क्रूस को तैयार करते हुए यीशु का ठट्ठा उड़ाया जा रहा होगा।

इस ठट्ठा उड़ाए जाने के आरम्भ से पहले यीशु पहले ही कोड़े मारे जाने का दु:ख उठा चुका था। चोटें चाहे शारीरिक रूप में अति दु:खदायी होते होंगे, परन्तु सिपाहियों का व्यवहार वास्तव में यीशु को उससे भी अधिक पीड़ादायक लगता होगा; क्योंकि उनकी कार्यवाहियों में निजी तौर पर बहुत बुरी तरह से घृणा की गई होगी।

यीशु का इतना मज़ाक जल्द ही उसके बहुत से चेलों के साथ भी जाना था। पोंपयी की दीवारों पर मसीही व्यक्ति के किसी गदहे के आगे झुके हुए होने की तस्वीर है। उस तस्वीर के नीचे ये धुंधले से शब्द लिखे हैं: "अनाकसिमेनस [एक यूनानी दार्शनिक-अनुवादक] अपने देवता की पूजा करता है!"[32] इस कलाकृति को "ईश्वर" के यीशु का मज़ाक उड़ाया माना जाता है; 79 ई. से थोड़ा पहले किया जाता था जब वैसुवियुस पहाड़ के फटने से नगर जवालामुखी की राख में दफ़न हो गया। संसार को मसीहियत और इसके अगुओ की हंसी उड़ाना अच्छा लगता है। अपमान या सताव झेलने से हमें यह याद रखने में मदद मिल सकती है कि जो कुछ यीशु के साथ किया गया वह उससे जो हमारे साथ होता है, कहीं बुरा था।

आयत 19. सिपाही **उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे**। हो सकता है कि यीशु को दोबारा कोड़े मारे गए हों।[33] उसे दोबारा कोड़े मारे जाने के कारण ही क्रूस पर उसकी मृत्यु इतनी जल्दी हुई होगी। यीशु ने कोड़े मारे जाने की भविष्यद्वाणी की थी (मरकुस 10:34)। कांटों का मुकुट (15:17), और लहू-लुहान पीठ के कारण भीड़ के लिए यह भयंकर दृश्य था।

सुसमाचार के विवरण यीशु के दु:ख उठाने के बहुत अधिक होने के विस्तार में नहीं जाते। हमें यह विचारने योग्य लग सकता है,[34] परन्तु यह पवित्र शास्त्र की सादगी का भाग है। बाइबल उसे जो हमारे लिए महत्वपूर्ण लगता है, बढ़े चढ़ाकर नहीं बताती या कहानी को सनसनी में नहीं बदलती, जैसा कि आज मानवीय कल्पना और नाटकी रूप देने के लिए किया जाता है। उसने यह सब यह जानते हुए कहा कि वह उस काम को कर रहा है जो पिता ने उसे करने को दिया था (यूहन्ना 17:4)।

मरकुस ने पिलातुस द्वारा लोगों से की गई अंतिम अपील को नहीं लिखा है। जब वे क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए चिल्लाना बंद नहीं हुए, तो अंत में उसने यीशु को उन्हें "सौंप दिया कि

क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (15:15; देखें यूहन्ना 19:16)। खीझकर उसने भीड़ से कहा, ''तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता'' (यूहन्ना 19:6)। यहूदियों ने मान लिया कि यीशु के दोष की उनकी समझ उनकी व्यवस्था पर आधारित थी जो परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करने वाले को दोषी ठहराती थी (यूहन्ना 19:7)।

आयत 20. अवैध सुनवाइयों, जानबूझकर की गई गलत व्याख्याओं और क्रूरतापूर्ण ठट्ठों के एक के बाद एक बेहूदापन के खत्म होने पर परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह को मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया गया। जिन्हें पता था कि वह निर्दोष है, वे भी उसकी ओर से बोलने या सच का साथ देने की अपनी बात रखने के लिए परेशान थे। अंत में सिपाही **उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहिनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए**। अंत में, बुरी तरह से मार खाने और थक जाने के बाद यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए ले जाया गया (मरकुस 15:20; यूहन्ना 19:17)।

शमौन कुरेनी (15:21, 22)[35]

[21]सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन, एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। [22]वे यीशु को गुलगुता नामक जगह पर, जिस का अर्थ खोपड़ी की जगह है, लाए।

बुरी तरह से पिटाई होने के बाद निढाल होने के कारण नगर से बाहर ले जाते समय शमौन के आने से बिल्कुल पहले यीशु क्रूस के भार के नीचे आ गया होगा। यूहन्ना 19:17 कहता है कि यीशु अपना क्रूस उठाए बाहर गया, परन्तु यह तथ्य कि उसकी सहायता के लिए किसी और की आवश्यकता पड़ी, इस बात का संकेत है कि वह इतनी बुरी तरह से घायल हो गया था कि वह इसे अपने आप नहीं ले जा सकता था।

आयत 21. शमौन कुरेनी यरूशलेम में आ ही रहा था। चाहे वह मासूम दर्शक था, फिर भी उसे यीशु का क्रूस उठाने में सहायता करने के लिए विवश किया गया।[36] वह उत्तरी अफ्रीका के कुरेने नामक एक समृद्ध नगर का रहने वाला था, परन्तु ''शमौन'' नाम से यह संकेत मिलता है कि वह यहूदी था।[37] हो सकता है कि उसने यहूदी मत धारण कर लिया हो। कुरेने में यहूदियों की बड़ी जनसंख्या थी,[38] और शायद यरूशलेम में कई आराधनालयों का इस्तेमाल कुरेनियों द्वारा किया जाता था (देखें प्रेरितों 2:10; 6:9)। बाद में करेनी लोग सुसमाचार सुनाते थे (प्रेरितों 11:20); हो सकता है कि शमौन और उसके पुत्र, सिकन्दर और रूफुस उन्हीं में से हों।[39]

NASB में कोष्ठक में (अनुवादक) दिया **रूफुस** हो सकता है कि वही हो जिसका नाम पौलुस ने रोमियों 16:13 में दिया है। यदि ऐसा है तो हो सकता है कि तब तक शमौन मर चुका हो और पौलुस ने जिसे अपनी ''माता'' माना, वह उसी की विधवा हो। यह तथ्य कि यह वाला रूफुस रोम में था, इस विचार का समर्थन करता है कि मरकुस की पुस्तक रोम की कलीसिया को लिखी गई थी।[40]

शमौन कुरेनी प्रायश्चित के काम में थोड़ी देर के लिए भाग ले पाया, इसका हमारे लिए अर्थ है।[41] यदि वह यहूदी मत में आ गया था, तो निश्चय ही वह फसह मनाने के लिए आया हुआ था।

शायद यह आना पवित्र नगर में पर्व मनाने की जीवन भर की इच्छा को पूरा करना था। क्रूस को उठाना उसे अच्छा नहीं लगा होगा। इसलिए नहीं कि उसे उठाने के लिए विवश किया गया था बल्कि इसलिए भी क्योंकि इसे छूने से वह औपचारिक रूप में अशुद्ध हो गया था, जिस कारण फसह मनाने में भाग लेने के अयोग्य हो गया (देखें गला. 3:13)। व्यवस्थाविवरण 21:23 काठ पर लटकाए जाने वाले के लिए श्राप की बात करता है। संकेत से इसका अर्थ यह है कि क्रूस को छू लेने वाले किसी भी यहूदी को श्रापित या अशुद्ध माना जाना था।

प्रेरितों 13:1 में ''शमौन'' का उल्लेख है जो ''नीगर'' कहलाता था, जिसका अर्थ काले रंग का है और सम्भवतया वह अफ्रीका से था। यदि यह वाला शमौन वही था, तो सचमुच में वह प्रभु का विश्वासी सेवक बन गया। इस अफ्रीकी आदमी को जिसने यीशु का क्रूस उठाकर उसकी सहायता की थी, कितना अधिक सम्मान दिया गया! हम सब को भी वैसे ही, बिना किसी दबाव के अपने अपने क्रूस उठाकर यीशु के पीछे चलना चाहिए।[42] प्रभु के लिए हमें जो भी बोझ उठाना पड़े, चाहे यह कठिन लगे, परन्तु हम शमौन के जैसे बनकर इसे आनन्द में बदल दें! हमारे दिल की कमज़ोरी, विश्वास की कमी या रुकावट डालने वाला पाप, हमारा ''क्रूस'' हो सकता है; यदि हम अपने बोझों को विश्वास के साथ उठाते हैं तो प्रभु उन्हें हमारे लिए हल्के कर देगा (मत्ती 11:28-30)।

क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह पर ले जाए जाते समय, दण्डित व्यक्ति चार सिपाहियों के घेरे में चलता था। एक और सिपाही उस अपराध की तख़्ती लिए जिसके लिए उस कैदी को दण्ड मिला होता था, आगे-आगे चलता था। जुलूस क्रूस पर चढ़ाए जाने के मार्ग में आने वाली हर गली में से निकलता, और क्रूस पर चढ़ाए जाने के वास्तविक आदेश दिए जाने से लेकर लगभग तीन घण्टे लग जाते। कैदी पर हंसने या उसका मज़ाक उड़ाने के इच्छुक हर व्यक्ति को अवसर मिलता। यीशु के मामले में इस तमाशे से अविश्वासियों का विश्वास और मज़बूत हो गया होगा कि वह कोई झूठा नबी है।

गुलगुता के सम्भावित मार्ग को अब यरूशलेम के आस-पास ''क्रूस के पड़ावों'' के साथ चिह्नित कर दिया गया है, जहां पर यीशु कथित रूप में गिरा होगा, उसे ठोकर लगी होगा या उसने आगे बढ़ने के लिए किसी से सहायता ली होगी। यीशु के शत्रुओं द्वारा उसका मज़ाक उठाए जाने पर, वह अविश्वासी लोगों के मन में बदनाम हो रहा था। किसी कारण या व्यक्ति का मूल्य या न्याय जो भी हो, आलोचक असभ्य और बेदर्द हो सकते हैं।

क्रूस पर बढ़ने को अपने साथ पीछे-पीछे चल रही रोती हुई स्त्रियों को कही गई यीशु की बातें चिह्नित कर रही थीं। उसने उसे ''यरूशलेम की पुत्रियो'' कहकर सम्बोधित किया। इन स्त्रियों का वहां होना यह दिखाता है कि उस दिन यीशु कुछ विश्वायोग्य मित्र थे। उसने दृष्टांत रूप में बात की:

> लोगों की बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली और उसमें बहुत सी स्त्रियां भी, जो उसके लिये छाती-पीटती और विलाप करती थीं। यीशु ने उन की ओर मुड़कर कहा, ''हे यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, 'धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और

वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया।' उस समय 'वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर गिरो, और टफलों से कि हमें ढांप लो।' क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?'' (लूका 23:27-31)।

यीशु का हरे पेड़ कहने का मतलब यह था कि यदि रोम ने निर्दोष के साथ इतना बुरा किया है तो दोषी यरूशलेम के साथ उन्होंने इससे भी बुरा करना था। यह भविष्यद्वाणी तक पूरी हो गई 70 ई. में यरूशलेम के विनाश के साथ जब लोगों का विद्रोह खत्म हो गया। यीशु ने चेतावनी दी कि वह समय आने पर माताओं ने यह दुआ करनी थी कि काश वे बांझ ही रहतीं, जिस कारण उसने उन्हें उसके लिए रोने के बजाय अपने लिए रोने को कहा। आखिर उसने जल्द ही मुर्दों में जी उठना था और भविष्य में उनके साथ परेशान नहीं होना था।

आयत 22. वे यीशु को गुलगुता नामक जगह पर, जिस का अर्थ खोपड़ी की जगह है, लाए। क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह को ''खोपड़ी की जगह'' क्यों कहा जाता था, यह अनुमान लगाने वाली बात है। ''गुलगुता'' अरामी भाषा के शब्द *गुलगुता* से लिया गया है जिसका अर्थ है *''खोपड़ी जैसा नंगा, गोल, टीला या पहाड़ी।''*[43] KJV में लूका 23:33 में ''कलवरी'' है जो कि लातीनी शब्द *Calvaria* (*क़लवरिया*) से लिया गया है जिसका अर्थ है ''खोपड़ी।'' शब्द के एक रूप का अर्थ खोपड़ी का गोल सिरा था और यह नाम गोल पहाड़ी के लिए हो सकता है। यह पहाड़ी खोपड़ी के आकार की थी या नहीं या शायद वहां पर पहले मारे गए लोगों की खोपड़ियां पड़ी रहती थीं या नहीं, हम नहीं जानते। हम पक्का बता सकते हैं कि जगह उस समय शहरपनाह के बाहर थी। जिस पहाड़ी को ''गुलगुता'' कहा गया है आज वह खोपड़ी के जैसे लगती है, परन्तु किसी भी प्राचीन साहित्य में उसे यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह नहीं बताया गया।

बहुत से लोगों का मानना है कि जिस जगह पर यीशु की मृत्यु हुई और जहां उसे दफ़नाया गया था और चर्च ऑफ़ द होली सेपल्कर वाली जगह है।[44] यह भवन आज यरूशलेम की चार-दीवारी के अंदर है, परन्तु पहली सदी में यह चार-दीवारी के बाहर होगा।

यीशु का दाखरस लेने से इनकार करना और उसके वस्त्र बांटे जाना (15:23-26)[45]

[23]वहाँ उसे मुर्र मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उस ने नहीं लिया। [24]तब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया और उसके कपड़ों पर चिट्ठियाँ डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बाँट लिया। [25]और एक पहर दिन चढ़ आया था, जब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया। [26]और उसका दोषपत्र लिखकर उसके ऊपर लगा दिया गया कि ''यहूदियों का राजा''।

आयत 23. जब यीशु को **मुर्र मिला हुआ दाखरस** दिया गया तो **उसने नहीं लिया।** बेबिलोनियन ताल्मुड जो पहली सदी की घटनाओं को दर्ज करने के लिए कुछ सदियों के बाद लिखा गया था, में धार्मिक यहूदी महिलाओं की टोली की बात की गई है जो हर क्रूसारोहण पर मर रहे व्यक्ति की पीड़ा को कम करने के लिए दशा मिला दाखरस देने के लिए वहां रहती थीं।[46]

ताल्मुड में संकेत है कि दाखरस को सुलाने वाला बनाने के लिए लोबान के साथ मिलाया जाता था।[47] मरकुस का विवरण यह बताता है कि इसमें मुर्र के साथ मिलाया गया था, जो कि बेहोश करने के लिए होगा। मत्ती 27:34 के अनुसार, ''उन्होंने पिता मिला हुआ दखरस उसे पीने को दिया।'' सम्भवतया दाखरस में मुर्र और पित दोनों मिलाए गए थे। कोई संदेह नहीं कि यह मिश्रण बेसवाद था, परन्तु यीशु ने इसे लेने से मना इसलिए नहीं किया। उसे पता था कि यदि वह इसे ले लेता है तो अंत तक उसे होश नहीं रहनी थी[48] और अपने अंतिम शब्द कहने के लिए उसका होश में रहना आवश्यक था।

इस मिश्रण को दिए जाने की पेशकश से भजन 69:21 पूरा हुआ:

> लोगों ने मेरे खाने के लिये इन्द्रायन दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया।

अर्थ यह है कि यह उलटा संकेत था। हमें क्रूस के पास खड़ी रहने वाली दयालु स्त्रियों के यह पेय दिये जाने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। हाकिमों और क्रूस के पास खड़ी भीड़ के डर से ये महिमलाएं देखने के बजाय और कुछ नहीं कर रही थीं। यदि यह पेय तरस करके दिया जाता होगा तो यीशु को यह किसी सहानुभूति रखने वाले सिपाही द्वारा दिया जा सकता था। फिर भी उसने इसे स्वीकार नहीं किया। यीशु के लिए दु:ख सहना आवश्यक था। पिता की इच्छा यह थी कि वह क्रूस के अपमान के साथ-साथ उसकी पीड़ा को भी सहे। उसके लिए हमारे अपराधों के लिए दु:ख का कटोरा पीना आवश्यक था (मत्ती 26:39)। उसने क्रूस का अपमान सहने के लिए अपने आपको दे दिया और इसमें आनन्द करने के लिए आया (देखें इब्रा. 12:2)।

आयत 24. क्रूस पर चढ़ाए जाने की यह प्रक्रिया में यह होता होगा: क्रूस को सीधे भूमि पर लिटा दिया जाता, कैदी को इसके ऊपर डाल दिया जाता और फिर हाथ और पांव क्रूस पर कीलों के साथ ठोक दिए जाते। पांवों को ढीला करके बांधा भी जाता। नये नियम में यीशु के पांवों के बेधे जाने की बात नहीं है, परन्तु भजन 22:16 में इसकी पेशनगोई की गई हो सकती है।[49]

पुरातत्वविदों को 1968 में यरूशलेम में एक आदमी की हड्डियां मिलीं, जिसे 70 ई. से कई दशक पहले क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसके पांवों में सीधा करके एक-एक कील ठोके गए थे और लकड़ी में एक मेख मिली। यह उसकी किसी ग्रंथी के साथ लगकर मुड़ गया होगा, जिस कारण इसे आसानी से नहीं निकाला जा सका। नये नियम में चाहे यह साफ़ नहीं बताया गया है कि यीशु के पांवों को कीलों से क्रूस के साथ ठोका गया था, परन्तु यीशु ने संकेत दिया कि उसके पांव बेधे गए थे, जब उसने कहा, ''मेरे हाथ और मेरे पांव को देखो'' (लूका 24:39)।

यह तर्क दिया गया है कि ''हाथ'' में कलाइयां भी होंगी, क्योंकि कील ठुके हाथ, क्रूस पर चढ़े व्यक्ति के शरीर का बोझ नहीं उठा सकते होंगे। जो भी हो, यीशु के हाथ बेधे गए थे। कई बार गद्दी या सीट बनाने के लिए क्रूस में नक्काशी की जाती थी जिससे क्रूस पर चढ़े व्यक्ति का शरीर टिक सके; कई बार, इसके लिए ऊपरी शहतीर में एक कील लगाया जाता था। आसन हमेशा नहीं लगाया जाता था; वास्तव में कई बार हाथों और पांवों पर शरीर का पूरा भार डालने के लिए क्रूस को आगे की ओर झुकाया जाता था।[50] यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के सम्बन्ध में सुसमाचार के वर्णन में कील ठोके जाने का कोई वर्णन नहीं है। वचन केवल यह कहता है

कि **उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया**[51] जिसका अर्थ यह है कि उसे क्रूस पर कीलों से ठोका गया था (15:25; देखें मत्ती 27:35)।

क्रूसारोहण आम तौर पर व्यक्ति के कपड़े उतारकर किया जाता था। आदर्श यहूदी पांच वस्त्र पहनता था: एक भीतरी वस्त्र, एक बाहरी वस्त्र, जूते, कमरबंद, और पगड़ी। सामान्य वस्त्र के दो भाग होते थे, जो कसकर कंधों के साथ लगा होता था; परन्तु यीशु का ''कुरता बिन सीअन'' के था (यूहन्ना 19:23)। जोसेफ़स ने लिखा है कि महायाजक का कुरता अनसिला होता था।[52] इसलिए मसीह का यह वस्त्र भी उसके याजक होने का संकेत है।[53] ऐसे वस्त्र को काट देने से यह बेकार हो जाना था, जिस कारण सिपाहयों ने इसके लिए चिट्ठियां डालीं (यूहन्ना 19:24)।[54] क्रूस पर चढ़ाने वाले सिपाही कील ठोकने से पहले वयक्ति के सामान पर दावा करने का अपना अधिकार समझे थे। उन्होंने **उसके कपड़ों पर चिट्ठियाँ डालकर, कि किस को क्या मिले, उन्हें बाँट लिया**।

यह हो सकता है कि रोमी लोग यहूदी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, लंगोट पहना रहने देते हों।[55] परन्तु दूसरे सदी के लेखक मलिटो ने कहा है,

> प्रभु का चेहरा बिगड़ा हुआ है और उसे अपने नंगे तन को ढकने के योग्य नहीं माना गया कि उसका नंगेज दिखाई न दे। इस कारण सारे मुंह फेरकर भाग गए और दिन घना अंधेरा हो गया, ताकि वृक्ष पर लटके नंगे व्यक्ति को छिपा ले, प्रभु के तन को नहीं बल्कि लोगों की आंखों में अंधकार लाने के लिए।[56]

इसके अलावा ''किसको क्या मिले'' के लिए चिट्ठियां डालना संकेत देता है कि यीशु के शरीर पर कोई लंगोट नहीं था।

कोई यह दावा नहीं कर सकता था कि ये बुतपरस्त और अज्ञानी रोमी सिपाही यीशु के वस्त्र के लिए चिट्ठियां डालकर यहूदियों की पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को पूरा करने की कोशिश कर रहे थे। इसलिए भविष्यद्वाणी को पूरा करने में उनका योगदान इसका अतिरिक्त प्रमाण है कि यीशु सचमुच में वही था जो होने का उसने दावा किया था (यूहन्ना 19:24; देखें भजन 22:18)।

आयत 25. यीशु को **पहर दिन चढ़** आने पर क्रूस पर चढ़ाया गया। समय की यहूदी गणना के अनुसार यह प्रात: 8:00 से 9:00 बजे का समय होगा। यूहन्ना 19:14–17 पिलातुस के उसे ''छठे घण्टे के लगभग'' क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दे देने की बात कहता है। यह अंतर क यों? सबसे सरल और शानदार व्याख्या यह है कि मरकुस ने समय की गणना की यहूदी प्रणाली को लिया जबकि यहूदी जाति के पतन के कई वर्षों बाद लिखते हुए यूहन्ना ने समय की रोमी गणना का इस्तेमाल किया।[57]

यीशु को लगभग प्रात: 6:00 बजे दण्ड दिया गया था और प्रात: 8:00 से प्रात: 9:00 बजे के बीच क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया, इसलिए दण्ड दिए जाने और वास्तव में क्रूस पर चढ़ाए जाने के बीच समय दो से तीन घण्टे रहा होगा। उस समय का कुछ भाग यीशु को यरूशलेम की गलियों में से ठट्ठा करने वालों के देखने के लिए ले जाने में लग गया होगा। आधुनिक ''Via Dolorosa'' (जिसका अर्थ ''दु:खों का मार्ग'') है, अर्थात वह मार्ग जिस पर ले जाया गया होगा केवल एक परम्परा है। फिर भी हमारे प्रभु को नगर की कई गलियों में ले जाया गया होगा

ताकि सब लोग अपने मसीहा की पराजय को देख सकें। इससे प्रधान याजकों और पुरनियों को विजय का बड़ा अहसास हुआ होगा।

आयत 26. क्रूस के ऊपर "**यहूदियों का राजा**" लिखवाना उनसे बदला लेने का पिलातुस का तरीका था जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़वाने के लिए, उससे चालाकी की थी। यह संदेश सम्भवतया यहूदी अगुओं को चिढ़ाने के लिए कटाक्ष में लिखा गया होगा जिन्होंने हाकिम की नींद खराब करके उसे उससे वह करवाया जो वह करने को तैयार नहीं था। उन्होंने उससे इसे बदलकर "उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं" लिखवाने को कहा (यूहन्ना 19:21)। घटनाओं की इस श्रृंखला में पहली बार पिलातुस ने ज़िद करके कहा कि अब वह नहीं बदलेगा। परन्तु इस छोटी बात पर वह डटा रहा परन्तु बड़े मुद्दे पर उसने पहले ही हार मान ली थी।

रोमियों द्वारा आम तौर पर संक्षिप्त रूपों का इस्तेमाल किया जाता था, यही कारण है कि इस शीर्षक के थोड़े थोड़े अलग संस्करण मिलते हैं। मत्ती 27:37 में "यह यहूदियों का राजा यीशु है" है; लूका 23:38 में "यह यहूदियों का राजा है" है; और यूहन्ना 19:19 में "यीशु नासरी यहूदियों राजा" है। पारम्परिक लातीनी लेखकों ने लिखा है कि पोस्टर या *titulus* कई बार दण्डित व्यक्ति के सामने लगाया जाता था।[58] रेमण्ड ई. ब्राउन ने लिखा है कि ऐसे शिलालेख आम होते थे, पर इनकी आवश्यकता नहीं होती थी।[59]

क्रूस "T" या "X" के आकार का हो सकता था, परन्तु यीशु का क्रूस इस प्रकार से बनाया गया था कि उसके सिर के ऊपर अभिलेख लिखा जा सके (†)। यदि उसके सिर के ऊपर का डण्डा बढ़ा न होता, जैसा कि आम तौर पर हम देखते हैं, तो उसके हाथों को उसके सिर के ऊपर उठाया जाना और उसके सिर को नीचे झुकाया जाना आवश्यक होना था जिससे इसके ऊपर लिखी तख्ती लगाए जाने के लिए जगह रहे। फोस्टर ने निष्कर्ष निकाला कि यीशु के सिर के ऊपर रखा गया अभिलेख इस बात की पुष्टि करता है कि आम दिखाया जाने वाला क्रूस ही सही है।[60]

परमेश्वर इस बात को सुनिश्चित कर सकता था कि रोमियों के अनुमोदन के साथ ऊपर छपा आरोप सही था। पिलातुस ने इसे शायद अपनी घृणा को दर्शाने और यहूदियों से बदला लेने के लिए इसे खुद लिखवाया (यूहन्ना 19:19)। इसे उस समय इस्तेमाल की जाने वाली तीन सामान्य भाषाओं में लिखवाया गया। लातीनी में जो कि रोम की सरकारी भाषा थी; यूनानी में जिसे सब पढ़े लिखे लोग जानते थे; और अरामी में जो कि यहूदियों की सामान्य भाषा थी।[61]

बेबिलोन से वापसी के बाद से इब्रानी (यहूदियों की मूल भाषा) को आम लोगों द्वारा भुला दिया गया था। बहुत से यहूदियों का मानना था कि अपनी प्राचीन भाषा को भूल जाने की बहुत बड़ी हानि है, इसलिए आधुनिक समयों में पुरानी इब्रानी भाषा को फिर से लागू किया गया है। यह पूरी तरह से कभी भी खत्म नहीं हुई थी, क्योंकि मृत सागर के पत्रों की कई हस्तलिपियां इब्रानी भाषा में हैं। (कुछ दूसरी सदी ई.पू. यानी मसीह से पहले की हैं।) पुराने नियम के केवल कुछ हवाले अरामी भाषा में लिखे गए थे।

कई भाषाएं प्रचलन में थीं, जिस कारण फोस्टर ने अनुमान लगाया कि यीशु का मज़ाक उड़ाते हुए, कही गई बातों का अर्थ बताने के लिए शास्त्री, फरीसी और दूसरे अगुवे क्रूस के पास रह गए थे।[62] बेशक उन्होंने इसका अर्थ वही बताया जो वे चाहते थे कि यीशु को कोसने के लिए आने वाले लोग सुन सकें।

यीशु का ठट्ठा उड़ाया जाना (15:27-32)[63]

[27]उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए। [28][तब पवित्रशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग गिना गया, पूरा हुआ।] [29]और मार्ग में जानेवाले सिर हिला-हिलाकर और यह कहकर उसकी निन्दा करते थे, ''वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! [30]क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले।'' [31]इसी रीति से प्रधान याजक भी, शास्त्रियों समेत, आपस में ठट्ठे से कहते थे, ''इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। [32]इस्त्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें।'' और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे।

आयत 27. यीशु **के साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए** गए। रोम के विरुद्ध विद्रोह होते रहते थे और रोमी अधिकारियों को परेशान करने का एक तरीका लूटमार करना था। ऐसे अपराधों के दोषियों को दण्ड आम तौर पर क्रूस पर चढ़ाकर दिया जाता था। यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो अपराधी (15:27) ''डाकू'' (λῃστής, *lēstēs*, ''पकड़े गए आतंकवादी''[64]) थे। उन्हें यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने का कारण हम नहीं बता सकते। हो सकता है कि यह उसे और अपमानित करने के लिए हो। यदि क्रूस पर चढ़ाए जाने का उनका समय पहले से ठहराया हुआ था, तो इससे रोमियों को एक और बार क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी होगी। ये डाकू बरअब्बा के विद्रोही दल के सदस्य ही होंगे। यदि ऐसा था तो पिलातुस के बरअब्बा को न मार पाने के कारण उसे छुड़ाने के लिए यहूदियों के साथ निपटने का उसका यही तरीका होगा। सामूहिक दण्ड बहुत कम दिए जाते थे; यीशु के साथ इन दूसरे दोनों को एक ही बार मारना निराली बात होगी।[65] यह यशायाह 53:9 की भविष्यद्वाणी के महत्व को बढ़ा देता है:

> *और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई,* और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

इन दुष्टों में से एक ने, मरने से पहले, यीशु से यह कहकर कि जब वह अपने राज्य में आए तो उसे स्मरण करे, मन फिरा लिया (लूका 23:39-43)।

आयत 28. [NASB की तरह हिन्दी में भी-अनुवादक] यह आयत कोष्ठकों में मिलती है क्योंकि सम्भवतया यह वचन मूल हस्तलेख में नहीं है। यह बताता है कि अपराधियों के साथ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाने पर **पवित्र शास्त्र का वचन पूरा हुआ**। यशायाह 53:12 की भविष्यद्वाणी थी कि **वह अपराधियों के संग गिना जाएगा**। किसी आरम्भिक शास्त्री को लगा होगा कि यहां पर व्याख्या दी जानी आवश्यक है और उसने लूका 22:37 से ये शब्द ले लिए। इससे पाठक को यह समझने में सहायता मिलती है कि तीन क्रूसों वाला दृश्य ही यशायाह 53:12 की भविष्यद्वाणी का पूरा होना था:

> इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा, और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; क्योंकि *उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया*; तौभी उस ने बहुतों के पाप का बोझ उठ लिया, और, अपराधियों के लिये बिनती करता है।

आयतें 29, 30. पास से गुज़रने वाले लोग यीशु के क्रूस पर टंगा होने पर **सिर हिला-हिलाकर उसकी निंदा करते थे** और उन बातों की जो उसने अपनी सेवकाई के दौरान कही थीं, गलत व्याख्या करते थे। कुछ तो उन्हीं बातों को जिनका उसने दावा किया था, उसकी सुनवाइयों के दौरान उसके विरोध में इस्तेमाल किए गए उसके दावों के साथ उसका ठट्ठा कर रहे थे। **''वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले!''**

ठट्ठा करने वालों और देखने वालों को यह समझ नहीं थी कि वे क्या कह रहे हैं। उन्होंने गलत समझ लिया कि यीशु यरूशलेम के मन्दिर की बात कर रहा था। जबकि यीशु ने वायदा किया था कि वह अपने शरीर को फिर से जिला देगा। उसके शत्रु, जिन्हें कब्र से जी उठने के यीशु के शरीर की बात समझ में नहीं आई, वे उसी समय ''उसकी देह के मन्दिर'' को जिसकी उसने बात की नष्ट कर रहे थी (यूहन्ना 2:21)।

उन्हें इसकी समझ आई हो या न, परन्तु यहूदी अगुओं को पता था कि यीशु ने दावा किया था कि वह मुर्दों में से जी उठेगा। बाद में वे पिलातुस के पास यह विनती करने के लिए गए थे कि उसकी कब्र पर पहरा बिठा दिया जाए क्योंकि वे जानते थे कि यीशु ने तीन दिनों में जी उठने का वायदा किया था (मत्ती 27:63-65)। जी उठने का प्रमाण दिए जाने पर भी, उन्होंने इस पर विश्वास नहीं करना था। इसके बजाय उन्होंने पहरेदारों को यह कहने के लिए घूस दी कि चेले उसकी देह को चुरा ले गए (मत्ती 28:11-13)।

यीशु का ठट्ठा उड़ाते हुए, लोगों ने एक बार फिर से भविष्यद्वाणी को पूरा किया। भजन 22:7, 8 कहता है,

> वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, कि अपने ''यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है।''

आयतें 31, 32. प्रधान याजक और **शास्त्री** उन लोगों में से थे जो क्रूस के पास खड़े होकर यीशु का अपमान कर रहे थे। कोई संदेह नहीं कि उस पर अपनी दिखाई देने वाली विजय पर वे फूल रहे होंगे और उन्हें तसल्ली हो गई थी। वे ताने दे देकर कह कहते हुए उसका मज़ाक उड़ा रहे थे, ''**इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता**'' (15:31)। व्यंग्य करते हुए वे उसे कह रहे थे **इस्राएल का राजा मसीह**। उन्होंने उसकी सामर्थ को देखकर विश्वास करने के झूठे वायदे देते हुए **क्रूस पर से उतर** आने की चुनौती दी (15:32; देखें मत्ती 27:42)।

जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे (15:32)। लूका 23:41 हमें बताता है कि इन डाकू में से एक बाद में संकेत दिया कि उसे पता था कि यीशु ने

कोई कानून नहीं तोड़ा था और उसे अन्यायपूर्ण ढंग से दण्ड दिया गया था। यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों की तरह विद्रोही आम तौर पर सुनते होंगे कि यीशु की शिक्षा जो शांति, प्रेम और आज्ञा मानने की होती थी, किस प्रकार से उनके सारे अंदोलनों को खत्म कर सकती थी यदि बहुत से यहूदी उसमें विश्वास कर लेते।

परन्तु उन अपराधियों में से एक, शायद किसी ठट्ठा करने वाले को यह कहते सुनकर कि ''इसने औरों को बचाया''[66] सोचने लगा, ''यदि इस आदमी ने सचमुच में दूसरों को बचाया है, तो हो सकता है कि मेरे लिए उम्मीद हो!'' उसने क्रूस के नीचे दिए जाने वाले तानों पर गम्भीरता से विचार किया होगा। इस डाकू को यीशु के बारे में पहले थोड़ा बहुत पता होगा। वह लोगों की उस भीड़ में शामिल होगा जिन्होंने पहले या तो यूहन्ना की सेवकाई के दौरान (मत्ती 3:5, 6) या मसीह की अपनी सेवकाई के दौरान (यूहन्ना 4:1, 2) बपतिस्मा लिया हो। यूहन्ना की और यीशु की सेवकाइयों में यहूदियों के लिए बपतिस्मे की प्रसिद्धि को ध्यान में रखते हुए यह बड़ी सम्भावना है कि इस व्यक्ति का बपतिस्मा हुआ हो। बेशक हम पक्का दावा नहीं कर सकते परन्तु यदि उसने पहले यीशु का प्रचार नहीं सुना था तो उसने यीशु से यह विनती कैसे की ''जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना'' (लूका 23:42)?

अपने दोषी होने और यीशु के निर्दोष होने को मानने के कारण डाकू का मन पश्चात्तापी हो गया होगा, परन्तु लगता है कि और भी बहुत कुछ हुआ होगा। जो भी हो, यीशु के पास क्रूस पर लटके हुए यह आदमी बहुत ही प्रभावित हो गया। हो सकता है कि यीशु की इस प्रार्थना से हुआ हो ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि यह नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। इन शब्दों से उसका हृदय नरम पड़ गया होगा और उसने मन फिरा लिया।

यह तो पक्का है कि यीशु ने उस दिन उसे बचा लिया, क्योंकि मर रहे उस आदमी से उसने वायदा किया, ''मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तूं मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा'' (लूका 23:43)। जगत का उद्धारकर्त्ता होने के कारण यीशु यह कह सकता था (देखें यूहन्ना 1:29; 3:16)। इस पापी को बचाने का उसे ईश्वरीय विशेषधिकार था। यह वह सामर्थ है जो हमारे पास नहीं है; हम किसी को भी यीशु की तरह केवल उसमें विश्वास करने पर वैसे तुरन्त उद्धार ने देने का भरोसा नहीं दे सकते। उसी दिन यीशु को और उस डाकू को स्वर्गलोक में ले लिया गया, जो कि निश्चित रूप में उद्धार पाए हुओं के लिए तैयार की गई जगह है।[67] हमारे प्रभु ने इस डाकू को क्षमा कर दिया। इसी प्रकार से उसने मरकुस 2:10-12 में लकवे के रोगी के पाप क्षमा करके चंगाई दी थी।

यह चिल्लाने वाले लोग कि यदि यीशु क्रूस पर से उतर आए तो वे उस पर विश्वास कर लेंगे (15:32) झूठ बोल रहे थे। इसके विपरीत लाज़र और धनवान की कहानी में अब्राहम की कही गई बात सच थी कि ''जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे'' (लूका 16:31)। यहूदियों और उनके धार्मिक अगुओं ने भविष्यद्वाणी वाले मसीहा यानी यीशु को नकार दिया था। उन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों में दिखाई गई उसकी सामर्थ के भरपूर प्रमाण को मानने से इनकार दिया था। उसके मुर्दों में से जी उठने के बाद भी, बहुतों ने विश्वास नहीं करना था। जब लोग इतने पत्थर दिल हो जाते हैं कि वे किसी निर्दोष को भी मार डालें, तो उनकी समझ पर पर्दा पड़ा होता है। जिन्होंने यीशु पर

विश्वास नहीं किया उन्होंने उसके क्रूस पर से उतर आने पर भी विश्वास नहीं करना था।[68] परन्तु संक्षेप में इससे यह पता चलता है कि हम उसमें क्यों विश्वास करते हैं इसलिए कि वह क्रूस पर से नहीं उतरा। इसके बजाय वह हमारे लिए मर गया।

उसकी मृत्यु आवश्यक थी, क्योंकि इससे हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को ऐसे दिखाती है जैसे कोई और नहीं दिखा सकता। यदि वह क्रूस को नकार देता तो उसने परमेश्वर के प्रेम पर पाबंदी लगा देनी थी; परन्तु क्रूस की ओर देखकर हम कह सकते हैं, ''परमेश्वर हम से इतना प्रेम करता है! उसका प्रेम अपार है!'' बिना क्रूस के हमें न तो छुटकारा मिलना था, न नया जीवन, न पश्चात्तापी मन और न ही उद्धारकर्त्ता! उस आराधना सेवा में से जिसमें यीशु की मृत्यु का वर्णन किया गया है हम अपने साथ घर में क्या ले जाते हैं?[69]

अंधकार, परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया (15:33–37)[70]

[33]दोपहर होने पर सारे देश में अन्धियारा छा गया, और तीसरे पहर तक रहा। [34]तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, ''इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी?'' जिसका अर्थ यह है, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' [35]जो पास खड़े थे, उनमें से कुछ ने यह सुनकर कहा, ''देखो, वह एलिय्याह को पुकारता है।'' [36]और एक ने दौड़कर स्पंज को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया और कहा, ''ठहर जाओ, देखें, एलिय्याह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं।'' [37]तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये।

आयत 33. यीशु को पहले पहर क्रूस पर चढ़ा दिया गया था (15:25)। तीन घण्टों के बाद यानी **दोपहर होने पर सारे देश में** अजीब सा **अन्धियारा छा गया, और तीसरे पहर तक रहा**। इसका अर्थ यह हुआ कि अंधकार लगभग दोपहर से लेकर शाम के तीन बजे तक रहा। यह नहीं कहा जा सकता है कि यह अंधकार पूरी पृथ्वी पर था या केवल इस्राएल देश में। यह वैसा ही अंधकार लगता है जैसा मिस्र में दसवीं विपत्ति के समय पड़ा था (निर्गमन 10:21–23)।

यहूदियों ने ''अकाश से कोई चिह्न'' मांगा था और हो सकता है कि इसे चिह्न ही माना गया हो (देखें मत्ती 16:1; मरकुस 8:11; लूका 11:16)। परन्तु यीशु ने कहा कि योना के चिह्न को छोड़ और कोई चिह्न नहीं दिया जाना था (मत्ती 12:39, 40)।[71] यीशु ने उनकी विनती का उत्तर केवल उनके लिए प्रार्थना करके देना था, जैसे उसने लूका 23:34 में की।

यहूदी जाति के दुष्ट हाकिमों को कोई चिह्न नहीं दिया जाना था, इस कारण हो सकता है कि उन्हें उनकी दुष्टता से प्रभावित करने के बजाय इस अंधकार का कोई उद्देश्य हो। निश्चित रूप में यह क्रोध की ईश्वरीय अभिव्यक्ति था और साफ़ है कि इससे आमोस 8:9 की भविष्यद्वाणी पूरी हुई:

> परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, ''उस समय मैं सूर्य का दोपहर के समय अस्त करूंगा,
> और इस देश को दिन दुपहरी अन्धियारा कर दूंगा।''

अंधकार के इस समय की और कई व्याख्याएं दी गई हैं। एक व्याख्या यह है कि दिन

की कार्यवाहियों पर पर्दा डालकर प्रकृति अपना विरोध जता रही थी। यह विचार मूर्त रूप में होकर सर्वेश्वरवाद पर आधारित है।[72] नास्तिक लोग इस आश्चर्यकर्म को केवल संयोग बताकर प्राकृतिक घटना बताने की लम्बे समय से कोशिश करते आ रहे हैं। कई प्राचीन बुतपरस्तों ने इसे ग्रहण बताने की कोशिश की। कइयों का कहना है कि लूका 23:45 इसे सूर्यग्रहण कहता है (''सूर्य का उजियाला जाता रहा''), परन्तु इस भाषा की व्याख्या की जाने की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा फसह के समय पूर्णिमा होती थी और उस दिन सामान्य ग्रहण होने की बात असम्भव होनी थी। औरों का मानना है कि इस स्पष्ट विजय की अपनी घड़ी में शैतान ने अंधकार कर दिया, जिस कारण यीशु को चीखकर हार माननी पड़ी (15:34)।[73] परन्तु यह पक्का नहीं है कि शैतान को प्रकृति पर कभी इतनी शक्ति दी गई हो। अंधकार शैतान का नहीं बल्कि परमेश्वर का काम होना था, क्योंकि इससे रोमी सूबेदार को यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानने में सहायता मिली (15:39)।

हम केवल यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं उस दिन बहुत से लोगों के दुष्कर्मों के कारण परमेश्वर ने लोगों के प्रति अपने क्रोध को जताने के लिए आश्चर्यकर्म के द्वारा आकाश में अंधेरा कर दिया। पहले फसह को याद दिलाने वाला होने के अलावा,[74] यह अंधकार इस बात की घोषणा भी था कि न्याय होने वाला है और लोगों के लिए अच्छा यह था कि वे तैयार हो जाएं।[75] हो सकता है कि यीशु की मृत्यु के समय दोषियों और ठट्ठा करने वालों के मनों में अंधकार का संकेत हो।

आयत 34. अंधकार के इस समय के अंत में, **यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, ''इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी ?''** सुसमाचार के लेखक ने अपने पाठकों के लिए इस अरामी वाक्य का अनुवाद कर दिया। यीशु कह रहा था, **''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया ?''** यह हवाला भजन भजन 22:1 में से लिया गया था:

> हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, ने तू मुझे क्यों छोड़ दिया ? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है ? मेरा उद्धार कहां है ?

उस भीड़ में कुछ लोग ऐसे अवश्य होंगे जो इस प्रसिद्ध हवाले को समझते होंगे और मानते होंगे कि वह पुराने नियम में से दोहरा रहा है।

अनन्तकाल के इस ओर हो सकता है कि यीशु की चीख की हमें पूरी तरह से समझ न आए। ''संसार में मनुष्यों के साथ होने वाली कोई भी उपमा कभी भी परमेश्वर के पुत्र के विलक्षण अनुभव से न्याय नहीं कर सकती।''[76] क्रूस पर चढ़े हुए यीशु के कथनों में, इस महत्वपूर्ण मसीहाई भजन का हवाला केवल मरकुस ने लिखा है।

यीशु के प्रश्न में ''छोड़ दिया'' (ἐγκαταλείπω, *egkataleipō*) शब्द की समस्या यह है कि यह हमें यह पूछने के लिए उकसाता है, ''परमेश्वर यीशु को कैसे छोड़ सकता था जबकि वह तो पिता की इच्छा को ही पूरा कर रहा था ?'' यह कहना शायद ही संतोषजनक लगे कि वह तो आस-पास खड़े लोगों को समझाने के लिए केवल पुराने नियम में से दोहरा रहा था। आलोचकों को इसे यीशु की ''मायूसी'' कहना अच्छा लगता है।[77] परन्तु ऐसी अभिव्यक्ति उसके परमेश्वर होने या उसके चमत्कारी ज्ञान के साथ मेल नहीं खाती। तो फिर परमेश्वर ने उसे

किस अर्थ में छोड़ा?

यह स्पष्ट है कि बाग में उसे छोड़ा नहीं गया था, क्योंकि एक स्वर्गदूत उसकी सेवा के लिए आ गया था (लूका 22:43); परन्तु जहां तक हम जानते हैं, यीशु के क्रूस पर होने के समय कोई नहीं आया। एक स्वर्गदूत ने यीशु की कब्र से पत्थर को हटाने के लिए भूकम्प का इस्तेमाल किया, जिससे स्त्रियां और कुछ चेले कब्र के अंदर देख पाए (मत्ती 28:2); परन्तु वह बाद की बात है।

उस क्रोध को जिसके हम हक्कदार हैं, यानी हमारे पापों का दण्ड को, यीशु पर डाल दिया गया। यह विचार शायद इतना गहरा है कि हम इसे समझ नहीं सकते कि उसने हमारे मनुष्य जीवन को अपने ऊपर ले लिया था। "यहां तक यीशु जीवन के हर अनुभव में से गुज़रा, *सिवाय एक के जो कि उस पाप का परिणाम था जिसे वह बिल्कुल नहीं जानता* [किया] *था।*"[78] पाप लोगों को परमेश्वर से अलग करता है (यशा. 59:1, 2); और यीशु हमारे पाप को उठाकर मृत्यु में पूरी तरह से हमारे साथ मिल गया और थोड़ी देर के लिए परमेश्वर से अलग हो गया। इस अनुभव में से गए बिना कोई मनुष्य सचमुच में इसे समझ नहीं सकता है। इस कार्य के द्वारा (क्रूस पर मरकर) यीशु हमारा बड़ा महायाजक बन गया (देखें इब्रा. 4:15, 16)।

आयत 35. क्रूस पर यीशु की कठिन परीक्षा के दौरान लोग उसे ठट्ठा करते रहे। जब उन्होंने उसे ये शब्द कहते हुए सुना, तो कइयों ने कहा, "**देखो, वह एलिय्याह को पुकारता है।**" "इलोई" कइयों को "एली" (या "एलिय्याह") सुनाई दिया जिससे उन्हें समझ में नहीं आया कि उसने क्या कहा (मरकुस 15:34-36)।[79] न केवल यह पुकार आरामी भाषा में बोली गई थी बल्कि यीशु इतनी अधिक पीड़ा में था कि उससे बोल नहीं पाया गया होगा और सुनने वालों को साफ़ सुनाई नहीं दिया। हो सकता है कि उसकी अपनी माता सहित, साथ खड़ी कुछ स्त्रियों को उसके सही सही शब्द सुनाई दिए और उन्होंने बाद में दूसरों को बता दिए।

आयत 36. हमें बताया गया है कि **एक ने दौड़कर स्पंज को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया**। फिर उन्होंने यह देखने के लिए प्रतीक्षा की कि **एलिय्याह उसे उतारने के लिये आता है कि नहीं**। "सिरका" सिपाहियों का भोजन होता था और दैनिक उपयोग में लाया जाने वाला सामान्य पेय था।[80] यूहन्ना 19:28 कहता है कि यीशु को सिरका "मैं प्यासा हूं" कहने के बाद दिया गया था।[81] यह सिरका उसे किसी सिपाही ने दिया होगा जिसे उस पर थोड़ा तरस आ गया; शायद किसी समझदार सूबेदार ने आज्ञा दी होगी[82] जिसने बाद में अपने विश्वास का अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 27:54; मरकुस 15:39; देखें लूका 23:47)। इससे भजन 69:21 की भविष्यद्वाणी पूरी हो गई:

> और लोगों ने मेरे खाने के लिये इन्द्रायन दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया।

बेशक यीशु ने केवल पवित्र शास्त्र की बात पूरी करने के लिए ही नहीं कहा कि वह प्यासा है। अपने अंतिम क्षणों में बात करने के लिए उसे बल की आवश्यकता थी। उसके अंतिम शब्द "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30) और "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं" (लूका 23:46) होने थे। पहले उसने बेहोश करने वाला होने के कारण इसे पीने से मना कर दिया था; परन्तु अब, मृत्यु के निकट उसने इसे ले लिया। वह अपने होठों और मुंह को भिगोना चाहता

होगा ताकि वह साफ़ बात कर पाए।

आयत 37. प्राण छोड़ देने से पहले **यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर** क्या कहा? ''पूरा हुआ'' हो सकता है (यूहन्ना 19:30); क्योंकि यूनानी भाषा में यह केवल एक ही शब्द में है: ''समाप्ति।'' यह पराजय का नहीं बल्कि विजय का शब्द था। उसका काम पूरा हो गया था, जीत मिल गई थी और व्यवस्था और नबियों की बातें पूरी हो गई थीं (मत्ती 5:17, 18)। उसकी मृत्यु न तो हत्या थी और न आत्महत्या, क्योंकि उसने दूसरों को बचाने के लिए इस मृत्यु के लिए अपने आपको दे दिया था। यीशु ने यह नहीं कहा, ''मैं मर गया''; क्योंकि उसकी मृत्यु स्वेच्छा से थी,[83] और उसे पता था कि थोड़ी देर बाद उसने अपनी महिमा में चले जाना था। उसने ''उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था'' मृत्यु की पीड़ा सही (इब्रा. 12:2)।

सुसमाचार के किसी भी लेखक ने यह नहीं कहा कि यीशु मर गया, बल्कि यही कहा कि उसने ''प्राण त्याग दिए'' (मत्ती 27:50; देखें यूहन्ना 19:30)। ''प्राण'' त्यागकर उसने आत्मा में मृत्यु से जीवन में प्रवेश किया। यहां और लूका 23:46 में इस्तेमाल की गई शब्दावली उसने ''प्राण छोड़ दिए'' अधिक शाब्दिक है,[84] परन्तु स्पष्ट नहीं।

किसी ने कहा है कि क्रूस पर मरने वाला व्यक्ति हज़ार मृत्यु मरता है। कैदियों को अंतिम सांस तक क्रूस पर बहुत कम रखा जाता था; परन्तु कइयों को रखा जाता था, और वे भूख प्यास से मर जाते या बेसुध होने तक मानसिक और शारीरिक पीड़ा में रहते थे। यीशु की पीड़ा बेहद थी, और उसने इसे हमारे लिए सहा।

पर्दा, सूबेदार और स्त्रियां (15:38-41)[85]

38और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया। 39जो सूबेदार उसके सामने खड़ा था, जब उसे यूँ चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उसने कहा, ''सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!'' 40कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थीं: उन में मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी थीं। 41जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवाटहल किया करती थीं; और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं।

आयत 38. मन्दिर का परदा लोगों को परम पवित्र स्थान में, जहां प्रतीकात्मक रूप में परमेश्वर की उपस्थिति होती थी, झांकने से रोकता था। पर्दे के पीछे केवल महायाजक प्रवेश कर सकता था और वह भी वर्ष में केवल एक बार। जोसेफ़स ने पर्दे का वर्णन करूबों और परमेश्वर के संरक्षक दूतों के बैंजनी, जामनी और नीले चित्रणों वाले सफ़ेद मलमली कपड़े के रूप में किया।[86] यह स्वर्ग के द्वार को दर्शाता था, जो कि तब तक बंद रहा जब तक पर्दा अपनी जगह पर टंगा रहा (देखें इब्रा. 9:7, 8)।

अलग करने वाला यह पर्दा, जो कि साठ फुट ऊंचा था,[87] यीशु की मृत्यु होते ही **ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया**। परोक्ष रूप से इससे उसकी महिमा दिखाई गई, बिल्कुल वैसे, जैसे उसकी मृत्यु के साथ भी भूकम्प आया था (देखें मत्ती 27:54)। पर्दे का फटना परमेश्वर के मार्ग के खुलने का प्रतीक था। अब वह सचमुच में अपने लोगों के बीच वास करता

है, और हमें प्रार्थना और आराधना के द्वारा उसके निकट आने के लिए डरने की आवश्यकता नहीं है (इब्रा. 4:15, 16)। अब पवित्र लोग या उसकी कलीसिया के लोग उसका मन्दिर हैं और वह हमारे अन्दर वास करता है (इफि. 2:20–22; 2 कुरि. 6:16)। परमेश्वर हमारे साथ अब वैसे रहता हैं जैसे किसी समय वह मन्दिर में रहा करता था। निश्चित रूप में संकेत रूप में है, न कि शाब्दिक अर्थ में।

हो सकता है कि पर्दा भूकम्प के कारण फट गया हो, परन्तु यह परमेश्वर के ठहराए समय के कारण हुआ (पत्थर के हटाए जाने पर पुनरुत्थान की तरह)। प्राचीनकाल के लोगों के लिए ऐसा कम्पन परमेश्वर की निकटता का संकेत होना था। बेबिलोनियन ताल्मुड में मन्दिर के द्वार के अनोखे ढंग से खुलने की बात है।[88] आम तौर पर फाटक को खोलने के लिए कई लोग लगते थे; परन्तु कहा जाता है कि फसह के समय आधी रात को फाटक खुल जाता था।[89] ऐसा कथित रूप में 70 ई. में यरूशलेम के विनाश से लगभग चालीस वर्ष पहले होता था, जो पर्दे के इस फटने के साथ जुड़ा होगा। क्या परमेश्वर ने रास्ता खोल दिया, ताकि लोग पर्दे के फटने को देख पाएं?

इसके बाद से, परमेश्वर के लिए मन्दिर का कोई महत्व नहीं रहना था। उसने 70 ई. में इसे रोमियों के हाथों नष्ट होने देना था। परमेश्वर के मन्दिर को बहाल करने या फिर से बनाने की अनुमति देने का बाइबल में कोई कारण नहीं बताया गया। ऐसा अपने लोगों के साथ परमेश्वर की नई वाचा की वास्तविकता से व्यवस्था की परछाई की ओर लौटना होगा (इब्रा. 10:1), जिसका कोई मतलब नहीं है। परमेश्वर ने यीशु के प्रायश्चित के लहू के द्वारा व्यवस्था को पूरा किए जाने से व्यवस्था और पशुओं की बलियों की ओर वापस जाने की क्या आवश्यकता थी। प्रिमिलेनियल थ्योरी (हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा) जिसमें हज़ार वर्ष के राज्य के दौरान फिर से बनाए गए मन्दिर की तरह नये सिरे से पशुओं के बलिदानों का होना आवश्यक होगा परमेश्वर के मेमने के रूप में यीशु द्वारा हमारे लिए बलिदान के सभी लाभों को प्रोक्ष रूप में नकारना है (देखें यूहन्ना 1:29)। पर्दा हटा दिया गया, इस कारण अब हमें "यीशु के लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाब हो गया है" (इब्रा. 10:19)।

आयत 39. सूबेदार एक आश्चर्यजनक परन्तु सही निष्कर्ष तक पहुंचा कि यीशु सचमुच में परमेश्वर का पुत्र था जिस पर यहूदी अगुवे अभी तक नहीं पहुंच पाए थे (देखें मत्ती 27:54)। मरकुस कहता है कि जब उसने यीशु को **यूँ चिल्लाकर प्राण छोड़ते हुए देखा, तो उसने कहा, "सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!"** लूका 23:47 उसे यह कहते हुए बताता है, "निश्चय ही यह मनुष्य धर्मी था।" इस सूबेदार के लिए यह मानने के लिए कि यीशु सचमुच में परमेश्वर का पुत्र होगा यह अगला तर्कसंगत कदम था। यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था, इसलिए उसके निष्कलंक और धर्मी होने को मान लेना यह कहने के बराबर ही था कि "सचमुच वह परमेश्वर का पुत्र था।" इस आदमी ने यीशु के सिर के ऊपर तख़्ती, उसकी मृत्यु का ढंग, उसके क्षमा करने वाले मन की शालीनता, अंधकार और भूकम्प को देखा। इन सब घटनाओं से वह इतना कायल हो गया कि उसने दोनों ही बातें कहीं होंगी।

जैसा कि कइयों ने दावा किया है, यह केवल यह कहने के लिए नहीं था कि सिपाही के कहने का अर्थ था, "वह कोई देव पुत्र था।" हो सकता है कि अपने देवताओं के रोमियों के विचार के कारण उसके लिए ईश्वर पुत्र की इस बात को मानना आसान हो गया; परन्तु कुछ

लोग यह तर्क देने के लिए कि इस सूबेदार ने यीशु में ''परमेश्वर का पुत्र'' के रूप में विश्वास नहीं किया होगा, यूनानी व्याकरण का इस्तेमाल करते हैं। उनका कहना होता है कि यूनानी धर्मशास्त्र में कोई उपपद (''the'') नहीं है जिस कारण इसका अर्थ ''परमेश्वर का पुत्र'' नहीं हो सकता बल्कि केवल ''परमेश्वर का एक पुत्र'' हो सकता है। यह सही है कि यूनानी भाषा में मत्ती 27:43 में कोई उपपद नहीं है, परन्तु ''यह तर्क सुसमाचार के विवरणों में अन्य अवसरों को छोड़ देता है जिनमें 'परमेश्वर का पुत्र' स्पष्ट नहीं बोला जा सकता [बिना उपपद के] परन्तु इसका स्पष्ट अर्थ 'परमेश्वर का पुत्र' है'' (देखें मत्ती 4:3, 6; 27:40, 43; लूका 1:32, 35)।[90] फोस्टर की टिप्पणी है, ''यूनानी व्याकरण का एक बुनियादी नियम यह है कि निश्चित उपपद को व्यक्तिवाचक नाम के साथ लिखा या छोड़ दिया जा सकता है।''[91] भाषा का विश्लेषण सही ढंग से होने पर, सब सहमत हो सकते हैं कि यीशु कह रहा था, ''मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।'' सूबेदार को दिन की घटनाओं में भूमिका मिली हुई थी और उसने यीशु के विरोध में उस सारी उत्तेजना और आरोपों को देखा था, इस कारण उसे अवश्य यह पता होगा कि इस अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है।[92]

बहुत से सूबेदार यहूदी मत में आ गए और उन्होंने यीशु को अपना मसीहा मान लिया होगा। नये नियम में हमें किसी सूबेदार की डांट की बात नहीं मिलती।[93] कुरनेलियुस परमेश्वर से डरता था (प्रेरितों 10:2), जिसका अर्थ यह है कि यहूदी मत के द्वारा मसीह के बारे में कुछ भी बताया जाने से पहले इस्राएल के एक सच्चे परमेश्वर का भक्त विश्वासी बन गया।

आयतें 40, 41. मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी भी यीशु को मरते हुए **दूर से देख रही थीं** (15:40)। जिन स्त्रियों के नाम बताए गए हैं वे यीशु की विश्वासी शिष्या थीं, शायद धनवान स्त्रियां थीं जो उसकी सेवकाई में उसकी सहायता करती थीं (लूका 8:3)। ''कलीसिया हमेशा भक्त स्त्रियों की बहुत ऋणी रही है, आम तौर पर धनवान स्त्रियों की, और ऐसों को तुच्छ जानना मूर्ख की पहचान है।''[94]

हमें बताया गया है कि ये स्त्रियां **जब वह गलील में था तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवाटहल किया करती थीं; और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं, जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं** (15:41)। ये स्त्रियां ईमानदारी से पीछे चलती थीं जब अधिकतर पुरुष यीशु को छोड़ गए थे। बालक मसीह के लिए मन्दिर में सबसे पहले धन्यवाद देने वाली हन्नाह ही थी (लूका 2:36-38), और उसके दफ़नाए जाने से पहले उसे तैयार करने वाली भी स्त्री ही थीं (मरकुस 14:8)। स्त्रियां क्रूस के पास खड़ी रहीं (यूहन्ना 19:25), स्त्रियों ने उसे दफ़नाने में भाग लिया (मरकुस 15:47), और स्त्रियां उसकी कब्र पर सुगंधित वस्तुओं के सुन्दर उपहार लेकर आईं (16:1)। उसके जी उठने की अच्छी खबर सबसे पहले सुनने की हक्कदार वही थीं (16:5, 6)। कुछ स्त्रियां पिन्तेकुस्त के दिन तक प्रार्थना में बनी रहीं (प्रेरितों 1:14), और बाद में हमें उन स्त्रियों के बारे में बताया गया है जिन्होंने आराधना के लिए अपने घरों के द्वार खोल दिए (प्रेरितों 12:12)। पौलुस ने उन स्त्रियों के नाम बताए हैं जिन्होंने सुसमाचार सुनाने में उसकी सहायता की (फिलि. 4:2, 3)।

वचन के इस भाग में स्त्रियां डर गई होंगी और दु:खी हुई होंगी, परन्तु वे कहीं गई नहीं! मरियम की तरह शायद कुछ और स्त्रियां यीशु की शिक्षाओं को सुनकर इन घटनाओं के लिए

पहले से ही तैयार थीं (14:3–9)। चाहे क्रूस पर चढ़ाए जाना कितना भी चौंकाने वाला या दु:खी करने वाला क्यों न हो, वे यीशु से इतना प्रेम करती थीं कि उन्होंने उसे मरने के लिए अकेला नहीं छोड़ा। यीशु की माता क्रूस के नीचे खड़ी रही, हो सकता है कि वह दूसरों की अपेक्षा अधिक पास हो (यूहन्ना 19:25–27)।

''बहुत सी स्त्रियां'' कहते हुए मत्ती 27:55, 56 तीन के नाम बताता है। मरकुस सलोमी का नाम जोड़ता है, जो कि जबदी के पुत्रों की माता थी (मत्ती 27:56)। याकूब और यूहन्ना उसके दो बेटे थे; स्पष्ट है कि उसका पति मर चुका था। यीशु ने मरियम मगदलीनी से सात दुष्टात्माओं को निकाला था (मरकुस 16:9; लूका 8:2)। उसके सरनेम से उसके गृहनगर मगदला का पता चलता है जो कि गलील की झील के किनारे मछलियां पकड़ने वालों का गांव था। उससे बढ़कर प्रभु का आभारी और कौन हो सकता है। कब्र पर जाकर जी उठे मसीह को देखने वाली सबसे पहली वही थी।

यीशु के शव का दफ़नाया जाना (15:42–47)[95]

[42]जब संध्या हो गई तो इसलिये कि तैयारी का दिन था, जो सब्त के एक दिन पहले होता है, [43]अरिमतिया का रहनेवाला यूसुफ़ आया, जो महासभा का सदस्य था और आप भी परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था। वह हियाव करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव माँगा। [44]पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि वह इतने शीघ्र मर गया; और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, ''क्या उसको मरे हुए देर हुई?'' [45]जब उसने सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो शव यूसुफ़ को दिला दिया। [46]तब उसने मलमल की एक चादर मोल ली, और शव को उतारकर उस चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया। [47]मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है।

आयत 42. सप्ताह के जिस दिन यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया वह **तैयारी का दिन** या **सब्त के एक दिन पहले** का दिन था। यह सब्त फसह के साथ इसके सम्बन्ध के कारण विशेष था। उस दिन यदि कोई शव क्रूस पर टंगा रहता तो इससे सब्त अशुद्ध हो जाना था (व्यव. 21:23)। अपराधियों के शव आम तौर पर बिल्कुल दफ़नाए ही नहीं जाते थे, बल्कि उन्हें लोगों में अपमानित करने के लिए गिद्धों के लिए छोड़ दिया जाता है। यूहन्ना 19:31–33 हमें बताता है कि यहूदियों ने क्रूस पर चढ़ाया गए लोगों की टांगें तोड़नी चाही ताकि उनकी मृत्यु सब्त से पहले पहले हो सके; परन्तु यीशु की टांगे नहीं तोड़नी पड़ी, क्योंकि वह पहले ही मर चुका था।

आयत 43. अरिमतिया का रहनेवाला यूसुफ़ आया, जो महासभा का सदस्य था जिसने यीशु का शव ले जाने की अनुमति मांगी (देखें लूका 23:52)। इस काम में निकुदेमुस ने उसका साथ दिया (यूहन्ना 19:39, 40)। मत्ती 27:57 कहता है कि यूसुफ़ ''आप ही यीशु का चेला था।'' ये दोनों ऊंचे रुतबे वाले व्यक्ति समान सोच वाले होंगे, यानी दोनों ही परमेश्वर के राज्य की खोज में होंगे। निकुदेमुस ने रात के समय यीशु से बात की थी, और नये जन्म के बारे में यीशु के साथ हुई अपनी बातचीत को उसने अपने मित्र यूसुफ़ को बताया होगा (देखें यूहन्ना 3:1–7)।

यूहन्ना 19:38 कहता है कि यूसुफ़ ''गुप्त'' चेला था। यदि वह अपने विश्वास को पहले दिखा देता तो उसे महासभा से निष्कासित किया जा सकता होगा। आराधनालय में से निकाला जा सकता होगा और आम तौर पर यहूदियों के अगुओं द्वारा उसका बहिष्कार किया जा सकता होगा।

नये नियम में महासभा के किसी सदस्य को ''आदरणीय'' बहुत कम कहा गया है (मरकुस 15:43; KJV)। NASB और NIV में उसे ''प्रख्यात'' कहा गया है। इसी प्रकार से यूसुफ़ ''सज्जन और धर्मी पुरुष'' था जो **परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था** और यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से सहमत नहीं था (लूका 23:50, 51)। उसे अपनी कायरता पर कितना पछतावा हुआ होगा! इसलिए, **वह हियाव करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव माँगा।**

आयतें 44, 45. पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि वह इतने शीघ्र मर गया, क्योंकि लोग आम तौर पर यीशु के अपने क्रूस पर छह घण्टे बिताने से बहुत लम्बे समय तक रहते थे। **उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, ''क्या उसको मरे हुए देर हुई?''** (15:44)। पिलातुस ने सूबेदार को पता लगाने के लिए भेजा। यूहन्ना 19:34 में हमें बताया गया है कि ''सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा, और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला'' जिससे यीशु की मृत्यु की पुष्टि हो जाने पर, पिलातुस ने **शव यूसुफ़ को दिला दिया** (15:45)।

यीशु के शव को दफ़नाकर यूसुफ़ और निकुदेमुस साहसिक और निडर होकर काम कर रहे थे। उनके हमवतनों को शीघ्र ही पता चल जाना था कि उन्होंने क्या किया और उन्हें अपने यहूदी विश्वास के विश्वासघाती मानना था। शायद उन्होंने यीशु के साथ मारे जाने के योग्य भी माने जाना था।

आयत 46. दो जनों के लिए दिन में यीशु के शव को सही ढंग से लेप लगाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी, परन्तु सब्त आरम्भ होने से पहले-पहले वे जो कुछ कर पाए उन्होंने किया। उन्होंने **शव को उतारकर उस चादर में** जो यूसुफ़ ने खरीदी थी **लपेटा**। ये दोनों धनी मनुष्य थे, जैसा कि उनके महंगे तोहफ़ों से पता चलता है (मत्ती 27:57; यूहन्ना 19:39)। पचास सेर (सौ पौंड) गंधरस और एलवा (यूहन्ना 19:39) किसी राजा के दफ़नाए जाने के लिए होने वाले सामान जितना होगा। यूसुफ़ और निकुदेमुस के मन में था कि प्रभु की देह से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है। इसे मलमल के कपड़े में बड़े प्रेम से लपेटने से पहले उन्होंने इसे क्रूस से बड़ी सावधानी से और बड़े आदर से उतारा होगा! चाहे वे विश्वासी थे, परन्तु स्पष्टतया उनके मन में यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान की कोई बात नहीं थी; नहीं तो उन्होंने इतने ध्यान से और इतना खर्च करके शव को तैयार नहीं करना था।

यूसुफ़ और निकुदेमुस के इतने महंगे तोहफ़े (देखें मत्ती 27:57-60; यूहन्ना 19:39), हो सकता है कि संसार को फ़िज़ूलखर्ची लगे क्योंकि उनकी आवश्यकता इतने थोड़े से समय के लिए थी। परन्तु मरकुस 14:3-9 में मरियम के बलिदान की तरह जहां भी सुसमाचार सुनाया जाता है, वहां इन तोहफ़ों के बारे में भी बताया जाता है। अपनी जान को जोखिम में डालकर इन दोनों ने यीशु के लिए तब अच्छा काम किया जब संसार ने उसे त्याग दिया था और उसके अपने चेले उसके पास से भाग गए थे। जो बात सांसारिक सोच को बेकार या फ़िज़ूल लगती है, हो सकता है कि वह प्रभु के लिए बड़े मोल की हो।

इन लोगों ने यीशु के शव को तैयार करके **एक कब्र में जो चट्टान में खोदी गई थी रखा।**

नाले में रखा एक बड़ा **पत्थर द्वार पर** मोहर लगाने के लिए लुढ़का दिया गया। मत्ती 27:60 कहता है कि यीशु का शव रखने के लिए इस्तेमाल की गई कब्र यूसुफ़ की थी। लूका 23:53 बताता है कि ''उसमें कोई कभी न रखा गया था।'' यूसुफ़ ने इसे अपने लिए बनवाया होगा। चट्टान को काटकर बनाई गई ऐसी कब्र में काफ़ी खर्च आ गया होगा, और इसका इस्तेमाल किसी दूसरे के लिए करना बड़ा बलिदान था।

यीशु की मृत्यु के स्थान के निकट बाग में कब्र यूसुफ़ ने यूं ही बनवाई थी या परमेश्वर की कोई योजना थी? (यूहन्ना 19:41)। शायद रानी एस्तेर की तरह यूसुफ़ भी राज्य में ''ऐसे ही कठिन समय के लिए'' आया था (एस्तेर 4:14)। हो सकता है कि पहले उसका विश्वास मज़बूत न हो, परन्तु फिर भी वह राज्य की खोज में था। क्या उसने इस बारे में यीशु के पहाड़ी उपदेश से कुछ सुना था? (देखें मत्ती 6:33.) उसके कामों ने यीशु के ''मृत्यु के समय धनवान का संगी'' होने की भविष्यद्वाणी को पूरा किया (यशा. 53:9), चाहे यूसुफ़ की मृत्यु उस समय नहीं हुई होगी। शव को लेने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने का उसका एक ही कारण होगा कि वह एक चेला था।[96] सभा का सदस्य होने के कारण यूसुफ़ बाद में यीशु की मृत्यु का कारण बनने वाली घटनाओं और महासभा के निर्णयों की काफ़ी जानकारी दे पाया होगा।

आयत 47. मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है। यह देखने के लिए कि वे शव को कहां रखते हैं (मत्ती 27:61; लूका 23:55) स्त्रियां उनका ध्यान रख रही होंगी ताकि मृत प्रियजन की आम तौर पर की जाने वाली सम्भाल को अच्छी तरह से करने के लिए वे रविवार सुबह-सुबह लौट सकें।

इस्राएल में आज भी ऐसी एक कब्र देखी जा सकती है जो कि हेरोदेस के परिवार की थी; जिसके पास कब्र पर मोहर लगाने के लिए उसके मुंह पर रखा जाने वाला चक्की के पुड़ जैसा एक गोल पत्थर पड़ा है। बाग की कब्र जो आज यरूशलेम में आने वाले पर्यटकों को दिखाई जाती है, लगता नहीं है कि यह वही कब्र हो जिसमें यीशु को रखा गया था। इस बाग को पर्यटकों के आकर्षण के लिए तब नया-नया बनाया गया था जब मैं 1973 में वहां गया था। 1997 तक कब्र के आस-पास पेड़ पौधे और फूल लगाकर इसे बहुत सुन्दर बना दिया गया था। अब तो वहां उस जगह को देखने के लिए टिकट भी लगा दी गई है। टूरिस्ट गाइड पर्यटकों को यकीन दिलाने के लिए कि यीशु को इसी कब्र में रखा गया था बड़े अच्छे से समझाते हैं, परन्तु जी उठने की सच्चाई को स्वीकार करना यह जानने से महत्वपूर्ण है कि उसे कहां रखा गया।

यह तथ्य कि मसीह ''हमारे पापों के लिए मरा'' सुसमाचार की सच्चाई का सार है (1 कुरिं. 15:1-4)। वह दफ़नाया गया, फिर से जी उठा और बहुतों को दिखाई दिया, इससे जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य हैं (1 कुरि. 15:5-8)। हमारे लिए उस सब का लाभ लेने के लिए जिसके लिए मसीह हमारे लिए मरा बपतिस्मे में मसीह के साथ दफ़नाए जाकर, सुसमाचार के संदेश को मानना आवश्यक है (रोमियों 6:3, 4)। फोस्टर ने लिखा है:

> जब कोई यशायाह 53 के विचार को मिला देता है, जो कि यीशु की पेशियों, दु:ख सहने, मृत्यु और दफ़नाए जाने में पूरी हुई भविष्यद्वाणियों के सबसे स्पष्ट विवरणों से भरा है, तो सबसे अनोखी बात यह होती है कि कोई ईश्वरीय प्रबन्ध और ईश्वरीय संदेश को जो

परमेश्वर ने प्रकट किया, कैसे नकार सकता है।[97]

प्रासंगिकता

यीशु और बरअब्बा (15:6–15)

जब हेरोदेस ने यीशु को पिलातुस के पास बिना कोई सुझाव दिए कि उसके साथ क्या किए जाए, भेज दिया तो पिलातुस ने अपने आपको जो पूर्ण कब्जे के लिए लड़ रही थीं दो विरोधी शक्तियों के बीच फंसा हुआ पाया। एक ओर पिलातुस का अपना *विवेक आरोप लगा रहा* था। उसकी अपनी जांच पड़ताल में उसने यीशु को निर्दोष पाया था। न्याय की अपनी जानकारी के कारण उसका विवेक पुकार पुकारकर कह रहा था कि यीशु को बरी कर दे (यूहन्ना 18:38)। दूसरी ओर *क्रुद्ध भीड़* थी। क्रूस पर चढ़ाने से कम किसी बात पर सहमत न होने पर तुला हुआ, यहूदियों का यह हुजूम उसे घूर रहा था। वे पागलपन की हद तक राजद्रोह करने पर उतारू थे। हर ओर से चीख पुकार से परेशान पिलातुस का मन इस सवाल से परेशान था कि आगे क्या करें।

पिलातुस के अपने विकल्पों पर विचार करते हुए यहूदी उस पर यह मांग करते हुए शोर मचाते जा रहे थे कि उनकी प्राचीन परम्परा को बरकरार रखा जाए (देखें मरकुस 15:8)। संक्षेप में उन्होंने कहा, ''हमारी एक परम्परा है कि तुम फसह के पर्व पर एक कैदी को छोड़ो। किसे छोड़ रहे हो?'' इस अपील से पिलातुस के दिमाग में एक विचार आ गया होगा। वह अपने मन में यह कहते हुए लगा, ''उनकी विनती से हो सकता है कि मेरी उलझन दूर हो जाए।'' उसने तुरन्त फसह की परम्परा में अपना निजी एजेंडा डाल दिया। ''मैं अपने सबसे बदनाम अपराधी जो सबसे खराब हो, लाकर उसके साथ यीशु को खड़ा करूंगा और यहूदियों से पूछूंगा कि इनमें से किसे छोड़ा जाए। बेशक वे यीशु को छोड़ देने को कहेंगे'' उसने मन में विचार किया। इस दृश्य की कल्पना करते हुए, पिलातुस ने दो काम करने चाहे। पहला तो यह कि यीशु को ''एक माना हुआ बंदी'' के साथ (मत्ती 27:16) खड़ा करने से यहूदियों को लगेगा कि वह उसे अपराधी मान रहा है और वे शांत हो जागे। दूसरा, यीशु को छोड़ देने पर, इस काल्पनिक परिस्थिति में भी कुछ सीमा तक न्याय होना था, जिससे पिलातुस का परेशान मन शांत हो जाना था। यह एक जोखिम भरी चाल थी, परन्तु पिलातुस को उम्मीद थी कि इससे वह दुविधा से निकल जाएगा। वह यहूदियों को लुभाने और अपने आपको अपने उच्च अधिकारियों का कृपा पात्र बनाए रखने की चाल चल रहा था।

उसने बरअब्बा नामक एक अपराधी अर्थात रोम के विरुद्ध बलवा करने वाले एक अगुवे को चुना, जिसे दूसरे विद्रोहियों के साथ कैद में रखा गया था। उसने हिंसक हमला करवाया था, जिससे कुछ लोग मारे गए थे। इस कारण उसे केवल राजद्रोह का दोषी ही नहीं था बल्कि हत्यारा भी था। मरकुस ने उसके लिए कहा है, ''बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्दी था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी'' (मरकुस 15:7)। उसके नाम का अर्थ स्पष्टतया ''पिता का पुत्र'' था। वह उस समय पिलातुस की कैद में रखे गए खतरनाक अपराधियों में से होगा।

स्पष्टतया प्रधान याजक और पुरनिये पिलातुस की अदालत से किसी जगह पर गए थे जहां से

वे यीशु को दण्ड देने की स्कीम बनाते या उसे मौन सहमति देते रह सकते थे। पिलातुस ने उन्हें उसके पास आने का संदेश भेजा ताकि वे बता सकें कि किस अपराधी को छोड़ना है। उनके आने पर उसने उनके सामने वह सवाल रखा जो अधिक महत्वपूर्ण था: ''तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?'' (मत्ती 27:17)। वे चिल्ला उठे, ''बरअब्बा'' (मत्ती 27:20)। अब पिलातुस वहीं पर लौट आया था जहां से उसने आरम्भ किया था। बरअब्बा को छुड़ाने की उनकी पुकार ने उसे चौंका दिया था और पहले से भी अधिक असमंजस में डाल दिया। न्याय के अपने सिंहासन पर बैठे हुए, तनाव के बढ़ने पर विचार करते हुए, उसकी पत्नी का संदेश आया कि इस यीशु के बारे में आए अजीब से स्वप्न ने उसे परेशान कर दिया है। मत्ती के अनुसार उसने कहा, ''तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना, क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दु:ख उठाया है'' (मत्ती 27:19)। उसकी बात से पिलातुस के मन की बेचैनी और भी बढ़ गई।

शायद यह मानते हुए कि पिलातुस उसी प्रश्न को दोहराएगा कि किस अपराधी को छोड़ा जाए, प्रधान याजकों ने भीड़ में जाकर हर किसी से बरअब्बा को छुड़ाने की मांग करने को कहा। मरकुस ने कहा है, ''परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे'' (मरकुस 15:11)। दूसरी बार पूछते हुए पिलातुस ने और स्पष्ट जवाब मांगा। मरकुस ने उसे यह कहते हुए बताया, '''तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?' वे फिर चिल्लाए, 'उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''' (मरकुस 15:12, 13)। पिलातुस परिस्थिति में धीरे-धीरे फंसा था जिसे सम्भालने का उसके पास कोई आधार नहीं था। उसने परेशान होकर एक अंतिम जवाब दिया: '''क्यों, इसने क्या बुराई की है?' परन्तु वे और भी चिल्लाए, 'उसे क्रूस पर चढ़ा दे!''' (मरकुस 15:14)। इसके बाद हमें पिलातुस पर सबसे बुरी टिप्पणी मिलती है। मरकुस ने लिखा है, ''तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (मरकुस 15:15)।

हमारे प्रभु की पेशियों और दु:ख उठाने के हर पहलू में हमें उसकी मृत्यु की अतिरिक्त समझ और हमारे छुटकारे से इसके सम्बन्ध का पता चलता है। बरअब्बा के साथ रखकर और पसन्द चुनने के लिए कहकर उसे बरी कर देने के पिलातुस के प्रयास में भी हमारे लिए गहरे अर्थ हैं।

1. *आरम्भ से लेकर अंत तक, यीशु की मृत्यु दूसरों की जगह पर थी।* बरअब्बा को यह समझ आ गई कि यीशु ने क्रूस पर मरना था, जहां उसे मरना चाहिए था। तीन अपराधियों के लिए तीन क्रूस बनाए गए थे और सम्भवतया बरअब्बा उनमें सबसे खतरनाक था। उसे क्रूस पर चढ़ाया जाने वाला था। उसे सबसे भयंकर मृत्यु जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, मिलने वाली थी; परन्तु यहूदियों की परम्परा के कारण, बरअब्बा की जगह वह मृत्यु यीशु को मिली।

2. *ईश्वरीय भविष्यद्वाणी के साथ मेल खाते हुए यीशु ''अपराधियों के संग गिना गया'' था* (यश. 53:12)। नये नियम के समय से बहुत पहले, यशायाह ने ''सेवक'' की अपनी भविष्यद्वाणी में यह बताया था कि इस दु:खी सेवक ने दुष्टों के बीच मरना था। इस भविष्यद्वाणी के ज़बर्दस्त पूरा होने में यीशु दो अपराधियों के बीच, ऐसे ही मरा (मरकुस 15:27, 28)। उसे

एक विद्रोही के पास खड़ा करने से लेकर डाकुओं के बीच मरने के लिए दे दिया गया। बरअब्बा को पता नहीं था, और यीशु के साथ मरने वाले दो डाकुओं को, पता नहीं था, परन्तु वे यीशु की मृत्यु के सम्बन्ध में आत्मा द्वारा की गई भविष्यद्वाणी को पूरा करने लिए मिल रहे थे।

3. *यीशु को अपने पूरे जीवन, अपनी पेशियों और अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के दौरान निर्दोष घोषित किया गया।* वह सचमुच में परमेश्वर का निष्कलंक पुत्र था। पिलातुस ने प्रधान याजकों से तीन बार कहा कि उसे यीशु में कोई दोष नहीं मिला। हेरोदेस ने उसके साथ बिना कोई दण्ड जोड़े यीशु को पिलातुस के पास लौटा दिया। उसके जीवन और सेवकाई के दौरान, किसी को उसमें कोई पाप नहीं मिला। इन अन्यायपूर्ण, मनघडंत पेशियों के दौरान यीशु दोष के दाग से मुक्त रहा। वह परमेश्वर का निष्कंलक मेमना था और दुष्ट लोगों के द्वारा उसे वध करने के लिए ले जाया जा रहा था। एक हिंसक, पापी मनुष्य बरअब्बा को बरी कर दिया गया जबकि परमेश्वर के सिद्ध, पाप रहित पुत्र को दण्ड दे दिया गया।

4. *यीशु की मृत्यु उन सबको जो उसे ग्रहण करते हैं क्षमा और जीवन के मुफ्त दान देने की पेशकश करती है।* बरअब्बा यीशु के पास खड़ा हुआ और उसे छोड़ दिया जाने के लिए चुना गया। यीशु को क्रूस पर ले जाया गया उसने बरअब्बा की जगह केवल शारीरिक मृत्यु में नहीं ली बल्कि यहां बहुतायत का जीवन और स्वर्ग में अनन्त जीवन देने के लिए वह दूसरे सब लोगों के लिए भी मरा। कोई भी जो उसके लहू के नीचे आने को चुनता है पाप के दोष, पकड़ और कब्र से सदा के लिए छूट सकता है (रोमियों 6)।

निष्कर्ष: यीशु ने व्यवस्था के भ्रष्ट अधिकारियों के सामने अपने आपको दे दिया ताकि वे लोग जिनके लिए वह मरा, पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छूट सकें। बरअब्बा को अपने अपराधों के लिए मरने के लिए रोमी कानून ने दण्ड दिया था जब यीशु को रोमी कानून ने दण्ड देकर क्रूस पर इस कारण चढ़ाया ताकि बरअब्बा और कोई भी जो उसे ग्रहण करना चुने, व्यवस्था के दण्ड से मुक्त होकर जीवित रह सके। छूट जाने के बाद बरअब्बा की उस अपराध के लिए जिस कारण उसे दण्ड दिया गया था, फिर से कभी पेशी नहीं होनी थी। वह उस अपराध के दण्ड से छूट गया था। इससे कहीं बढ़कर यीशु पाप और मृत्यु की व्यवस्था के द्वारा दण्ड पाए हुए सब पापियों के लिए मरा। मसीह की मृत्यु के द्वारा कोई भी पश्चात्तापी मन जो सुसमाचार की आज्ञा को मानता है दण्ड से मुक्त होकर अनुग्रह की उस स्वतन्त्रता में जो मसीह में मिलती है, रह सकता है।

परमेश्वर के पुत्र का ठट्ठा उड़ाया (15:16-20)

क्रूस पर चढ़ाए जाने के चारों विवरणों में सोच से परे की बातें मिलती हैं! हम सृष्टि यानी मनुष्य को अपने सृष्टिकर्त्ता, परमेश्वर के पुत्र पर बुरी तरह से ताने देते और हंसने हुए देखते हैं! हम पूछते हैं, "अपने हो-श-ओ हवास में ऐसी बात कौन कर सकता है?"

वचन साफ़ कहता है कि मनुष्य ने यीशु को केवल क्रूस पर ही नहीं चढ़ाया बल्कि बुरी तरह से ठट्ठा उड़ाते हुए उसका तिरस्कार भी किया (15:17, 18)। उसने उन हाथों का जो जल्द ही पाप के अनन्त दण्ड से उसे बचाने के लिए कीलों से ठोके जाने थे, मज़ाक किया। उसने यीशु के मुंह पर, यानी उस मुंह पर जिसने उसके लिए सबसे अधिक प्रेम दिखाया, थूका और थप्पड़ मारे।

यीशु को घूसे मारे गए, उसकी आंखों पर पट्टी बांधी गई, ताने मारे गए और राजदण्ड की

भौंडी नकल सरकंडे से मारा गया। ठहरे हुए पानी में उद्धारकर्त्ता का बेरहमी से मज़ाक किया गया! उसकी देह के साथ नृशंसता के साथ व्यवहार करने की तैयारी करते हुए, जिनके हाथ में उसे दिया गया था, उन्होंने उसकी रूह को कम्पकम्पी लगा देनी चाही। उसके व्यक्तित्व, स्थिति, स्वभाव और उद्देश्य की हंसी उड़ाई गई। जिन्हें बचाने के लिए उसने मरना था उन्होंने उसके ईश्वरीय इरादों, उसके पवित्र बलिदान और उसके परोपकारी प्रेम का अपमान किया।

1. *उन्होंने उसके राजा होने का मज़ाक यह कहते हुए उड़ाया, ''हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!''* (15:18)। रोमी पेशी के बीच, पिलातुस ने बरअब्बा और यीशु को भीड़ के सामने खड़ा करके उनसे पूछा कि वे किसे छुड़ाना चाहते हैं। ज़ोर-ज़ोर से चीखते हुए वे एक ही राग अलापने लगे, ''हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे!'' (लूका 23:18)। उनकी पसंद से यीशु एक अपराधी से भी बुरा यानी एक राजद्रोही और हत्यारे से भी बुरा घोषित हो गया था।

उस पेशी के बाद के दृश्य से यानी पिलातुस के अपना निर्णय सुनाने के बाद, स्वर्ग रोने लगा और पृथ्वी कांपने लगी होगी। मरकुस ने इसका हृदय-विदारक विवरण किया है:

> तब उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, ''हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!'' वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे (मरकुस 15:17-19)।

क्रूस के पास प्रधान याजक, पुरनिये और शास्त्री सब मिलकर मज़ाक उड़ाने लगे। वे कहते थे, ''इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें'' (15:32)।

2. *उन्होंने उसकी सामर्थ का मज़ाक यह कहते हुए उड़ाया, ''वह अपने आपको बचा ले।''*पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपनी चमत्कारी शक्ति को खुलेआम दिखाया था। लोगों ने इसे देखा था, इसे माना था और इसके सुझावों को समझा था। यहां तक कि यहूदी हाकिम निकुदेमुस ने कहा था, ''हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता'' (यूहन्ना 3:2)। उसके आश्चर्यकर्म स्पष्ट, विश्वसनीय और अचूक थे। यहां तक कि उसके शत्रु भी उनके प्रामाणिक होने को मानते थे।

उसकी सेवकाई के इस प्रमाणित सत्य को खारिज करते हुए, क्रूस के कदमों के पास घूमने वालों ने अपने सिर हिलाते हुए कहा, ''वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले'' (मरकुस 15:29, 30)। यहूदियों के हाकिमों ने इस मज़ाक में बढ़ोतरी करते हुए कहा, ''इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता'' (15:31)। दुःख सह रहे मसीह का मज़ाक उड़ाते हुए सिपाहियों ने अपनी आवाज उठाई। उसके पास आकर उन्होंने उसे पीने को सिरका देते हुए कहा, ''यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा ले!'' (लूका 23:37)।

यरूशलेम के लोगों, शायद उसके प्रेरितों, चेलों और कुछ और लोगों को ही यह समझ होगी कि यीशु ने अपने आपको क्यों क्रूस पर चढ़ने के लिए दे दिया। अपनी अज्ञानता में हाकिम उसे

क्रूस पर से उतर आने को कह रहे थे। उसे अपने आपको बचाने की उनकी बकवास भरी चुनौती क्रूस के कदमों के नीचे पसंदीदा मज़ाक था। मत्ती ने कहा है, ''इसी रीति से प्रधानयाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, 'इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता''' (मत्ती 27:41, 42)। उन्हें यह समझ नहीं थी कि यदि यीशु अपने आपको बचा लेता तो मनुष्यजाति का उद्धार नहीं होना था।

3. *उन्होंने उसके परमेश्वर होने का मज़ाक यह कहते हुए उड़ाया, ''क्योंकि उसने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।'''* काइफ़ा ने यीशु को आज्ञा दी, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे'' (मत्ती 26:63)। यीशु ने उत्तर दिया, ''तू ने आप ही कह दिया'' (मत्ती 26:64)। उसने परमेश्वर का पुत्र होने का केवल दावा ही नहीं किया बल्कि अपनी सेवकाई के दौरान इसे पूरी तरह से दिखाया भी था। काइफ़ा ने इस पुष्टि की प्रतिक्रिया कैसे दी? उस शर्म के साथ जो मनुष्य परमेश्वर के पुत्र के साथ इस प्रकार से व्यवहार कर सकते थे उसके उत्तर और लज्जित होने को:

> तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, ''अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? तुम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी क्या राय है?'' उन सब ने कहा कि यह वध के योग्य है। तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई उसका मुँह ढाँकने और उसे घूँसे मारने, और उससे कहने लगे, ''भविष्यद्वाणी कर!'' और प्यादों ने उसे पकड़कर थप्पड़ मारे। (मरकुस 14:63-65)।

धार्मिक हाकिमों और शास्त्रियों ने अपने परमेश्वर होने की उसकी गवाही के कारण यीशु पर परमेश्वर की निंदा का दोष लगाया था। यह जानकर कि धार्मिक लोग, यानी वे लोग जो सार्वजनिक तौर पर यह शपथ खाते थे कि वे मसीहा यानी परमेश्वर के पुत्र को ढूंढ़ रहे हैं, उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, हमारा दिल तोड़ देते हैं! वह अपनों के पास आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया (यूहन्ना 1:11)।

4. *उन्होंने यह कहते हुए उसकी नैतिकता का मज़ाक उड़ाया कि ''उसका भरोसा परमेश्वर में है।''* क्रूस पर इन धार्मिक अगुओं ने उसे ताने मारे। कुछ चिल्लाए, ''उस ने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं''' (मत्ती 27:43)।

क्रूस के पास बहुतों ने यह घोषणा की कि यीशु को केवल मनुष्य ने ही नहीं बल्कि परमेश्वर ने भी नकार दिया था। उन्होंने तर्क दिया कि उसका पाप उसी पर पड़ गया है। उन्होंने सोचा होगा, ''यह आदमी वही है जिसे परमेश्वर के साथ चलने वाला कहा जाता था। परमेश्वर आकर इसे क्रूस पर से उतार क्यों नहीं देता? क्या हमें दिखाई नहीं देता कि उसके परमेश्वर ने भी उसे छोड़ दिया है?''

हां, यीशु का मज़ाक उड़ाया गया! उसके राजा होने, सामर्थ, परमेश्वर होने और नैतिकता का मज़ाक उड़ाया गया! आइए इस तथ्य पर विचार करें। परन्तु हम मसीह का मज़ाक उड़ाने को व्यक्तिगत बनाए बिना न छोड़ें। दु:खी हुए मनों के साथ हम पूछें, ''हमें यीशु के मज़ाक से क्या सीखने को मिलता है?''

पहले, हम देखते हैं कि मज़ाक खराब और चोट पहुंचाने वाला होता है। ये लोग यीशु को चोट पहुंचाना चाहते थे और उन्होंने पहुंचाई। यीशु ने इसे बड़े शानदार ढंग से सम्भाला परन्तु उसे बुरा लगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे उसके हाथों और पांवों में कील ठुकने के समय। दूसरों का मज़ाक उड़ाने का अर्थ जानबूझकर उन्हें चोट पहुंचाना होता है।

दूसरा, हम देखते हैं कि मज़ाक एक बुरा हथियार है। यीशु पर लादे गए मज़ाक का बुरा और घिनौना उद्देश्य पूरा हुआ। यह सच्चे मसीह को झूठे मसीह में बदलने के इरादे से था। यहूदियों को परमेश्वर का भेजा मसीह पसन्द नहीं था। वह उस सांचे में नहीं आता था जो उन्होंने बनाया था। सच्चा मसीह उनकी योजनाओं के साथ मेल नहीं खाता था। इस कारण उनके लिए कम से कम अपने दिमाग में, उसे क्रूस पर चढ़ाने के बावजूद अपने विवेक के साथ जीवित रहने के लिए उसे बदलना आवश्यक था। क्रूस पर चढ़ाया जाना अपराधियों के लिए, बल्कि बहुत खतरनाक अपराधियों के लिए था। परन्तु यीशु इनमें से कोई भी नहीं था। वह परमेश्वर का सिद्ध पुत्र था। वे उसके साथ क्या कर सकते थे? उन्होंने उसे बदनाम करके उसे घिनौना व्यक्ति बना दिया। वे यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने को भयंकर कार्य के रूप में नहीं रहने दे सकते थे। यह दावा करके कि वे एक दुष्ट व्यक्ति को पृथ्वी से हटा रहे हैं, उन्होंने इसे आदर देकर समाज की सेवा में बदल देने की कोशिश की।

तीसरा, हम देखते हैं कि मज़ाक मन में ईर्ष्या के कारण बढ़ सकता है। हमें बताया गया है कि उन्होंने "उसे डाह से पकड़वाया था" (मरकुस 15:10)। डाह को हरी आंखों वाले राक्षस के रूप में दिखाया गया है जिसका चारा उसका शिकार है। कहते हैं कि डाह उस चीज़ के बजाय जिसमें इसे डाला जाता है उस बर्तन के लिए और भी खतरनाक है जिसमें इसे रखा जाता है। ईर्ष्या और डाह भले और पवित्र स्वभाव को बढ़ाने के बजाय इन्हें कम करते हैं। वे इसकी रक्षा नहीं करते बल्कि इसे नाश करते हैं।

चौथा, हम देखते हैं कि मज़ाक के साथ कैसे निपटा जाए। यीशु ने इसे परमेश्वर को सौंप दिया। पतरस ने लिखा है, "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुःख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था" (1 पतरस 2:23)। यीशु का मज़ाक उड़ाने वाले उसे नष्ट नहीं कर पाए। इसके बजाय यीशु का चरित्र अंधकार में और भी अधिक चमकने के लिए हीरे जैसा और भी स्पष्ट दिखाई देता है। यीशु को कटघरे में और उसे तीखे बोल बोलते हुए देख और सुनकर हम लोगों के मनों में हो सकने वाली गंदी से गंदी और बुरी से बुरी सोच के विपरीत परमेश्वर और सिद्ध पवित्रता को देखते हैं।

पांचवां, हमें देखना चाहिए कि जो कुछ यीशु ने हमारे लिए किया है उसे नज़रअंदाज़ करना उसके लिए उतना ही दुःखी करने वाला हो सकता जितना उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय उसे दुःख हुआ था।

> जब यीशु गुलगुथा नामक स्थान पर आया तो उन्होंने उसे वृक्ष पर टांग दिया,
> उन्होंने उसके हाथों और पांवों में बड़े-बड़े कील ठोक कर एक कलवरी बना दिया।
> उन्होंने कांटों का ताज उसके सिर पर रखा, उसके घाव लाल और गहरे थे,
> वे दिन असभ्य और क्रूर थे और मनुष्य का मांस सस्ता था।

जब यीशु [सरसी][98] में आया तो हम उसके पास से गुज़र गए,
हमने कभी उसका बाल भी नहीं नोचा, हमने केवल उसे मर जाने दिया;
क्योंकि लोग नरम दिल हो गए थे और उन्होंने उसे दु:ख नहीं देना था।
हम केवल गली में से निकल गए और उसे बारिश में रहने दिया।

फिर भी यीशु चिल्लाया, ''इन्हें क्षमा कर दे, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या करते हैं,''
और जाड़े की वर्षा होती रही जिससे वह पूरी तरह से भीग गया;
लोग अपने अपने घरों में चले गए और गलियों में उसे देखने वाला कोई नहीं था,
और यीशु एक दीवार की ओर झुक कर कल्वरी के लिए चिल्लाने लगा।[99]

परमेश्वर का पुत्र, यीशु आया। उसके अपनों ने न केवल उसे ठुकराया बल्कि उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाकर उसे क्रूस पर भी चढ़ा दिया।

निष्कर्ष: हम यीशु का ठट्ठा उड़ाने की बात कभी सोचेंगे नहीं परन्तु यह भी सुनिश्चित कर लें कि हम कभी उसे नज़रअंदाज़ भी नहीं करेंगे। हम यीशु के साथ क्या *करते हैं?* मसीही व्यक्ति सारी पृथ्वी को सुनाने के लिए चिल्लाता है, ''उसे महिमा दो, क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है!''

क्रूस के मार्ग पर (15:21–32)

हम यीशु की ऐतिहासिक पेशियों के लिखे जाने के अंत में आ गए हैं। गबथा के बीमा से पिलातुस ने यीशु के विषय में अपना अंतिम निर्णय दिया; परन्तु उसके निर्णय की इसके साथ कोई नेकनीती नहीं थी। निजी और राजनैतिक दबाव में उसे यहूदी सभा की बात माननी पड़ी। मरकुस ने इस हाकिम के लिए लिखा है उसने ''यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (15:15)।

यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले ही कोड़े मारे जा चुके थे (यूहन्ना 19:1), जो कि एक परम्परा थी। मृत्यु दिए जाने के लिए केवल क्रूस को इकट्ठा करके बाकी का आवश्यक सामान लेकर जुलूस संगठित करना और कैदी को मारे जाने के स्थान पर ले जाना रह गया था। अंतिम तैयारियां हो जाने के बाद सिपाहियों द्वारा यीशु का ठट्ठा उड़ाया गया और अकल्पनीय मृत्यु का सामना करने लिए जो उसने सहनी थी, उसके वस्त्र फिर से पहना दिए। मरकुस ने कहा है, ''जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो ... उसी के कपड़े पहिनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए'' (मरकुस 15:20)।

यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दो और कैदियों को भी तैयार किया गया। यह दोषी ठहरे थे जिन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया था और अब उन्हें दण्ड दिया जाने वाला था। रोमी सिपाहियों का एक विवरण सूबेदार के नेतृत्व में चार सिपाही कई लोगों को उतनी ही आसानी से सम्भाल सकते थे जितनी आसानी से एक व्यक्ति को, सो इन दो जनों को उस जुलूस में मिला दिया गया। मरकुस ने कहा है, ''उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए'' (15:27)। इस घटना में इन दो दण्ड पाए हुए लोगों सहित, इन्हें क्रूस पर चढ़ाने वालों को यह पता नहीं था कि वे यशायाह की भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहे थे (15:28; देखें यशा. 53:9)।

कैदियों और रोमी सिपाहियों की परेड यरूशलेम की गलियों में से होते हुए अंत में शहरपनाह के इस फाटक में से बाहर निकलकर किसी ऐसी जगह पर रुकती, जो दीवार से अधिक दूर नहीं होता था (इब्रा. 13:12)। इस जगह को ‘‘खोपड़ी का स्थान’’ या इब्रानी या अरामी भाषा में ‘‘गुलगुता’’ कहा जाता था (मरकुस 15:22)। इसे ‘‘कलवरी’’ भी कहा गया है (लूका 23:33; KJV), जो कि लातीनी भाषा के शब्द (*calvaria*) से लिया गया है, जिसका अर्थ ‘‘खोपड़ी’’ है। जिस मार्ग से वे गए उसे *Via Dolorosa* नाम दिया गया है जो कि ‘‘दु:खों का मार्ग’’ के अर्थ वाला लातीनी शब्द है। फसह का समय था, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि यरूशलेम से लेकर दूर-दूर तक लोगों की कतारें लगी थीं। कुछ लोग अपने इस विश्वास को जताकर कि यीशु को मार डाला जाए पेशियों में भाग लेने आए थे जबकि दूसरे लोग केवल यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है तमाशबीनों की तरह वहां पर इकट्ठा हुए थे।

रोमी कानून के साथ मेल खाते हुए, दण्ड पाए हुए लोगों को उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान तक अपने कंधों पर क्रूस के शहतीर उठाने के लिए विवश किया जाता था। यूहन्ना ने यीशु के लिए लिखा, ‘‘वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया’’ (यूहन्ना 19:17)। कोड़े मारे जाने और थका देने वाली रात से कमज़ोर हुए यीशु के लिए भारी शहतीर उठाना कठिन हो रहा होगा। सुसमाचार के लेखकों ने यह नहीं बताया कि क्रूस के बोझ के कारण वह भूमि पर गिर गया, चाहे यह मानकर चलना तर्कसंगत है। जुलूस के आगे बढ़ने पर रोमी सिपाहियों की टुकड़ी को जो क्रूस पर ले जाने के लिए जा रही थी, पता चल गया कि यीशु को सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। मरकुस ने कहा है, ‘‘सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन, एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले’’ (मरकुस 15:21)। रोमी सिपाही आवश्यकता पड़ने पर जब भी, जिस भी चीज़ की आवश्यकता होती, पास खड़े लोगों से कह देते थे। लूका ने कहा है, ‘‘उन्होंने शमौन नामक एक कुरेनी को जो गांव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे-पीछे ले चले’’ (लूका 23:26)। किसी सिपाही ने शमौन की तरफ़ इशारा करते हुए उसे कहा होगा, ‘‘तुम इधर आओ, और इस आदमी का क्रूस उठाओ।’’ यीशु का क्रूस उठाते हुए शमौन क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह तक, उसके पीछे-पीछे चला।

गुलगुता को जाते हुए रास्ते में किसी जगह, यीशु ने पीछे मुड़कर उन स्त्रियों से बात की जो पीछे-पीछे आ रहीं थीं। गबत्ता और गुलगुता के बीच यीशु के लोगों से बात करने का वर्णन केवल उन्हें उसके समझाने में मिलता है। स्त्रियां उसके लिए रोती और विलाप कर रही थीं। हम नहीं जानते कि ये स्त्रियां कितनी थीं। हो सकता है कि वे पेशेवर रोने वाली हों जो अपनी इच्छा से जुलूस में शामिल होकर उसके पीछे-पीछे चलती हुईं, उसके लिए विलाप कर रही हों। उन्हें सुनकर यीशु रुका, और पीछे मुड़कर उन्हें देखकर बात की:

> हे यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ। क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं, जिन में कहेंगे, ‘‘धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया।’’ उस समय ‘‘वे पहाड़ों से कहने लगेंगे कि हम पर गिरो, और टीलों से कि हमें ढांप लो।’’ क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा

करते हैं, तो सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा? (लूका 23:28-31)।

यीशु के इन स्त्रियों से ये बातें कहने के थोड़ी देर बाद जुलूस क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह पहुंच गया। किले से गुलगुता का सफ़र लम्बा नहीं था; यह आधे मील से अधिक नहीं था। परन्तु यीशु के लिए जिसे कोड़े मारे गए थे और जो पूरी रात चौबीस घण्टों से भूखा और प्यासा था, हर कदम से दु:ख बढ़ता होगा, जिस कारण उसे शरीर के लिए आवश्यक ऊर्जा चाहिए थी।

हमारे लिए हमारे प्रभु की मृत्यु का हर भाग महत्वपूर्ण और विचारपूर्ण है। हर भाग हमारे मनों को ऐसी शिक्षा देता है जो कभी भुलाई नहीं जानी चाहिए। क्रूस का यह सफ़र कोई अपवाद नहीं है। यह हमें क्या कहता है?

1. *यीशु के साथ शमौन की मुलाकात एक महत्वपूर्ण उदाहरण देती है।* शमौन यानी वह व्यक्ति जिसे यीशु का क्रूस उठाने के लिए विवश किया गया, इस तथ्य को दिखाता है कि कोई बात अचानक से हो सकती है जिससे किसी का जीवन सदा-सदा के लिए बदल जाए। उस सुबह शमौन किसी दूसरे देश से आए परदेशी के रूप में यरूशलेम में गया। उसने गली में एक जुलूस निकलते देखा और यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है वह उधर चला गया। फिर एक रोमी सिपाही ने उसे इशारा किया और उससे यीशु का क्रूस उठाने को कहा। उसी समय, शमौन गुमनामी से निकलकर पवित्र शास्त्र में एक जगह में चला गया। जहां भी सुसमाचार सुनाया जाएगा वहां उसका नाम आवश्य आएगा। इससे हम हर पल को उम्मीद और आशा के साथ लेकर जो भी कर सकते हैं, उसे करने की कोशिश करें, क्योंकि हो सकता है कि जब हमें कोई उम्मीद न हो, तभी हमारे पास वह समय हो, जो जीवन के दूसरे हर क्षण से अधिक महत्वपूर्ण हो।

2. *शोक करने वाली स्त्रियां हमें युगों पुरानी सच्चाई का स्मरण करवाती हैं।* वे नये सिरे से इस बात की घोषणा करती हैं कि जो कुछ हमें दिखाई देता है, आवश्यक नहीं है कि वह सच्चाई हो। भयंकर मृत्यु के लिए जाते हुए अपराधियों की बीच चलते-चलते यीशु को ठोकर लगी। कैदियों के पीछे-पीछे चलने वाले लोगों को लगा कि यीशु को उसके किए का फल मिल रहा है। जो दिखाई नहीं दे रहा था, यानी इस सबकी क्रूरता के आगे सच्चाई यही थी कि यीशु संसार कर उद्धारकर्त्ता, उस जगह पर जा रहा था जहां उसने हमारे पापों के बलिदान के लिए अपने आपको चढ़ाना था। पिछला सारा समय इसी घटना की ओर आगे को देखता था और आगे के सारे समय ने इसकी ओर पीछे को देखना था। उसने क्रूस को सहकर लज्जा को तुच्छ जानना था। फिर अपने जी उठने के बाद उसने परमेश्वर के सिंहासन के दाहिनी ओर बैठना था (इब्रा. 12:2)।

3. *डाकू हमें चुनौती देते हैं।* इन दो डाकुओं का होना हमें यह याद दिलाता है कि लगभग हर परिस्थिति से किसी खोए हुए प्राणी के लिए उद्धार के अवसर की पेशकश हो सकता है। ऐसे निराशा भरे समय में भी यीशु की बातों और कामों का इन लोगों पर असर हुआ होगा। बाद में अपने क्रूसों पर मरते हुए, यीशु ने प्रश्न पूछने वाले से उसकी आत्मि आवश्यकताक की बात की। हमारे प्रभु ने अपने साथ मर रहे आदमी से जिसे आशा की आवश्यकता थी और जिसने उस सच्चाई पर जो यीशु ने उसे बताई थी विश्वास कर लिया था। अनुग्रह के अपने अंतिम शब्द कहे

(लूका 23:43)। कोई भी स्थान, परिस्थिति, ऐसी नहीं है जिसमें परमेश्वर के प्रेम के प्रकाश को दिखाने के अवसर न हो, चाहे इसमें कितना भी कष्ट क्यों न हो। किसने सोचा होगा कि इनमें से एक डाकू मरने से पहले यीशु को उद्धारकर्त्ता मान लेगा?

निष्कर्ष: हाकिम के न्याय से गुलगुता पर क्रूस पर चढ़ाए जाने का हमारे प्रभु का सफर छोटा परन्तु यादगारी था। यीशु की उपस्थिति होने पर कोई भी बात नीरस या "मामूली" नहीं रह जाती!

काटों का मुकुट पहना राजा (15:27-32)

स्पष्टतया यहूदी अगुओं तथा रोमी सिपाहियों के लिए यीशु को कोड़े मारकर क्रूस पर चढ़ाना ही काफ़ी नहीं था। अपनी परम्पराओं पर चलते हुए उन्होंने उसे ठट्ठा भी किया और अपमानित भी। उन्होंने उसके राजा होने के विचार का मज़ाक उड़ाने के लिए उसे एक वस्त्र पहनाया। फिर "... काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा, और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, 'हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!'" (15:17, 18)। उसे मारते और उसके मुंह पर थूकते हुए वे मज़ाक में घुटने टेकर उसे प्रणाम करते रहे (15:19)।

पिलातुस ने यीशु से पूछा था, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" (15:2)। यीशु का उसे यह उत्तर था, "तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूँ कि सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है" (यूहन्ना 18:37)।

सचमुच में यीशु राजा नहीं बल्कि महाराजा है! पौलुस ने उसे "अब सनातन राजा अर्थात अविनाशी, अनदेखे, एकमात्र परमेश्वर" कहा (1 तीम. 1:17)। अपने जी उठने के बाद यीशु को बहुत ऊंचा किया गया और एक नाम दिया गया जिसके आगे हर घुटना एक दिन झुकेगा और हर जीभ एक दिन परमेश्वर पिता की महिमा के लिए उसका अंगीकार करेगी (फिलि. 2:9-11)। प्रकाशितवाक्य में उसे "राजाओं के राजा और प्रभुओं का प्रभु" शब्दों के साथ सफेद वस्त्र पहने हुए दिखाया गया है (प्रका. 19:16)। समय के अंत में, मनुष्य का पुत्र यीशु सभी स्वर्गदूतों के साथ आएगा। तब "वह अपनी महिमा के सिहांसन पर विराजमान होगा" "और सब जातियां उसके सामने इकट्ठा की जाएंगी" (मत्ती 25:31, 32)। बिना किसी विरोध के वह सब राजाओं का महाराजा है!

हमारे उद्धार को पाने के लिए ब्यान से बाहर दु:ख सहते हुए ईश्वरीय राजा यीशु ने दुष्ट लोगों के ठट्ठे और मज़ाक सहन किए। यीशु का ठट्ठा उड़ाते हुए रोमी सिपाहियों के साथ मिलकर यहूदी अगुवों ने कांटों की एक दो टहनियां लाकर उन्हें मोड़ा, और गंदा सा गोलाकार मुकुट बनाकर उसके सिर पर रख दिया (मरकुस 15:17)। मुकुट की इस आकृति के साथ वे उसके राजा होने और उसके ईश्वरीय होने का मज़ाक उड़ा रहे थे। उसके सिर पर इसे दबाकर लगाते हुए उन्होंने उसके श्रेष्ठ होने, उसके व्यक्तित्व और उसके होने का मज़ाक उड़ाया। जो कुछ उसने अपने लिए कहा था कि वह है और जो वह करने के लिए आया था उसका मज़ाक उड़ाते हुए वे मनुष्यों के उद्धार के लिए परमेश्वर की सनातन मंशा का मज़ाक उड़ा रहे थे।

1. *परमेश्वर के पवित्र जन ने मनुष्य के अपमान के लिए अपने आपको दे दिया।* पिलातुस को यीशु में कोई दोष नहीं मिला था। उसकी पूछताछ से उसमें कोई बुराई नहीं मिली थी। सामान्य परिस्थितियों में उसने निर्दोष कैदी को छोड़ देने की आज्ञा दे दी होती और मुकद्दमा रफ़ा दफ़ा

हो गया होता, परन्तु यहूदियों के दबाव में उसका चरित्र तबाह हो गया। उसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए ही नहीं बल्कि ठट्ठा किए जाने और अपमानित किए जाने के लिए यहूदियों को सौंप दिया। क्या आप मनुष्य को जो कि सृष्टि है, अपने सृजनहार का मज़ाक उड़ाने की कल्पना कर सकते हैं? कितना बड़ा दु:साहस है!

2. *मनुष्य की तरह दु:ख उठाने के लिए परमेश्वर का पुत्र नीचे आ गया।* यीशु के हमारे जैसा बनने का सफ़र मनुष्य का सेवक बनने जैसा होना था; उससे भी बढ़कर, क्रूस पर चढ़ाए जाने के सम्बन्ध में, इसका अर्थ मनुष्य के उपहासपूर्ण तमाशे की चीज़ बनना था! हमारा उद्धारकर्त्ता बनने के लिए यीशु के लिए अपने राजा होने का मज़ाक, अपने मुंह पर थप्पड़ मारे जाने, अपने ऊपर थूके जाने और सिपाहियों द्वारा उसे तंग करते हुए उसके सिर पर मारे जाने और उसे अपमानित करने के लिए उसके आगे झुकते हुए लोगों के तानों को सहना आवश्यक था। यीशु यह सब सहने को क्यों तैयार था? उसने हमारे उद्धार के लिए यह सब किया।

3. *स्वर्ग के क्रोध को शांत करने के लिए यीशु को नरक के क्रोध का सामना करना आवश्यक था।* नरक का क्रोध क्रूस का शारीरिक पहलू हैं। शारीरिक रूप में कष्ट सहना, सताया जाना, लहू, कील, ठट्ठा और ताने हैं। स्वर्ग का क्रोध क्रूस के द्वारा आत्मिक, यानी मनुष्य के पापों को सहना था। क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को उठाने के लिए हमारे उद्धारकर्त्ता को अपने आपको इस क्रोध को देना आवश्यक था (1 पतरस 2:24)। हमारे पापों के लिए प्रायश्चित के रूप में अपने आपको पेश करने से पहले उसके लिए अपने आपको मनुष्यों की घृणा का पात्र बनाना, दुष्टों के हाथों में खेलना आवश्यक था।

निष्कर्ष: यीशु ने हमें महिमा का मुकुट दिलाने के लिए कांटों का मुकुट पहन लिया। उसने मज़ाक का बैंगनी वस्त्र पहन लिया ताकि आप और मैं धार्मिकता के श्वेत वस्त्र पहन सकें।

क्रूर ताने (15:29-32)

क्रूस के नीचे हम धार्मिक पापियों, अज्ञानी पापियों, सरकारी पापियों और निकम्मे पापियों को उनकी सबसे बुरी स्थिति में देखते हैं। मत्ती, मरकुस और लूका ने मनुष्य जाति के इन तीन समूहों को यीशु के क्रूस पर टंगे होने पर, उसे ताने मारते हुए दिखाया है (मत्ती 27:39-44; मरकुस 15:29-32; लूका 23:35-37)। इन तमाशबीनों यही मांग नहीं की कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए, बल्कि क्रूस पर चढ़ाए जाने का सताव सहते हुए उन्होंने उसका ठट्ठा भी उड़ाया। उन्होंने सबसे बुरे मानवीय कष्ट में उसे बुरे-बुरे ताने दिए। क्रूस के इर्द-गिर्द और क्रूस के पास से गुज़रने वालों ने उस पीड़ा को और बढ़ा दिया। जो यीशु ने हमारे उद्धार के लिए सही। यीशु को मृत्यु दण्ड देना एक बात थी, परन्तु उस भयानक पीड़ा को सहते हुए जिससे उसकी मृत्यु हो जानी थी, उस पर हंसना और भी बुरी बात थी।

1. *मनुष्यजाति के ये कमज़ोर नमूने उसकी भविष्यद्वाणियों को पूरा कर रहे थे।* उनके द्वारा किया गया ठट्ठा आरोप के रूप में था। मरकुस ने कहा है, "मार्ग में जानेवाले सिर हिला-हिलाकर और यह कहकर उसकी निन्दा करते थे, 'वाह! मन्दिर के ढानेवाले, और तीन दिन में बनानेवाले! क्रूस पर से उतर कर अपने आप को बचा ले'" (15:29, 30)। जहां पर यीशु का क्रूस था शायद उसके पास से रास्ता निकलता था। भीड़ के लोग उसके बारे में बातें कर रहे होंगे। पास से जाने

वाले लोग ताने देते हुए सिर हिला रहे होंगे और बातें बना रहे होंगे। वे कह रहे होंगे, "हमें तेरी बातें याद हैं। हम भूले नहीं हैं कि तूने क्या कहा था कि मैं क्या करूंगा। तूने कहा था कि यदि यह मन्दिर नष्ट हो जाए तो तीन दिनों में बना लूंगा, परन्तु अपनी ओर देख! मन्दिर तो क्या बनाना, तू अपने आपको भी नहीं बचा सकता!"

हां, अपनी सेवकाई में पहले यीशु ने ऐसी ही भविष्यद्वाणी की थी जिसकी वे बात कर रहे थे। पूर्वधारणा से भरे उनके मनों में इसका अर्थ नहीं आया था। उन्होंने उसके शब्दों का अर्थ अपने मन से निकाल लिया और इनका इस्तेमाल वे निम्न स्तर के मज़ाक के लिए कर रहे थे। उन्होंने उससे ऐसा कुछ कहलवाने की कोशिश की जो उसने नहीं कहा था, और फिर यह दिखाते हुए कि उसने ऐसा कहा था, वे उस पर हंसने लगे।

यीशु के मन्दिर को शुद्ध करने के बाद यहूदियों ने उसके पास आकर उससे अपने अधिकार को साबित करने के लिए कोई बड़ा चिह्न दिखाने को कहा था। उन्होंने कहा था, "तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिह्न दिखाता है?" (यूहन्ना 2:18)। यीशु ने कहा था, "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा" (यूहन्ना 2:19)। यूहन्ना ने कहा कि यीशु ईंट पत्थरों के मन्दिर की नहीं बल्कि अपनी देह के मन्दिर की बात कर रहा था (यूहन्ना 2:21)। वह अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी कर रहा था। ईंट पत्थरों के अर्थ में सोचकर यहूदियों ने यीशु की बात को बिल्कुल ही गलत समझ लिया। उसने अपने जी उठने की भविष्यद्वाणी की थी, परन्तु वे गलत समझ बैठे थे।

चेला अपने प्रभु से बड़ा नहीं है। कई बार उसे ऐसे ही मज़ाक का सामना करना पड़ सकता है। अपने विश्वास का प्रमाण देते हुए कि यीशु ही मसीह है, उससे कहा जा सकता है, "तूझे समझ नहीं है कि यीशु के कहने का क्या अर्थ था। उसकी भविष्यद्वाणियां केवल खोखली बातें हैं।"

2. *उन्होंने उसकी चमत्कारी शक्ति का भी मज़ाक उड़ाया।* उनका मज़ाक परीक्षा के रूप में था। हम पढ़ते हैं, "इसी रीति से प्रधान याजक भी, शास्त्रियों समेत, आपस में ठट्ठे से कहते थे, 'इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता'" (मरकुस 15:31)।

महायाजक, प्रधान याजकों, पुरनियों और शास्त्रियों को वह मिल गया था जो वह चाहते थे। उन्होंने यह मांग की थी कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए, और यह निर्णय दिया जा चुका था। यीशु उनके सामने क्रूस पर लटका हुआ था। उन्होंने अपने मनों में सोचा होगा, "हमने वह युद्ध जीत लिया जिसे हम युद्ध जीतने निकले थे।"

बहुत से अवसरों पर यीशु ने अपनी चमत्कारी शक्ति को दिखाया था। लोगों ने इसे देखा था, इसे माना था और इसके अर्थों को स्वीकार किया था। यहां तक कि यहूदी हाकिम निकुदेमुस ने भी कहा था, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता" (यूहन्ना 3:2)। उसके आश्चर्यकर्म स्पष्ट, विश्वास करने के योग्य और अचूक थे।

यीशु के शत्रु उसके आश्चर्यकर्मों को नकार नहीं पाते थे। कई बार तो उन्होंने उसकी सामर्थ को शैतान की सामर्थ बता दिया था (देखें मत्ती 12:24; मरकुस 3:22), परन्तु उसके सामर्थ भरे काम इतने अधिक स्पष्ट थे कि उन्हें नकारा नहीं जा सकता था। उन्होंने ठान लिया था कि

वे उसके परमेश्वर होने को मनवाने के लिए उसकी सामर्थ को नहीं मानेंगे। यहां तक आते हुए उन्होंने कहा, ''हां, इस बात का मतलब है जिसमें हमें कहना पड़ेगा कि उसने दूसरों को बचाया; परन्तु अब इसे देख लो। वह अपने आपको नहीं बचा सकता! दूसरों को बचाने का क या लाभ यदि वह मुसीबत से अपने आपको नहीं बचा सकता? यह कैसा राजा है? वास्तव में यह कितना निर्बल है!''

उसकी सेवकाई की इस दिखाई गई सच्चाई को नज़रअंदाज़ करते हुए क्रूस के नीचे के इन तमाशबीनों ने अपने सिर हिलाते हुए यही कहा, ''इस्राएल का राजा, मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें'' (15:32)। सिपाहियों ने ऐसी ही बातें कहते हुए दु:ख सह रहे मसीहा का मज़ाक करते हुए हां में हां मिलाई। उसके पास आते हुए उन्होंने उसे पीने के लिए सिरका देते हुए कहा, ''यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा ले!'' (लूका 23:36, 37)।

पूरे यरूशलेम में, केवल उसके प्रेरितों, चेलों और कुछ और लोगों को यह समझ होगी कि यीशु क्रूस पर क्यों रुका हुआ था। हाकिमों ने अपनी अज्ञानता में उसे क्रूस पर से नीचे उतर आने को कहा। उसे अपने आपको बचाने के उनके चुभने वाले शब्द क्रूस के कदमों के नीचे कही गई चुनिंदा बातों में से एक हैं। उन्हें इस बात की समझ नहीं थी कि यदि यीशु अपने आपको बचा लेता तो मनुष्यजाति के किसी भी सदस्य के लिए उद्धार का कोई और तरीका नहीं होना था।

3. *उन्होंने उसके राजा होने का मज़ाक उड़ाया।* उनका मज़ाक निंदा के रूप में था। उन्होंने कहा, ''इस्राएल का राजा'' (मरकुस 15:32)।

वे जानते थे कि यीशु ने राजा होने को माना था, परन्तु वे इस विचार पर हंस रहे थे कि यीशु महाराजा, सर्वशक्तिमान राजा, मसीहा है जो इस्राएल को छुड़ाने के लिए आया था। एक अर्थ में उन्होंने कहा, ''तू हमें इस एक तरीके से यकीन दिला सकता है कि हम तुझ में विश्वास करें। बस क्रूस पर से नीचे उतर आ। जो कुछ तूने कहा और किया है हमने वह सब भुला दिया है, परन्तु यदि तू हमारे लिए केवल यह एक काम कर दे, तो हम तुझ में यह विश्वास कर लेंगे। बस क्रूस से नीचे आ जा।''

यीशु ने उनके सामने आश्चर्यकर्म किए थे, पिता ने स्वर्ग से गवाही दी कि यीशु उसका पुत्र और अपनी शिक्षाओं के द्वारा उन्हें दिखाया था कि वह पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को पूरा कर रहा है। फिर भी उन्होंने उसके हर प्रमाण को नकार दिया था। प्रमाण काफ़ी था परन्तु उन्होंने इस पर विश्वास न करना था। उनके शब्द, ''... मसीह, अब क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें'' (15:32), खोखले थे। उनका उसमें विश्वास करने का कोई इरादा नहीं था। यदि उनके मन साफ़ होते तो यीशु के किए गए पहले आश्चर्यकर्मों से वे विश्वास कर लेते। राजाओं का राजा उनके बीच में था, परन्तु उन्होंने उसे ठुकरा दिया, उसे क्रूस पर चढ़ा दिया और उसका मज़ाक उड़ाया।

4. *उन्होंने परमेश्वर के साथ उसके निजी सम्बन्ध का मज़ाक उड़ाया।* उन्होंने सुझाव के रूप में यह ताना दिया। वे चिल्लाए। ''उस ने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूं''' (मत्ती 27:43)। इस ताने से यीशु सबसे अधिक दु:खी हुआ होगा। वह कह रहे थे, ''वह इतना

धार्मिक, इतना आत्मिक बनता है। यदि सचमुच में वह परमेश्वर के इतना निकट है तो परमेश्वर आकर उसे बचा क्यों नहीं लेता? उसने कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र है; देखते हैं कि परमेश्वर उसे अपनाकर छुड़ाता है या नहीं। यदि सचमुच में परमेश्वर उससे प्रेम करता है और उसे अपना सेवक मानता है तो वह नीचे उतरकर उसे छुड़ा लेगा। सबको दिखाई देता है कि परमेश्वर उसकी सहायता के लिए नहीं आने वाला। निश्चित रूप में वह परमेश्वर का पुत्र नहीं है!''

अपनी ताड़ना के सार के रूप में वे नबूवती भजनों में से एक का इस्तेमाल कर रहे थे। उनके शब्द ''उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा यदि वह चाहता है कि वह उसे छुड़ा ले'' भजन 22:8 में से लिए गए थे। दिन को यीशु ने इस भजन की पहली पंक्ति में से दोहराना था (मरकुस 15:34)। उसने चिल्लाना था, ''हे मेरे परमेश्वर हे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (भजन 22:1)। क्रूस की पीड़ा, दुःख और कष्ट में यीशु ने भजन 22 में दाऊद द्वारा कही गई सजीव भविष्यद्वाणी को जीया। परन्तु यहूदियों ने भजन के इन शब्दों को चुभने वाले मज़ाक में बदल दिया। पवित्र शास्त्र का दुरुपयोग करके इसे उनका ताना बना दिया गया। गलत व्याख्या से, अविश्वासी धार्मिक अगुओं ने भविष्यद्वाणी को परमेश्वर की निंदा में बदल दिया।

निष्कर्ष: हां, यीशु क्रूस पर दुष्ट लोगों के तानों के माहौल में मरा जिनकी क्रूरता और असंवेदनशीलता भयानक हद तक पहुंच गई। उन्होंने उसकी भविष्यद्वाणियों, उसकी चमत्कारी शक्ति, राजा होने की उसकी ईश्वरीय स्थिति और परमेश्वर के साथ उसके निजी सम्बन्ध का मज़ाक उड़ाया। यीशु के साथ चलते हुए हमें भी ऐसी ही आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। यीशु को दोहराते हुए, हमें उसकी भविष्यद्वाणियों का मज़ाक उड़ाने वाले लोग मिल सकते हैं। उसके परमेश्वर होने के चमत्कारी प्रमाण पर बात करने से, हो सकता है कि हमारा मज़ाक उड़ाया जाए। राजा के रूप में उसे सम्मान देने पर, हो सकता है कि हमारा स्वागत बोली मारने से पहले किया जाए। परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसका प्रचार करने पर, हो सकता है कि हमें मूर्ख समझा जाए। ऐसा होने पर हमें यीशु की तरह ही चुपचाप उन लोगों के सामने जो हमारा मज़ाक उड़ा रहे हों अपने जीवन देते हुए चुपचाप सहन करना चाहिए।

अकेला (15:33-37)

क्रूस पर दुःख उठाते हुए यीशु ने केवल सात बार बात की, जो हमारे लिए सुसमाचार के विवरणों में दर्ज है। उसके सात कथनों में से एक मरकुस 15:34 में मिलता है: ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' वह भजन 22 से उद्धृत कर रहा था जिसे पास खड़े लोग सुन रहे होंगे।

एक प्रसिद्ध विलाप, भजन 22 नये नियम में सबसे अधिक बार उद्धृत किया गया भजन होगा। सुसमाचार के विवरणों में इसके उपयोग का एक नमूना इन आयतों में दिखाई देता है:

भजन 22:1 क्रूस पर यीशु पर लागू हुआ (मरकुस 15:34; देखें मत्ती 27:46)।
भजन 22:18 मरकुस 15:24 की पृष्ठभूमि लगता है (देखें मत्ती 27:35; लूका 23:34; यूहन्ना 19:23, 24)।

इन नबूवती शब्दों के कारण इस भजन को ''दुःख भोगने का भजन'' नाम दिया गया है जो हमारे

पापों के लिए मरने पर यीशु के ठुकराए जाने और उसकी पीड़ा को दिखाता है। वैसे ही इसे मसीहा से जुड़े बड़े भजनों में से एक माना जाता है।

पाठक का पहला विचार यह कि दाऊद शायद शाऊल के किसी हमले से बच निकलने पर सताव की घेराबंदी पर जिसमें से वह गुज़र रहा था प्रतीकात्मक भाषा में लिख रहा था। इस भजन के बहुत निजी होने के कारण पाठक का ध्यान एकदम से इसमें पाई जाने वाली मसीह के दु:खों की विस्तृत भविष्यद्वाणियों पर नहीं जाता। पहले स्तर पर यह भजन परमेश्वर के सामने प्रार्थना में लेखक के घातक संघर्ष से जोड़ता है। भजन के उत्तम पुरुष में होने के कारण उसमें दो प्रश्न मिलते हैं: ''हम इस भजन की व्याख्या कैसे करें?'' और ''क्या भजन में का अनुभव लेखक का है, प्रभु का या फिर दोनों का?''

व्याख्या करने की इस समस्या का सबसे बढ़िया समाधान भजन को दाऊद की कड़ी परीक्षा वाली जड़ों वाले रूप में देखना है, जबकि इसकी भाषा नबूवती तौर पर उसके अनुभवों से आगे मसीह के दु:खों तक पहुंच जाती थी। दाऊद चाहे उस कड़वे अनुभव के बारे में जिसमें से वह निकल रहा था, अतिशयोक्ति अर्थात कविता की भाषा में लिख रहा था, परन्तु वास्तव में वह चित्रात्मक भविष्यद्वाणी में यीशु के वास्तविक दु:ख सहने को दिखाता हुआ, पवित्र आत्मा की अगुआई से बहुत ऊंचे स्तर में लिख रहा था। पवित्र आत्मा ने लेखक को अपने दु:खों का वर्णन इस प्रकार से करने में अगुआई दी कि इन बातों में हमारे प्रभु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से जुड़ी परिस्थितियों और दु:खों के विवरणों की झलक विस्तृत रूप में है।

यह भजन स्पष्ट रूप में दो भागों में है: परमेश्वर से प्रार्थना (22:1-21) और परमेश्वर की महिमा (22:22-31)। पहला भाग विलाप है जबकि दूसरा भाग उस संकल्प को दिखाते हुए जो परमेश्वर की महानता पर विचार करने से बनता है, धन्यवाद करना है।

आइए इस भजन के पहले भाग को देखते हुए इसे अपने लिए उन कड़ी परीक्षाओं और भयंकर दु:खों को जो यीशु ने क्रूस पर उठाए दिखाने दें। दाऊद की भाषा, अपने उच्च रूप में, उस कीमत को साफ़ साफ़ दिखाती है जो यीशु ने हमारे पापों के लिए चुकाई। इन पंक्तियों में से चलने वाला एक मुख्य विचार क्रूस पर चढ़ाए जाने का अकेलापन है।

1. *यीशु ने उन शत्रुओं का जिन्होंने उसे घेरा हुआ था, अकेले सामना किया।* हम में से अधिकतर लोगों के कोई न कोई शत्रु होंगे। कइयों को हम जानते हैं और कइयों को हो सकता है कि हम न जानते हों। हमने उस कड़वाहट और पीड़ा को सहा है जो ऐसे लोगों से मिल सकती है। जब हम यीशु के इन दुष्ट, क्रूर शत्रुओं को देखने पर विचार करते हैं, तो हम उसे परमेश्वर से ऐसी प्रार्थना करते हुए सुन सकते हैं, ''मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं'' (भजन 22:11)। उसने आगे कहा,

> परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह! हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर! मेरे प्राण को तलवार से बचा, मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले! मुझे सिंह के मुंह से बचा, हां, जंगली सांढ़ों के सींगो में से तू ने मुझे बचा लिया है। (भजन 22:19-21)।

दुष्ट भीड़ से यीशु को कोई बचा नहीं सकता था। क्रूस की कड़ी परीक्षा में से उसके निकलने के कारण उसका पापी मनुष्यों के होठों से निकले घृणा के विष और बुरी मंशाओं को चखना

आवश्यक हो गया।

2. *अकेले उसने मित्रों के उसे छोड़ जाने की पीड़ा को सहा।* कई बार हमें उन लोगों द्वारा जो हमें प्रिय होते हैं, छोड़ दिया जाता है। ऐसे अनुभव हमारे शत्रुओं के हमारे लिए कुछ करने के प्रयास से भी अधिक बुरे होते हैं। जब यीशु ने क्रूस पर से नीचे को देखा तो उसे अपने मित्रों में से बहुत कम दिखाई दिए। छोटी सी टोली थी जिसमें से कुछ स्त्रियां थी और यूहन्ना था। उसके लगभग सभी प्रेरित गायब थे। भीड़ ने जहां रविवार के दिन नगर में उसका स्वागत करते हुए पुकार करके कहा, ''उसकी जय, उसकी जय!'' (देखें मत्ती 21:9)। वहीं उसके ऊपर मुकद्दमा चलते देखने वाले मज़ाक उड़ाते हुए, कह रहे थे, ''उसे क्रूस दो, उसे क्रूस दो!'' (देखें मत्ती 27:22)।

क्या यह निंदनीय रूप में ताने मारे जाना यीशु के लिए पीड़ादायक था? सचमुच में यह उसके लिए पीड़ादायक था। उसे भी वैसा ही लगा होगा, जैसे दाऊद को लगा था:

> परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है। वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, कि अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है (भजन 22:6-8)।

भजन लिखने वाले ने आगे कहा,

> क्योंकि उस ने दु:खी को तुच्छ नहीं जाना और न उस से घृणा करता है, और न उस से अपना मुख छिपाता है; पर जब उस ने उसकी दोहाई दी, तब उसकी सुन ली (भजन 22:24)।

3. *अकेले उसने शारीरिक पीड़ा सही जिसने उसके शरीर को चूर-चूर करके नष्ट कर दिया।* हम में से हर किसी पर कोई न कोई शारीरिक आपदा जैसे अंगों का टूटना, बीमारी, चोटें और खरोचें आम तौर पर आई होंगी। शारीरिक देहें कई बार घायल हो जाती या टूट जातीं हैं। शरीर की जिन नाकामियों और निर्बलताओं के बीच में हम रहते हैं वे हमें शारीरिक के साथ-साथ मानसिक रूप में भी प्रभावित करती हैं। शायद हमारे शरीरों के बीमार होने या विकलांग होने पर हमारे लिए अपनी भावनाओं को काबू में रखना कठिन हो जाता है। कोई संदेह नहीं कि दूसरों द्वारा दिए गए प्रोत्साहन और दिखाई गई सहानुभूति से हमें शांति मिली है। अकेले दु:ख सहने की त्रासदी से बढ़कर कोई बुरी बात नहीं।

यीशु ने पृथ्वी पर आने, हमारे जैसा बनने और हमारी तरह रहने को जानबूझकर चुना। वह हमारे जैसी देह में जन्मा, यानी ऐसी देह में जो पीड़ा के संकेत दिमाग को भेज सकती है। यीशु को पता था कि उसे बदतरीन किस्म का सताव सहना होगा, जो उसकी देह को मिलेगा।

भजन 22 की प्रतीकात्मक भाषा उसके दु:खों का वर्णन पूरी तरह से करने के लिए अपर्याप्त है:

> मैं जल की नाईं बह गया, और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए: मेरा सदय मोम हो गया, वह मेरी देह के भीतर पिघल गया। मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी

> जीभा मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरी चारों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। मैं अपनी सब हड्डियां गिन सकता हूं; वे मुझे देखते और निहारते हैं (भजन 22:14-17)।

यीशु ने उस सबसे बुरी पीड़ा को सहा जो कोई शरीर सह सकता है; और इससे भी बढ़कर यह कि उसने इसे अकेले सहा। कोई भी उसकी पीड़ा और दु:ख को समझ नहीं सकता; क्योंकि कोई इसकी सीमा को नहीं समझ सकता।

4. *अपने पिता से अलग होने के अनुभव के साथ उसने अकेले हमारे पापों को सहा।* अपनी कड़ी परीक्षा के अंत में यीशु ने चिल्लाते हुए कहा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मरकुस 15:34)। उसके शब्द शायद एक प्रश्न से बढ़कर जो उसने सहा उसकी घोषणा थे। कोई मनुष्य मन कल्पना नहीं कर सकता कि उसके लिए यह दु:ख सहना कैसा था। भजन 22 में हम इस संताप के संकेत को देखते हैं, परन्तु यह इसकी गहराई या विशालता को दिखाने के आस-पास भी नहीं हैं:

> हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहां है? हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूं परन्तु तू उत्तर नहीं देता; और रात को भी मैं चुप नहीं रहता। परन्तु तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है। हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे; वे भरोसा रखते थे, और तू उन्हें छुड़ाता था। उन्होंने तेरी दोहाई दी और तू ने उनको छुड़ाया वे तुझी पर भरोसा रखते थे और कभी लज्जित न हुए (22:1-5)।

> परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला; जब मैं दूध पीता बच्चा था, तब ही से तू ने मुझे भरोसा रखना सिखाया। मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया, माता के गर्भ ही से तू मेरा ईश्वर है। मुझ से दूर न हो क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं। बहुत से सांड़ों ने मुझे घेर लिया है, बाशान के बलवन्त सांड़ मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए हैं। वे फाड़ने और गरजनेवाले सिंह के समान मुझ पर अपना मुंह पसारे हुए हैं (भजन 22:9-13)।

हम सभी को मृत्यु दण्ड मिला हुआ है। जब तक प्रभु नहीं आता तब तक हमारे सांसारिक जीवनों का अंत एक दिन मृत्यु के साथ होगा। हम थोड़ी देर के लिए इसे अपने दिमाग में से निकाल सकते हैं, परन्तु अंत में हमें इसकी वास्तविकता का सामना करना पड़ेगा। यीशु भी इसी समझ के साथ रहा; परन्तु मृत्यु की उसकी जानकारी कहीं अधिक स्पष्ट, उससे जो हम में से किसी को कभी समझ में आ सकता है, कहीं अधिक डराने वाली थी। सबसे बढ़कर, उसे पता था कि उसे संसार के पापों को उठाते हुए पीड़ा, विनाश और अपमान में अकेले मरना था।

दाऊद को शायद इतना अधिक पता नहीं था कि परमेश्वर भविष्य में उसके लेखों का क या करेगा, परन्तु आज हमें पता है कि भजन 22 में वर्णित उसके दु:खों का इस्तेमाल मसीह के दु:खों के आदिरूप के लिए किया गया था। सदियों से असंख्य लोगों ने इस भजन को पढ़ा है और इसके शब्दों से मसीह की ओर मुड़े हैं।

निष्कर्ष: जब गतसमनी बाग में यीशु ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उस ''कटोरे'' को उससे टाल दे (देखें मत्ती 26:39), तो वह परमेश्वर की इच्छा को न मानने को नहीं कह रहा था। इसका स्पष्ट संकेत उसके अगले शब्दों से मिलता है, ''तौ भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।'' उसे पता था कि परमेश्वर की इच्छा सबसे बढ़िया है, इसकी कीमत चाहे जो भी हो। परमेश्वर ने ''कटोरा'' टालने को ''न'' कहा; परन्तु उसने अपनी इच्छा पूरी करने को ''हां'' कहा, जो कि उन सब लोगों का उद्धार का कारण बनी जिन्होंने सुसमाचार को ग्रहण करना था।

त्यागा हुआ (15:33–41)

इतिहास से पता चलता है कि महापुरुष सदा से कुछ हद तक अकेले रहने वाले लोग भी होते थे। उन्होंने उन जीवन शैलियों की सीमा में जिसे दूसरे बहुत कम लोग समझ पाए, रहते हुए यादगारी काम और असाधारण विचार दिए। हमारे उद्धारकर्ता में यही खूबी है जिसे यशायाह ने भविष्यद्वाणी में ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाया जो ''तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; ... लोग उससे मुंह फेर लेते ...'' (यश. 53:3)।

यीशु का अकेलापन उतना कभी स्पष्ट नहीं था जितना क्रूस पर, जहां वह न केवल मनुष्यों का बल्कि परमेश्वर का भी त्यागा हुआ था। उसकी तीखी चीख, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34) क्रूस की पीड़ा के छह घण्टों के बाद आई। क्रूस पर उसके सात कथनों में से केवल इसी को मत्ती और मरकुस दोनों ने लिखा है। यीशु नें अपने दु:खों का सामना अकेले किया और इस जीवित मृत्यु के निकट उसने उस अंधकार और आंतक को व्यक्त करने के लिए जिसमें से वह गुज़र रहा था, भजन 22 की पहली आयत से उद्धृत किया। भजनों में, जो हमारे प्रभु के मन में भरे हुए थे, हम उसके जीवन और उसके मसीहा होने के उद्देश्यों में से सबसे स्पष्ट व्याख्याओं में से एक पढ़ते हैं। उसके प्रश्न के बल और महत्व के कारण सुसमाचार के दो लेखकों ने, उसके कहे शब्द लिखे हैं: ''एली, एली,[100] लमा शबक्तनी।'' फिर उन्होंने इसका अनुवाद किया, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' निश्चय ही यह पुकार उस आत्मिक और शारीरिक वेदना का प्रकाश जो हमारे उद्धारकर्त्ता ने हमारे लिए सहा और पापियों के लिए इस संसार के लिए उसके प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण है।

अपने उद्धारकर्त्ता के मुंह से निकले इस प्रश्न पर विचार करते हुए हम मसीह के दु:ख सहने के परम पवित्र स्थान में आ जाते हैं। हमें उसकी चीख के छह शब्दों पर निजी तौर पर विचार करना आवश्यक है।

1. इस कथन में पहला शब्द ''एली'' दो बार बोला गया। यीशु ने पुकारा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर।'' उसके शब्द केवल प्रश्न नहीं बल्कि प्रार्थना थे। सुसमाचार के लेखकों ने उन सात वचनों को जो क्रूस पर होने के समय यीशु के मुंह से निकले थे, लिखा। सात में से तीन तो प्रार्थनाएं थीं। वेदना के उस कष्ट में जिसने निश्चय ही स्वर्गदूतों को आश्चर्य में डाल दिया, हमारे प्रभु ने अब तक की सबसे छोटी प्रार्थना की और सबसे व्याकुल कर देने वाले विलाप किए।

2. दूसरा शब्द है ''तूने।'' यीशु पूछ सकता था, ''हे यहूदा, तूने मेरे साथ धोखा क्यों किया?'' वह पूछ सकता होगा, ''हे पतरस, तूने तीन बार मेरा इनकार कैसे कर दिया?'' वह सभी चेलों से पूछ सकता होगा, ''जब मुझे तुम्हारी सबसे अधिक आवश्यकता थी, तो तुम सब कहां थे। तुम मेरे पास से भाग क्यों गए?'' आश्चर्य की बात है कि उसने इनमें से कोई प्रश्न नहीं पूछा। नहीं! उसने प्रश्न परमेश्वर से पूछा! उसने अपनी नज़रें सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर मोड़ीं यानी उसकी ओर जो हमेशा अपनों की परवाह करता था। जो अनाथों, विधवाओं और प्रताड़ित लोगों की रक्षा करता था; महान परमेश्वर जो अपना वचन निभाने में न कभी चूका है और न चूकेगा। उसने उससे जो धर्मियों का मित्र और पापियों का उद्धारकर्त्ता है, यह तीखा प्रश्न पूछा। ऐसा कैसे हो सकता था कि परमेश्वर पिता यीशु को यानी अपने ही विलक्षण पुत्र को कैसे छोड़ सकता था?

3. तीसरा शब्द है ''मुझे।'' हमें लग सकता होगा कि अपनी अंतिम सांस तक परमेश्वर की आज्ञा न मानने वाला व्यक्ति वह डाकू ही था जिसने पूछा, ''हे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' जब उसने इस जीवन के किनारे तक पहुंचकर उसने परमेश्वर के बिना खोखली, आशाहीन, अंतहीन अनन्तकाल को देखा तो वह परमेश्वर के सामने उससे सदा तक दूर रहने के आतंक के चिल्ला उठा होगा। परन्तु यीशु नहीं! न ही हमें यीशु से इस प्रश्न के पूछे जाने की उम्मीद हो सकती थी! परन्तु यह सच है। चिल्ला रहा परमेश्वर का पुत्र, वह ईश्वरीय, मसीहा, जिसने लाज़र को जिलाया था, चंगाई देने वाला, बड़ा वैद्य यीशु था। प्रार्थना करने वाला विशुद्ध, सिद्ध, पाप रहित, आज्ञाकारी, मनुष्य का विश्वासी पुत्र। कौन इस बात को समझ सकता है?

4. चौथा शब्द ''क्यों'' है। यह शब्द जो कि दो अनन्तकालों को अलग करने वाला सैंकड है, सुसमाचार की पुस्तकों में केवल एक बार लिखा गया, जब यीशु ने आकाश की ओर देखते हुए परमेश्वर से पूछा कि ''क्यों?'' इस पर विचार करते हुए, हम केवल इतना कह सकते हैं कि यह जो मर रहा था, कोई मामूली आदमी नहीं था। उसकी मृत्यु के मामूली क्रूस पर चढ़ाया जाना नहीं था। इतनी दूरगामी, इतनी पृथ्वी को कम्पकपी लगा देने वाली घटना और कौन सी हो सकती थी कि परमेश्वर का पुत्र अपने इस हृदय विदारक प्रश्न से स्वर्ग के गुम्बद में छेद कर दे।

5. पांचवां शब्द है ''छोड़'' यीशु अनुशासन के बारे में नहीं पूछ रहा था। वह देरी से दिए गए जवाब के बारे में नहीं पूछ रहा था या ऐसा उत्तर नहीं मांग रहा था जो और सार्थक समय के लिए रोककर रखा गया था। बल्कि वह अपने पिता द्वारा पूरी तरह से छोड़ दिए जाने बारे प्रार्थना कर रहा था। पीड़ा की सबसे तेज़ लपट जिसकी हमारे मनों को समझ हो सकती है, वह पिता से अलग होने की है। परमेश्वर के विशुद्ध पुत्र यानी परमेश्वरत्व में से दूसरे, यीशु को अपने पिता की संगति से अलगाव के क्षण का कभी पता ही नहीं था। उसके लिए परमेश्वर के व्यक्तित्व और प्रबन्ध से इस नीरस और त्रासदी भरे अलगाव का होना क्रूस का सबसे भयानक पहलू होगा।

6. छठा शब्द ''दिया'' है। क्रूस पर यीशु का दर्दनाक अनुभव लगभग इतिहास था। उसका प्रश्न यह नहीं था कि ''क्या तू मुझे छोड़ देगा?'' बल्कि यह था कि ''तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' वह इसे उसके साथ जोड़ रहा था जो उसके साथ हुआ था। वह उस सफ़र की बात कर रहा था जो उसने जीया था, उस तराई की जिसमें से वह आया था। वह उस अकेली, रहस्यमय रात की बात कर रहा था जो उसने सही थी। बाइबल में केवल यही पर जगह है, जहां यीशु ने

अपने पसंदीदा शब्दों में दिखाया कि उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना कि कैसा था!

निष्कर्ष: यीशु की पीड़ादायक चीख यह संकेत देती है कि क्रूस पर होने वाले शारीरिक कष्ट से बढ़कर और कुछ था। हां, वहां कष्ट था जो उस दु:ख से कहीं बढ़कर था जिसे हम शायद समझ सके, परन्तु क्रूस का अर्थ उस दु:ख सहने से कहीं बढ़कर था। *क्रूस केवल वह नहीं था जो यीशु ने सहा बल्कि यह वह था जो उसने किया।* एक बड़ी घटना, परमेश्वर/मनुष्य की घटना अनन्तकाल और समय की निर्णायक बात। यीशु ने हमारे पापों के लिए स्वेच्छा से स्वर्ग के क्रोध और नरक के क्रोध को सहते हुए, क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए अपने आपको दे दिया। उसने हर युग के पाप यानी आदम और हव्वा के पहले पाप से लेकर इतिहास के हर क्षण के हर पाप तक परमेश्वर की इच्छा को न मानने के पाप को अपने ऊपर सहा। उसने हम सबके इकट्ठा किए गए पापों को लेकर, अपनी पीठ पर रखा और सदा सदा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से उन्हें ऐसे दूर ले गया, जैसे कोई क्षमा की टोकरी हो।

प्रमाण के लिए जवाब (15:33-41)

सुसमाचार के लेखकों में से तीन ने उस सूबेदार का उल्लेख किया जो क्रूस के पास खड़ा था और यीशु में अपने विश्वास की घोषणा की। मत्ती ने कहा कि जब सूबेदार ने और ''जो वहां खड़े थे'' जो कुछ हो रहा था, वह सब देखा, तो वे भयभीत हो गए और यीशु के बारे में उन्होंने कुछ बातें मानीं। सूबेदार ने उसके बारे में सबसे प्रमुख और स्पष्ट बात कही (देखें मत्ती 27:54)। मरकुस ने लिखा है कि सूबेदार ने, जो यीशु के मरने के ढंग से विशेषकर प्रभावित हुआ था, सबके सामने दावा किया ''सचमुच में यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था'' (मरकुस 15:39)। लूका ने भी कहा कि जिसका शांति भरे ढंग से यीशु की मृत्यु हुई थी, उससे प्रभावित होकर, सूबेदार ने परमेश्वर की महिमा की और कहा, ''निश्चय ही यह मनुष्य धर्मी है'' (लूका 23:47)।

यीशु ने लोगों के हृदयों को हमेशा परखा है, परन्तु विशेषकर उसने ऐसा अपनी मृत्यु के महत्व के साथ किया। वह ''मार्ग, सत्य और जीवन'' है (यूहन्ना 14:6), परन्तु हमें निर्णय लेना है कि उस मार्ग पर चलना है या नहीं, उस सच्चाई को मानना है या नहीं, और उसकी जीवन को अपनाना है या नहीं। हम उसके साथ क्या करेंगे? हर व्यक्ति के अपने निर्णय से यह पता चलता है कि उसका हृदय कैसा है।

नये नियम में चार अलग-अलग सूबेदारों का उल्लेख है, जिनमें प्रत्येक का वर्णन शानदार ढंग से किया गया है। एक सूबेदार वह था जिसके लिए यहूदियों ने कहा, ''क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे आराधनालय को बनाया है'' (लूका 7:5)। इस आदमी के निष्कपट विश्वास के लिए यीशु ने कहा, ''मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया'' (लूका 7:9)। दूसरा, प्रेरितों 10 में इतालियानी पलटन के एक अगुवे कुरनेलियुस को देखते हैं, जो अत्याधिक सम्मानित सूबेदार था। कुरनेलियुस ''भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था'' (प्रेरितों 10:2)। वह मसीह में आने वाला पहला अन्यजाति था। तीसरा, अगस्तुस की पलटन का सूबेदार यूलियुस था जिसके सुपुर्द पौलुस को रोम ले जाते समय दिया गया था। लूका ने कहा कि उसने ''पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों

के यहां जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए'' (प्रेरितों 27:3)। लूका ने यह भी कहा कि सफ़र में आगे हस्तक्षेप करके उसने पौलुस की जान बचाई (प्रेरितों 27:42, 43)। चौथा सूबेदार यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के अंत में दिखाई देने वाला है जो क्रूस के पास खड़ा था और उसने वह घोषणा की जिसे यीशु की पहचान के विषय में मानने लगा था (मत्ती 27:54; मरकुस 15:39; लूका 23:47)।

दूसरी सदी के लेखक, पोलिब्युस ने संकेत दिया है कि सेना में आम तौर पर बेहतरीन लोगों को सूबेदार के पद पर नियुक्त किया जाता था।[101] इन चारों सूबेदारों के संक्षिप्त विवरण देकर नया नियम उसकी गवाही का समर्थन करता है।

आइए हम उस पर जो क्रूस पर इस सूबेदार ने देखा और सुना, विचार करें। यदि उसे यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने की सारी कार्यवाहियां करवाने का आदेश मिला हुआ था तो उसका ज़िम्मा यीशु के पिलातुस के सामने ले जाए जाने से पहले से लेकर उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने के अंत तक का होगा। ऐसे में उसने न केवल क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटनाओं को देखा बल्कि इससे पहले की सब घटनाओं को भी देखा। उसने कोड़े मारे जाने को देखा। यीशु के राजा होने का मज़ाक उड़ाए जाने के समय वह वहीं था। उसने कांटों के ताज को जो यीशु की भौहों में से निकलकर उसका मज़ाक बना रहे थे, बैंगनी वस्त्र जो उस पर ओड़ा गया था, उस सरकंडे को जो राजदण्ड को दर्शाने के लिए उसके हाथों में पकड़वाया गया था, देखा। उसने मज़ाक की सबसे घिनौनी किस्म में यीशु पर थूके जाने को देखा। इस सबके अलावा उसके जिम्मे सिपाहियों का वह दल भी था जिसने दु:खों के मार्ग और गुलगुता तक जुलूस का संचालन किया। यीशु का क्रूस उठाने के लिए शमौन को चुने जाने के समय वह वहीं पर था। निश्चय ही, उसने केवल कुछ फुट की दूरी से उस शानदार ढंग को जिससे यीशु ने यह सारा अपमान, ठट्ठा और मज़ाक सहन किया, देखा।

यह कल्पना करना चाहे कठिन है, परन्तु यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़ते समय यह सूबेदार उसके पास ही खड़ा था। शायद उसने क्रूस को सीधा खड़ा करने में सहायता के लिए उस आड़े शहतीर को उठाया या सीधा करने में सहायता की। इस विभत्स दृश्य को देखते हुए वह यीशु के पास छह घण्टे रहा। दोपहर के समय जब देश में अंधकार छा गया तो उसने इसे देखा, महसूस किया और इसके अंधकार में उसके रौंगटे खड़े हो गए। परन्तु दूसरे लोग वहां अपने अपने घरों में चले गए थे, वहीं वह दण्ड पाए लोगों की रखवाली करते हुए, क्रूस के पास रहा। अंत में उसने अपने कदमों के नीचे भूमि की गड़गड़ाहट को सुना जब ''धरती डोल गई और चट्टानें तड़क गईं'' (मत्ती 27:51)।

इस प्रक्रिया के दौरान उसने यीशु को संसार के लिए अपने प्राण देते हुए देखा। सम्भवतया उसने क्रूस से मसीह का एक एक शब्द सुना होगा। उसने उसके स्वभाव और बर्ताव को देखा और उसने निकट से देखा कि परमेश्वर के पुत्र ने किस प्रकार से अपनी आत्मा को त्यागा।

संसार के इतिहास में शायद ही कुछ और लोग होंगे जिन्हें ऐसा सौभाग्य मिला हो, जैसा इस सूबेदार को मिला था। विश्वास दिलाने वाला प्रमाण जो परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु की मृत्यु के द्वारा दिया, वह उसकी आंखों के सामने दिखाया जा रहा था! प्रमाण के इस पहाड़ के साथ वह क्या करता? क्या वह अपने दूसरे कर्त्तव्य पूरा करता और उस पर जो हो रहा था हैरान होता?

लूका ने कहा है कि कुछ लोगों ने ऐसा ही किया: ''और भीड़ जो यह देखने को इकट्ठी हुई भी, इस घटना को देखकर छाती पीटती हुई लौट गई'' (लूका 23:48)। इस सूबेदार ने जो देखा और सुना था, उसका उसने क्या करना था?

1. *वह इतना गम्भीर था कि उसने उस प्रमाण को सही ढंग से देखा।* यह सूबेदार इतना अधिक ईमानदार था कि उसने प्रमाण के ऐसी बौछार को घुसने नहीं दिया। उसने अपने मन में कहा होगा, ''इन बातों को देखकर मुझे इन पर विचार करना आवश्यक है। मेरे लिए वे इतनी अनोखी हैं कि मैं उस पर विचार किए बिना रह नहीं सकता।'' वह कुछ कुछ मूसा के जैसा था जिसने जलती हुई झाड़ी को देखकर अपने मन में कहा था, ''मैं उधर जाकर बड़े आश्चर्य को देखूंगा कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती'' (निर्गमन 3:3)।

स्पष्टतया क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय वहां पर और बहुत से लोग थे, जिन्होंने अपनी आंखों के सामने जो कुछ हो रहा था, उस पर इतना ध्यान नहीं दिया। उन्होंने देखा, परन्तु वास्तव में उन्होंने नहीं देखा। शायद वे ऐसे लोग थे जो ''सदा सीखते तो रहते हैं पर सत्य की पहचान कभी नहीं करते'' (देखें 2 तीमु. 3:7)। परन्तु इस सूबेदार ने ऐसा नहीं किया।

2. *वह इतना ईमानदार था कि उसने प्रमाण को मान लिया।* यह सूबेदार प्रमाण का अध्ययन नहीं कर सकता था बल्कि उसे इसे मानना ही पड़ना था। यह इतना सम्पूर्ण और ज़बर्दस्त था कि उसके लिए इसे नज़रअंदाज़ करना असम्भव था। लूका ने लिखा है, ''सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था देखकर, परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा, 'निश्चय यह मनुष्य धर्मी था''' (लूका 23:47)।

उसने प्रमाण को उसे तीन निष्कर्षों पर पहुंचाने दिया। पहला उसने अपने आपको इसे दिखाने दिया कि यीशु ''धर्मी था।'' परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह तथ्य अटल था। यदि यीशु धर्मी न होता तो वह परमेश्वर का पुत्र नहीं हो सकता था क्योंकि यदि वह परमेश्वर का पुत्र न होता तो वह हमारा उद्धारकर्त्ता नहीं हो सकता था। परमेश्वर ने हर गम्भीर मन को यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु निष्कलंक मेमना था जो संसार के पापों के लिए वध किया गया, अपने प्रमाण को दिखाया है।

दूसरा, सूबेदार ने प्रमाण को उसे परमेश्वर की महिमा करने दी। यूनानी बाइबल में संकेत है कि वह परमेश्वर की महिमा करने लगा और करता रहा। विश्वास का अंतिम परिणाम हमेशा परमेश्वर की महिमा का कार्य ही होता है। हमने अपने बच्चों का पालन पोषण का काम पूरा नहीं किया है तब तक वे परमेश्वर की महिमा नहीं कर रहे हैं, और हमने यीशु के प्रमाण को सचमुच में स्वीकार नहीं किया है जब तक हम परमेश्वर की महिमा नहीं कर रहे।

तीसरा, सूबेदार ने दूसरों के सामने यह कहने के लिए, कि यीशु न केवल धर्मी था बल्कि ''परमेश्वर का पुत्र'' भी था, प्रेरणा देने के लिए उस प्रमाण को अपने आपको प्रेरणा देने दी (मरकुस 15:39)।

3. *वह इतना विनम्र था कि उसने प्रमाण को लोगों के सामने माना।* हां इस आदमी ने विश्वास कर लिया। यह माना कि इस मुद्दे पर कई बार बहस हो चुकी है कि क्या उसने केवल निष्कर्ष निकाला कि यीशु कोई विशेष व्यक्ति है या उसने यह निष्कर्ष निकाला कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है? कौन सी बात सही है?

हम याद रखें कि यीशु के विरुद्ध आरोप, जो सूबेदार ने सुना होगा, यह था कि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है। यहूदियों द्वारा दिए गए अंतिम तर्कों में से एक यह था कि ''उसने परमेश्वर होने का दावा किया!'' उन्होंने पिलातुस से कहा था, ''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया'' (यूहन्ना 19:7)। उनके आरोप से पिलातुस को गया था, जो बाद में यीशु को उससे और पूछताछ करने के लिए किले में ले गया था।

सूबेदार को इन पेशियों के समय की गई बातों का पहले से पता होगा। यीशु के आचरण और उसकी मृत्यु के आस-पास के अलौकिक माहौल के प्रमाण का अध्ययन करके, उसे विश्वास हो गया कि यीशु वही था जो उसने कहा था कि वह है। सच्चाई तक पहुंचने के लिए हमें हर वचन के संदर्भ को जो यीशु के बारे में उसकी घोषणा को बताता है ध्यान से पढ़ना आवश्यक है। ऐसा करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सूबेदार यह मान गया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

निष्कर्ष: बाकी के समय के लिए, बाइबल में बताया गया यह सूबेदार इस बात का उदाहरण रहेगा कि इस ईश्वरीय गवाही का सामना होने पर जो यीशु है, एक अच्छा हृदय क्या करता है। निष्कपट मन वाला है ध्यान से इस प्रमाण का अध्ययन करेगा, ईमानदारी से इसके सच्चा होने को मानेगा और इसे जीवन की बड़ी सच्चाई के रूप में मानेगा।

हम सब के लिए बड़ा प्रश्न यह है कि ''जीवन की इस सबसे सच्ची सच्चाई के साथ अर्थात यानी इस सच्चाई के साथ कि यीशु परमेश्वर परमेश्वर का पुत्र है मैंने क्या किया?''

पर्दे का फटना (15:38)

यीशु ने क्रूस पर से सात बार बात की और परमेश्वर ने, अंधकार, पर्दे के फटने, भूकम्प और कब्रों के खुलने के साथ चार बार बात की। जब पूरे देश में अंधकार छा गया तो दोपहर से शाम 3:00 बजे तक क्रूस के आस पास सन्नाटा छा गया होगा। इस समय के दौरान यीशु ने बात नहीं की; यदि उसने की भी हो तो कम से कम उसे लिखा नहीं गया है।

सायं काल 3:00 बजे, अंधेरा छट गया। फिर, स्पष्टतया कुछ ही मिंटों अंदर यीशु ने एक के बाद एक चार कथन कहे: ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?''; ''मैं प्यासा हूं''; ''पूरा हुआ''; ''हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।''[102] यह साफ़ कहा गया है कि पहला और अंतिम कथन ऊंचे स्वर में कहे गए थे।

ऐसा लगता है कि यीशु के ''अपने पिता को अपनी आत्मा सौंप देने'' के तुरंत बाद मन्दिर का पर्दा ''ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया'' (मरकुस 15:38)।

समय महत्वपूर्ण है। दोपहर के 3:00, बलिदानों का दिया जाना आरम्भ हो गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि याजक बलिदान की वेदी पर काम में लगे हुए थे और कुछ याजक धूप की सोने की वेदी पर पर्दे के बाहर खड़े थे। परमेश्वर उन्हें ठीक यहीं ठहराना चाहता था। यह घड़ी समय के आरम्भ होने से पहले अनन्तकाल में तय कर ली गई। सीधे तौर पर मसीह की मृत्यु के सबसे अधिक जिम्मेदार लोगों ने पर्दे के फटने को देखना था। याजकाई की अपनी सेवकाई को पूरा करने के लिए तैयार, पर्दे के सामने खड़े होने पर उन्होंने दूर से अचानक चीख की आवाज

सुनी और परदे को अपनी आंखों के सामने दो भाग होते हुए देखकर उनके दिल पर गहरी चोट लगी।[103]

पर्दे का फटना भूकम्प, चट्टानों के तिड़कने और कब्रों के खुलने से पहले हुआ। उसके बाद होने वाले भूकम्प से मन्दिर की कोई हानि नहीं हुई। मन्दिर और इसके आस-पास की इमारतों को कुछ नहीं हुआ और वे वैसे ही खड़ी रहीं जैसे वह पहले थीं, ताकि सभी याजक पर्दे के फटने के आश्चर्यकर्म को देख सकें। लटकते हुए पर्दे के ऊपर भूकम्प से ऊपर से नीचे तक नहीं फट सकता होगा। कोई भी देखने वाला देखकर बता सकता था कि यह फटना सर्वशक्तिमान परमेश्वर के हाथ से हुआ है। यीशु की मृत्यु के समय और मसीही युग की अवधि के दौरान, पवित्र शास्त्र की गवाही के द्वारा परमेश्वर संसार को यह बता रहा था कि उसके पुत्र की मृत्यु से मन्दिर में होने वाली आराधना और दिए जाने वाले बलिदान बंद हो गए।

मन्दिर में एक बाहरी आंगन, पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान थे। मन्दिर के अंदर दो पर्दे लटके हुए थे। एक तो पवित्र स्थान से पहले था ताकि याजक भी इसमें बेअदबी से झांक न पाएं, और एक और पर्दा पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करता था। यह दूसरा वाला पर्दा परमेश्वर के निवास स्थान की रक्षा करता था। दोनों पवित्र स्थानों को अलग करने वाला पर्दा बड़ा और कीमती था, जो लगभग साठ फुट ऊंचा और महीन कारीगरी का काम था। एलेफ्रिड एडरशेम ने हेरोदेस के मन्दिर की यह विशेषता लिखी है:

> परम पवित्र स्थान के पहले के पर्दे 40 हाथ [60 फुट] लम्बे, और 20 हाथ [30 फुट] चौड़े ... और एक-दूसरे से जुड़े हुए 72 वर्गों में बने हुए थे, और ये पर्दे इतने भारी थे कि समय की अतिश्योक्ति की भाषा में, हर पर्दे को पकड़ने के लिए 300 याजक चाहिए होते थे। यदि पर्दा बिल्कुल वैसा ही था जैसा ताल्मुड में बताया गया है, तो यह केवल भूकम्प से दो भाग नहीं हो सकता था। ...[104]

पर्दे को ऊपर से लेकर नीचे तक दो फाड़ करके परमेश्वर ने संसार को तीन भागों वाली गवाही दी।

1. *पर्दे का फटना यह पुष्टि करने के लिए था कि पाप के लिए पूर्ण बलिदान दिया जा चुका है।* मसीह की मृत्यु मनुष्य के पापी होने और इसके चंगुल से उसे छुड़ाने की परमेश्वर की मंशा के बारे में थी। पौलुस ने लिखा है, ‘‘हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है’’ (इफि. 1:7)।

व्यापारिक सौदों के सम्बन्ध में हमने अधिकतर लोगों की गवाहियों को देखा है। जब कोई कारोबारी बैंक से कर्ज़ लेता है तो वह उसे मिलने वाली राशि के लिए हस्ताक्षर करके देता है। लगभग शायद नब्बे दिनों के बाद वह ब्याज समेत मूलधन लौटा देता है। कर्ज़ की सारी राशि प्राप्त कर लेने के बाद बैंक अधिकारी उस कागज़ को जो तीन महीने पहले कर्ज़ लेने वाले ने लिखकर दिया था, निकालता है। वह इस कागज़ को या तो कर्ज लेने वाले को लौटा देगा या उसे फाड़कर फेंक देगा। अब यह किसी काम का नहीं रहा। कर्ज जो चुका दिया गया।

ऐसे ही परमेश्वर ने पर्दे को फाड़ दिया।[105] सदियों तक वह पर्दा मनुष्य के परमेश्वर का कर्जदार होने का हस्ताक्षर बना रहा। यीशु ने मरकर उस कर्ज को चुका दिया। परमेश्वर ने उस

पर्दे को ऊपर से लेकर नीचे तक दो फाड़ कर दिया या फाड़ दिया। पौलुस ने लिखा है, "विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है" (कुलु. 2:14)।

2. *पर्दे के फटने से इस बात की घोषणा भी हो गई कि मूसा की व्यवस्था वाली मनुष्यों की महायाजकाई सदा के लिए खत्म हो गई।* मूसा के युग के दौरान प्रायश्चित के उस बड़े दिन पर हर वर्ष इस्राएल का महायाजक अपने और इस्राएलियों के प्रायश्चित के लिए बलि किए गए बैल के लहू का छिड़काव करने के लिए परम पवित्र स्थान में जाता था (इब्रा. 9:7; देखें लैव्य. 16:14)।

यह तथ्य हमें क्रूस पर हमारे प्रभु की मृत्यु के दोहरे काम का स्मरण करवाता है। पहला, यीशु ने आवश्यक बलिदान के रूप में अपने आपको भेंट दिया। अपनी आत्मा और देह में पाप के प्रति पमरेश्वर के क्रोध को सहते हुए उसने हमारी जगह ले ली। परन्तु इस काम के अलावा, उसने समय बीतने पर हमारे महायाजक के रूप में पाप के लिए इस बलिदान को लागू करना था। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है, "इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे" (इब्रा. 2:17)। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है, "यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्रश्यचित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी" (1 यूहन्ना 2:1, 2)।

मसीह ने अपने आपको भेंट कर दिया। यह सच्चाई उसने स्पष्ट कर दी जब उसने यह कहा, "कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे [मेरे प्राण को] आप ही देता हूँ" (यूहन्ना 10:18)। वह क्रूर लोगों का लाचार शिकार नहीं था बल्कि उसने क्रूस पर अपने आपको बलिदान होने के लिए स्वेच्छा से दिया। परन्तु हमें उसे बाकी के सारे समय के लिए एक बड़े महायाजक के रूप में भी देखना आवश्यक है। वह बड़ा महायाजक है जो इस सिद्ध बलिदान को किसी के लिए भी जो परमेश्वर की संतान होना चाहे और परमेश्वर की संतान में से हर किसी के लिए उसके सामने रहते हों, लागू करेगा। उसके यह सिद्ध बलिदान करने के द्वारा, और उसके सिद्ध रूप में इस बलिदान को उन सब लोगों के लिए लागू करने के द्वारा जो उसमें रहते हैं, उसने महायाजक का पृथ्वी पर के पद को सदा-सदा के लिए खत्म कर दिया।

3. *पर्दे के फटने से यीशु के लहू ने छुड़ाए हुओं के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में निशुल्क, निरंतर पहुंच उपलब्ध करवाई।* इससे परमेश्वर और मनुष्य के बीच की रुकावट दूर हो गई। इसने मनुष्य के परमेश्वर की उपस्थिति में जाने का मार्ग खोल दिया। पौलुस ने लिखा है, "और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है" (इफि. 2:17, 18)। उसकी मृत्यु के द्वारा, पर्दा दो फाड़ हो जाने पर, पिता तक पहुंच का द्वार सब लोगों के लिए खुल गया। याजक और आराधक के बीच की दीवार टूट गई। कलीसिया के लोग पवित्र याजकाई हैं (1 पतरस 2:5)। अब यीशु मसीह के द्वारा हम सबकी पहुंच परमेश्वर तक हो गई है।

यीशु की मृत्यु के साथ, मन्दिर में होने वाली आराधना के दिन पूरे हो गए। परमेश्वर ने टाइटस और रोमी सेना के हाथों 70 ई. में मन्दिर को नष्ट होने दिया। परम पवित्र स्थान स्वर्ग के सिंहासन की परछाई और प्रतिबिम्ब था (इब्रा. 8:1, 2; 9:2–9)। दो फाड़ हुआ पर्दा इस बात की घोषणा कर रहा था कि परमेश्वर तक हमारी पहुंच हमारी अपनी भलाई के आधार पर नहीं बल्कि मसीह की मृत्यु के आधार पर होती है। आज्ञाकारी विश्वासी अब याजकों का राज्य बन गए हैं जिन्हें हर समय परमेश्वर तक बिना किसी रोक टोक के पहुंचने का अधिकार है।

निष्कर्ष: उसी क्षण जब यीशु ने अपनी आत्मा परमेश्वर को सौंपी, पर्दे के ऊपर से लेकर नीचे तक फट जाने से कौन प्रभावित नहीं होता? ऐसा हो सकता है कि पर्दे के दो फाड़ होने के इस आश्चर्यकर्म ने कुछ याजकों को मसीही बनने को विवश किया। लूका ने बाद में लिखा, "परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया" (प्रेरितों 6:7)। पर्दे के फटने से यह घोषणा कर दी गई कि पाप की कीमत चुका दी गई है, सांसारिक महायाजक का पद खत्म हो गया है, और अब यीशु के लहू से परमेश्वर की उपस्थिति में हर समय जाया जा सकता है।

यीशु की मृत्यु (15:39)

यह कहना कि मसीह का क्रूस पवित्र शास्त्र की कहानी के केन्द्र में है, बाइबल के पूरे विचार के साथ मेल खाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि क्रूस के पहले की हर चीज़ उसकी ओर आगे को देखती थी और इसके बाद की हर चीज़ इसकी ओर पीछे को देखती है।

परमेश्वर के दिमाग में यीशु "जगत की उत्पत्ति के पहले ही से" "निर्दोष और निष्कलंक मेमना" था (1 पतरस 1:19, 20)। मानवीय इतिहास के आरम्भ में, परमेश्वर ने स्त्री की संतान (यीशु) और सर्प (शैतान) के बीच अंतिम युद्ध से सम्बन्धित एक अस्पष्ट भविष्यद्वाणी दी। उसने सांप से कहा,

> और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।

मनुष्य के छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना को अंजाम देते हुए यीशु ने शैतान को मृत्यु का प्रहार दिया।

पुरखाओं के और मूसा के युगों के दौरान दिया जाने वाला हर बलिदान उस पूर्ण बलिदान की ओर इशारा करता था जो यीशु ने देना था। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है,

> हर एक याजक तो खड़े होकर प्रति दिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार-बार चढ़ाता है। परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। और उसी समय से इसकी बाट जोह रहा है, कि उसके बैरी उसके पांवों के नीचे की पीढ़ी बनें (इब्रा. 10:11–13)।

यीशु के अपना सिर झुकाकर अपनी आत्मा को परमेश्वर को सौंपने पर, बड़े और अनन्त

महत्व का क्षण आ गया। यीशु ने उस मिशन को पूरा कर लिया था जिसके लिए वह इस संसार में आया था। मन्दिर में पर्दे को दो-फाड़ करके, पृथ्वी को भूकम्प के साथ कम्पाकर और पवित्र लोगों की कब्रों को खोलकर परमेश्वर ने इसके अत्यंत महत्वपूर्ण होने की घोषणा कर दी (मत्ती 27:51-53; मरकुस 15:38; लूका 23:45)।

मरकुस के शब्दों के अर्थ की गहराई को इससे अच्छे ढंग से कौन बता सकता है: "तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये" (15:37; देखें मत्ती 27:50; लूका 23:46)? यीशु की मृत्यु के समय वास्तव में क्या हुआ?

1. *यीशु की मृत्यु पर, छुटकारे की परमेश्वर की योजना पूरी हुई।* उसकी मृत्यु से एक नये युग, यानी क्षमा के युग का आरम्भ हुआ। बाइबल उसकी मृत्यु को सदा-सदा के लिए हर पाप के लिए छुटकारा दिलाने वाले के रूप में दिखाती है। हमें बताया गया है, "पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे" (इब्रा. 9:26)। यह आयत यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले के समय के युगों के उसके बलिदान के द्वारा खत्म हो जाने की बात करती है। उसकी मृत्यु से उस सब का जो मनुष्य के साथ परमेश्वर का पुराना व्यवहार था यानी लहू के बलिदानों, व्यवस्था को मानना और उस समय की प्रतीक्षा में जब परमेश्वर ने पापों का कोई स्मरण नहीं करना था, सब खत्म हो गए। उसकी मृत्यु की महत्वपूर्ण घटना से क्षमा और परमेश्वर के सिंहासन तक सीधे पहुंच मिल गई।

2. *उसकी मृत्यु पर, नई वाचा के सत्यापन का काम पूरा हुआ।* नई वाचा के होने पहले, इसके बनाने वाले की मृत्यु का होना आवश्यक था। पुरानी वाचा बलिदानों के लहू पर आधारित थी, परन्तु नई वाचा यीशु के लहू पर आधारित है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है कि यीशु ने परमेश्वर के सामने अपने आपको निर्दोष चढ़ाया (इब्रा. 9:14)। उसने आगे कहा,

> इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रा. 9:15)।

यीशु का लहू पुराने नियम के अधीन रहने वाले, आज्ञाकारी विश्वास से पशुओं के बलिदान देने वाले उन सब लोगों के लिए उद्धार की प्रक्रिया को पूरा करते हुए, पीछे की ओर गया। इसी प्रकार से यह शेष मसीही युग में उसके पास आने वाले किसी भी व्यक्ति की ओर आगे को जाता है।

3. *उसकी मृत्यु पर, कलीसिया का निर्माण पूरी तरह से हुआ।* पृथ्वी की अपनी सेवकाई के दूसरे भाग में, यीशु ने कहा कि वह अपनी कलीसिया बनाएगा (मत्ती 16:18), परन्तु उसने अपने प्रेरितों को यह नहीं बताया कि इसके लिए उसकी योजना क्या थी। लगभग पिन्तेकुस्त के दिन तक पवित्र आत्मा ने यह प्रकट नहीं किया कि यह कैसे आनी थी। उस समय प्रेरितों के द्वारा यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का संदेश सुनाया गया। पश्चात्तापी और आज्ञाकारी होकर संदेश को मानने वालों को पानी के बपतिस्मे के द्वारा यीशु के लहू में धोया गया और प्रभु द्वारा उन्हें अपनी कलीसिया में मिला दिया गया। अब संसार क्रूस के द्वारा विश्वासियों की मण्डली के रूप में उस कलीसिया को पहचान सकता था, जिसे यीशु ने बनाया।

पौलुस ने लिखा,

> ... मसीह ने ... कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी जेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस मे न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो (इफि. 5:25-27)।

इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से उसने कहा कि "*परमेश्वर की कलीसिया* की रखवाली करो, *जिसने उसने अपने लहू से मोल लिया है*" (प्रेरितों 20:28)। मसीह की कलीसिया का अस्तित्व केवल मसीह की मृत्यु से हो पाया।

निष्कर्ष: हमारे लिए उस क्षण के पूरे अर्थ को समझ पाना असम्भव होगा, जब यीशु ने "सिर झुकाकर प्राण दिए" (यूहन्ना 19:30; देखें मरकुस 15:37)। परन्तु हम इतना जानते हैं कि अनन्तकाल तक इसका अर्थ हमारे लिए मृत्यु और जीवन के बीच का अंतर है। एफ़. जे. ह्युगेल ने लिखा है, "पूरा संसार ही मसीह के क्रूस के सामने लाचार है। ... पूरी स्वर्गीय सेना मिलकर उसमें से जो इसकी महिमा के साथ मिलाना आरम्भ कर पाए, किसी भी बात को समझ नहीं सकती। यह सदा-सदा तक परमेश्वर की बेहतरीन रचना रहेगी।"[106]

यीशु का जनाज़ा (15:42-47)

मेरा मानना है कि हम में से हर किसी को क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र को मरते हुए दिखाना कठिन लगता है। हमारे लिए उसकी देह के दफ़नाए जाने की कल्पना करना उतना ही कठिन है। फिर भी परमेश्वर पुत्र के देहधारी होने पर उसकी मृत्यु और उसका दफ़नाया जाना उसके आगमन के साथ-साथ चलते हैं। वह हमारे पापों का बलिदान बनने के लिए आया और उसका हमारे लिए अपने आपको देने के लिए आवश्यक था कि वह अपने आपको क्रूस पर मरने दे और उसे दफ़नाया जाए। आश्चर्य की बात है कि उसने अपनी देह को दफ़नाने के लिए अपने अनुयायियों पर छोड़ दिया।

ये घटनाएं जो हुईं, हमें स्मरण दिलाती हैं कि यीशु का इस संसार में आना, ऐसी बातें थीं जिनकी न तो कोई व्यक्ति और न लोगों का कोई समूह कभी कल्पना कर सकता है। परमेश्वर का पुत्र, ऊंचे से ऊंचे पर विराजमान, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु, गिरफ्तार किया गया, उस पर मुकद्दमा चलाया गया, उसे पीटा गया, क्रूरतापूर्वक मार डाला गया और आम लोगों के देखने के लिए क्रूस पर छोड़ दिया गया! इसकी कल्पना किसने की होगी?

यीशु ने शुक्रवार शाम को अपनी आत्मा परमेश्वर को दे दी। सूर्य ढलने वाला था यानी "संध्या हो गई" थी (मरकुस 15:42)। शायद अंधेरा होने में केवल एक घण्टा या थोड़ा अधिक समय था। अपनी परम्परा का पालन करते हुए सिपाहियों ने डाकुओं के शव को उतारकर उन्हें किसी अमानवीय ढंग से निपटा दिया होगा, जैसे कि उन्हें किसी गड़हे में फेंक देना या किसी उपेक्षित कब्र में डाल देना। यीशु के शव का भी यही हाल होना था, यदि प्रेमी सेवकों द्वारा उसे सम्भाल न लिया गया होता।

अरिमतिया के यूसुफ़ और निकुदेमुस नामक दो जनों ने उसे दफ़नाया। सुसमाचार के चारों

विवरणों में यूसुफ़ द्वारा उसके शव को भक्तिभाव से उतारे जाने की बात कही गई है, परन्तु सुसमाचार के प्रत्येक विवरण में विशेष बातें जोड़ी गई हैं। सुसमाचार की पुस्तकों में यहां यूसुफ़ का नाम पहली बार आया है। इसके अलावा उसके अलावा जो सुसमाचार के अन्य तीन विवरणों में बताया गया है, केवल यूहन्ना में निकुदेमुस का योगदान बताया गया है।

ये दोनों यहूदियों की निर्णय देने वाली जमात, उस महासभा के सदस्य थे जो यीशु के मुकद्दमों और क्रूस पर चढ़ाए जाने की जिम्मेदार थी (लूका 23:50; यूहन्ना 3:1)। हो सकता है कि उन्हें महासभा की बैठक में न बुलाया गया हो; या यदि उन्हें निमन्त्रण दिया भी गया तो उन्होंने जाने से इनकार कर दिया हो।

यूसुफ़ धनवान व्यक्ति था जिसकी सम्पत्ति यरूशलेम में थी (मत्ती 27:57)। वह अरिमतिया का रहने वाला था जो कि यहूदा के पहाड़ी देश में बसा एक गांव था (लूका 23:51)। उसने निर्णय लिया कि वह पिलातुस के पास जाकर यीशु के शव को दफ़नाने की अनुमति मांगेगा (मरकुस 15:43)। उसकी सम्पत्ति और उसका रुतबा उसे पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव मांगने के लिए योग्य बनाते थे। मरकुस ने कहा है कि यूसुफ़ "महासभा का सदस्य था और आज भी परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था" (मरकुस 15:43)। लूका ने उसे "सज्जन और धर्मी पुरुष" बताया जो "उनकी योजना और उनके इस काम से प्रसन्न न था" (लूका 23:50, 51)। वह यीशु का एक गुप्त चेला था जिसने उसके प्रति अपनी भक्ति को यहूदियों के डर से छिपा रखा था (मत्ती 27:57; यूहन्ना 19:38)।

पिलातुस ने "शव यूसुफ़ को दिला दिया" (मरकुस 15:45) यानी उसने यूसुफ़ को यीशु शव को क्रूस से उतारकर दफ़नाने की अनुमति दे दी। अपना उत्तर देने से पहले पिलातुस के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि यीशु मर चुका है। मरकुस ने लिखा है, "पिलातुस को आश्चर्य हुआ कि वह इतने शीघ्र मर गया; और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा, 'क्या उसको मरे हुए देर हुई?' जब उसने सूबेदार के द्वारा हाल जान लिया, तो शव यूसुफ़ को दिला दिया" (15:44, 45)। वह हैरान था कि यीशु इतनी जल्दी कैसे मर गया था, परन्तु उसने यूसुफ़ की विनती मान ली। जल्दी से, सभा के इस सदस्य ने जाकर क्रूस पर से शव को उतार लिया (15:46)।

यूहन्ना ने तीन अलग-अलग हवालों में निकुदेमुस का उल्लेख किया है। उसने निकुदेमुस के यीशु के पास रात को जाने की कहानी बताई (यूहन्ना 3:1, 2)। इसके अलावा उसने प्रधान याजकों और फरीसियों द्वारा यीशु को पकड़ने के लिए जाने वालों के नाकाम होने पर उन्हें बुरा भला बोलने पर उन्हें जवाब देते दिखाया (यूहन्ना 7:45-51)। तीसरा, यूहन्ना ने यीशु के दफ़नाए जाने के सम्बन्ध में उसका उल्लेख किया। उसने यूसुफ़ के साथ मिलकर यीशु के शव पर लेप लगाने के लिए पचास सेर के लगभग मिला हुआ गंधरस और एलवा लाया (यूहन्ना 19:39)।

यीशु का जनाज़ा कैसा था?

1. *उसका जनाज़ा छोटा था।* हमें यह उम्मीद होगी कि मनुष्य द्वारा लिखे जा सकने वाले सबसे बढ़िया गुणगान को पढ़ने के लिए कब्र पर लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई होगी। परन्तु यदि कोई गुणगान हुआ हो तो हमें बताया नहीं गया। इन दो जनों ने, शायद किसी और को साथ लेकर शव को उस कब्र तक ले जाने का प्रबन्ध किया जो यूसुफ़ ने दान में दी थी (मत्ती 27:59,

60)। उन्होंने चट्टान की कब्र में बनाई गई जगह में शव को रखा, इसे बढ़े प्रेम से मलमल के कपड़े में लपेटा और मलमल को मोड़ते हुए उसमें गंधरस और एलवा रखा (मरकुस 15:46)। शाम होने और उसकी मृत्यु के कारण हर ओर होने वाली उत्तेजना के कारण उन्होंने अपना काम जल्दी से जल्दी किया। यीशु की बेजान देह पर यदि कोई भाषण दिया गया होगा तो वह बहुत छोटा और जल्दी-जल्दी में होगा।

2. *उसके जनाज़े पर केवल कुछक लोग आए।* एकदम से ध्यान स्त्रियों के उस टोली के साथ-साथ जो वहां इकट्ठी होकर दफ़नाए जाने को देख रही थीं, यूसुफ़ और निकुदेमुस दो जनों पर जाता है (15:47)। जितना हमें जानकारी है प्रेरित वहां नहीं थे, यहां तक कि यूहन्ना भी नहीं था। जब यीशु ने मृत्यु की नींद में अपने सिर को झुकाया था, जब डाकुओं की टांगे तोड़ी गई थीं ताकि वे जल्दी मर सकें, तो क्रूस के पास इकट्ठा हुए लोग अपने घरों को चले गए थे। उन्होंने तर्क दिया होगा, ''अब यहां रुककर क्या करना? वह तो मर चुका है।''

शायद कुछ लोग घर को नहीं जा पाए। मसीह के लिए उनकी भक्ति ने उन्हें तब तक चैन नहीं लेने देना था जब तक वे उसे सहीं ढंग से दफ़ना न देते। एक यूसुफ़ ने बैतलहम में बालक यीशु की नन्हीं देह को अपनी बाहों में झुलाया था और अब एक और यूसुफ़ ने अपनी बाहों में यीशु की देह को लेकर इसे यरूशलेम में दफ़ना दिया। अपने काम को करने के लिए परमेश्वर ने हमेशा मनुष्यों के हाथों का इस्तेमाल किया है। वे यीशु को प्रचार करते सुनने और उसमें विश्वास करने वाली स्त्रियां तब तक उसके साथ रहीं, जब तक उन्हें लगा नहीं कि वे अब कुछ और नहीं कर सकतीं। संसार के सबसे बड़े जनाज़े पर ये मुट्ठी भर लोग थे।

3. *उसका जनाज़ा संवेदनशील और दर्दनाक था।* हम हैरान होते हैं कि इन दोनों ने यीशु में अपने विश्वास को लोगों में दिखाने में इतना समय क्यों लगाया; और हम हैरान होते हैं कि वे लोग जो उसे जानते थे और उसके साथ रहते थे, इतनी आसानी से, इतनी जल्दी, और इतनी पूरी तरह से गायब कैसे हो गए। परन्तु उनके कामों में हम सहानुभूति, कोमलता से देखभाल और भक्तिपूर्ण और साहसपूर्ण विश्वास से निकले आदर को देखते हैं।

एक अर्थ में, यूसुफ़ ने यहूदियों की तरह ही किया: उसने पिलातुस से ''यीशु का शव मांगा'' (15:43)। उन्होंने तीनों शव ''उतारे जाने'' के लिए उसकी अनुमति मांगी (यूहन्ना 19:31)। परन्तु यूसुफ़ ने मनुष्य के पुत्र को आदर देना चाहा, जबकि यहूदियों ने अपने सामने से उसके शव को हटाना चाहा ताकि वे सब्त के लिए तैयार कर सकें। यूसुफ़ ने यीशु के शव को दफ़नाने का निश्चय कर लिया था चाहे इस समय पर उसके मित्रों के रूप में लोगों में पहचान खतरनाक बात थी। वह व्यक्ति जिसने ''यहूदियों के डर से'' (यूहन्ना 19:38) अपने विश्वास को गुप्त रखा था, अब ''हियाव करके पिलातुस के पास गया और यीशु का शव मांगा'' (मरकुस 15:43)।

''नीकुदेमुस भी, जो पहले यीशु के पास रात को गया था, पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया'' (यूहन्ना 19:39)। एक ओर जहां यूसुफ़ पिलातुस के पास अपील करने में लगा हुआ था, वहीं दूसरी ओर निकुदेमुस मसालों का अपना उपहार इकट्ठा करने में लगा हुआ था। भक्ति और बलिदान में वह सच्चा सहयोगी बन गया, क्योंकि यीशु के दफ़नाए जाने में इस्तेमाल किए जाने के लिए मुर्र और लोबान महंगे तोहफ़े के रूप में दिए गए थे।

4. *उसके जनाज़े का प्रभाव सदा तक रहेगा।* हमारे प्रभु ने अपने दफ़नाए जाने की या इस बात की कोई परवाह नहीं की कि उसकी कब्र पर उसका गुणगान किया जाएगा। उसे उन सब का पता था जिन्होंने इसे सम्भाल लेना था। परमेश्वर के अद्‌भुत इंतज़ाम में, दफ़नाया जाना भविष्यद्वाणी का पूरा हुआ। यह पवित्र शास्त्र के उस वचन के साथ मेल खाता था जिसमें भविष्यद्वाणी की गई थी कि उसके दफ़नाए जाने की गरिमा उसकी मृत्यु के अपमान के बिल्कुल उलट होनी थी। यशायाह ने लिखा, "उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई, और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी" (यश. 53:9)।

निष्कर्ष: यीशु की मृत्यु संसार के इतिहास की सबसे बड़ी घटना थी और रहेगी। इसके साथ जुड़ी कोई भी बात समय के अंत तक पढ़ी और विचारी जाएगी। उस समय वहां बहुत कम लोग थे, परन्तु संसार के लागों ने पवित्र शास्त्र की इसकी तस्वीर के सामने बैठकर मनुष्यों की दुष्टता पर रोना था, परन्तु यीशु के प्रेम और उसके अद्‌भुत और अविनाशी जीवन के जश्न मनाना था।

अरिमतिया का यूसुफ़ (15:42-47)

यहूदी अगुवे नहीं चाहते थे कि यीशु और उन डाकुओं के शव शुक्रवार से लेकर शनिवार तक क्रूस पर पड़े रहें। व्यवस्थाविवरण 21:22, 23 के आधार पर उनका मानना था कि क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति का शव सब्त या फसह के दिन क्रूस पर टंगा रहने से रहने से भूमि अशुद्ध हो जाएगी। उन्होंने पिलातुस से यीशु और क्रूस पर चढ़ाए गए दो और जनों के मार डालने के लिए कहा ताकि उन्हें क्रूसों पर से उतारा जा सके (यूहन्ना 19:31)। पितालुस ने उनकी इच्छा पूरी कर दी और अपराधियों की टांगें तोड़ दी गईं। यीशु के लिए इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि वह पहले ही मर चुका था। यहूदियों ने यह मान लिया होगा कि इन्हें मार देने के बाद रोमी सिपाही शवों को फेंक देंगे या किसी सामान्य कब्र में दफ़ना देंगे। कम से कम बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि यहूदियों ने इन शवों को दफ़नाने की कोई योजना बनाई हो।

रोमी कानून रिश्तेदारों को मारे गए व्यक्ति के शरीर का दावा करने और इसे दफ़नाने की की अनुमति देता था। यीशु के रिश्तेदार गलीली थे; और या तो यहूदियों के डर के कारण या यरूशलेम में कब्र न होने के कारण उन्होंने उसके शव पर दावा न करना चुना। उसके प्रेरितों को भी, जो कि गलीली थे और उसके सगे सम्बन्धियों में से नहीं थे, लगा नहीं कि पिलातुस किसी कारण उन्हें शव सौंप देगा। इसलिए यीशु की देह को किसी प्रकार की गरिमा के साथ दफ़नाया जाने के लिए, किसी दूसरे को यानी किसी ऐसे व्यक्ति को जो उसके रिश्तेदारों, प्रेरितों और गलीली चेलों से अपरिचित को इसे यह करना पड़ना था।

अपने अद्‌भुत प्रबन्ध के द्वारा परमेश्वर ने अपने पुत्र को सम्मानपूर्वक दफ़नाया जाना उपलब्ध करवाने के लिए एक आदमी को तैयार कर रखा था। यह आदमी अरिमतिया का यूसुफ़ था जो कि यहूदी नगर में एक अज्ञात व्यक्ति था। वह एक यहूदी था जो यहूदी शिक्षा में पढ़ा था और उसे महासभा का सदस्य बनाया गया था (मरकुस 15:43; लूका 23:50)। महासभा के उसकी ओर होने को छोड़ किसी यहूदी के लिए सबसे बड़ी उपाधियों में से एक उसका धनवान होना था। दूसरे यहूदियों ने उसे एक ऐसे आदमी के रूप में देखा होगा, जो सफ़लता के शिखर

पर पहुंच गया था।

यीशु के मर जाने के बाद यूसुफ़ परछाई में से बाहर आया और पिलातुस के पास जाकर यीशु के शव को दफ़नाने के लिए अनुमति मांगने लगा (मरकुस 15:43)। महासभा का सदस्य होने के कारण वह पिलातुस के पास जा पाया होगा। विनती किए जाने के बाद, पिलातुस ने यह पुष्टि की कि यीशु की मृत्यु हो चुकी है और फिट उसे अनुमति दे दी (15:44, 45)। यूसुफ़ ने शव को क्रूस पर से उतारा, इसे उस मलमली कपड़े में लपेटा जिसे वह अपने साथ लेकर आया था और इसे अपनी ही कब्र पर ले गया (15:46)। निकुदेमुस की सहायता से, जो कि उसके साथ महासभा का सदस्य और यीशु का समर्थक था (देखें यूहन्ना 7:50-52; 19:39, 40), उसने शव पर लेप लगाकर इसे विश्राम करने के लिए रख दिया।

बिना संकोच के हम कह सकते हैं कि हमारे प्रभु के शव को दफ़नाकर अरिमतिया के यूसुफ़ ने उन सबसे बढ़िया कामों में से जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, एक को किया। यीशु के हमारे पापों के लिए मर जाने के बाद, यूसुफ़ ने भक्ति और लिहाज़ के साथ यीशु के शव को लेकर, इसके रविवार सुबह जी उठने तक आराम करने के लिए, पास की एक कब्र में रख दिया। किसी के लिए इससे बढ़कर और अच्छा काम करने की बात और क्या हो सकती है? जो कुछ मरियम ने मरकुस 14:9 में यीशु के लिए किया था, उसी से मेल खाते हुए हम यूसुफ़ के लिए कह सकते हैं, ''सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।''

इस आदमी की कोई ऐसी बात है जिसका अनुकरण हमें करना चाहिए? यह सच है कि उसमें खामियां थीं, परन्तु उसमें सराहने योग्य बातें भी थीं। आइए हम उसकी सराहना करते हुए उससे सीख लें।

1. *शिष्यता का गुण।* यूसुफ़ यीशु का एक चेला था (मत्ती 27:57)। यह सच है कि वह गुप्त चेला था (यूहन्ना 19:38); परन्तु यीशु की मृत्यु के बाद उसने दिलेरी से और खुलकर काम किया। कहीं से, किसी प्रकार, उसने यीशु के परमेश्वर होने के प्रमाण को सुना था। अपने मन में उसने इस पर विचार किया और इस सच्चाई को मान लिया था। उसने यीशु को अपने आप को सौंपकर उसे अपना स्वामी बना लिया।

2. *आशा का गुण।* वह ''परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था'' (मरकुस 15:43); जो उसके दिल में बैठ गई थी। बेशक उसने यीशु को परमेश्वर के राज्य के आने का प्रचार करते हुए सुना था। इस विचार ने उसे रोमांचित कर दिया था और उसके मन में आशा जाग गई थी।

3. *भलाई और धार्मिकता के गुण।* उसके स्वभाव में भलाई और धार्मिकता के शानदार गुण थे। उसका मन शुद्ध था और वह धर्मी व्यक्ति था। उसका हृदय यीशु की शिक्षा के लिए उपजाऊ भूमि था। लूका ने उसे ''सज्जन और धर्मी पुरुष'' बताया (लूका 23:50) जो महासभा की खतरनाक योजनाओं और चालों से सहमत नहीं था (लूका 23:51)। उसके दिल से धर्मी काम निकले न कि अधर्मी। उसके गम्भीर और अच्छे स्वभाव ने उसे स्वर्ग से आए धर्मी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करने देना था। महासभा के यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अपनी योजना को अंजाम देने पर उसने बैठक में जाने से मना कर दिया होगा।

4. *आत्मिकता का गुण।* यूसुफ़ ने यीशु के क्रूस को उसे बदल जाने दिया। स्पष्टतया क्रूस

के दृश्य को देखकर बहुत से लोग बिना बदले घरों को चले गए थे। उन्होंने उस कष्ट को और उन चिह्नों को देखा परन्तु उन्होंने परेशानी में से अपनी छातियां अवश्य पीटीं। दूसरी ओर क्रूस ने यूसुफ़ को सदा के लिए बदल दिया। यीशु के व्यवहार, अंधकार और भूकम्प जैसे क्रूस के पक्के चिह्नों से यह गुप्त चेला परछाईं में से शिष्यता की ज्योति में आ गया।

5. *साहस का गुण।* अपने साहस को बुलाकर यूसुफ़ ने यीशु की ओर से अपने जीवन, सम्पत्ति और प्रतिष्ठा को खतरे में डाल दिया (देखें मरकुस 15:43)। जीवन में कई बार ऐसा समय आता है जब किसी में वह साहस नहीं होता जिसकी आवश्यकता होती है; ऐसे अवसर के लिए निडरता के एक नये स्तर को बुलाना आवश्यक है।

हम नहीं जानते कि यीशु को दफ़नाने के बाद यूसुफ़ के साथ क्या हुआ। बाइबल दोबारा उसका उल्लेख नहीं करती। निश्चय ही उसे महासभा के उसके ऊंचे पद से हटा दिया गया। उसे यरूशलेम से निकलकर गुमनामी में अरिमतिया के छोटे से अज्ञात गांव में रहना पड़ा होगा। उसे पता नहीं चला होगा कि उसे कामों का क्या फल मिला परन्तु इस बात को समझ लिया होगा कि यीशु के साथ आम लोगों के बीच उसकी पहचान जीवन बदल देने वाली होनी थी।

6. *भक्ति और आदर के गुण।* वह सिपाहियों द्वारा यीशु के शव को उतारकर उन डाकुओं के साथ जिनके बीच में वह मरा था, दफ़नाने नहीं दे सकता था। यूसुफ़ के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि यीशु को गरिमा और आदरपूर्ण ढंग से दफ़नाया जाए। उसने शव को उतारकर इसे मलमल के महंगे कपड़े में लपेटा और चट्टान को खोदकर अपने लिए बनाई गई कब्र में दफ़ना दिया (मत्ती 27:60; देखें मरकुस 15:46; लूका 23:53)।

7. *उदारता का गुण।* यूसुफ़ ने हमारे प्रभु को जो कुछ उस समय उसे आवश्यक था उदारतापूर्वक दिया। कोई भी और आगे आने को तैयार नहीं था, परन्तु यूसुफ़ ने वह किया जो किया जाना आवश्यक था। उसने कीमत का हिसाब नहीं लगाया बल्कि अवसर को बहुमूल्य जाना। उसने यीशु के लिए जब वह अपने लिए कुछ नहीं कर सकता था, उपलब्ध करवाने के लिए अपने पद, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, सम्बन्धों और स्वभाव का इस्तेमाल किया। जो कुछ यूसुफ़ ने किया हम सदा उसके लिए उसके आभारी रहेंगे।

निष्कर्ष: इस महान आदमी में हमें वह आत्मिक गुण दिखाई देते हैं जो हर किसी में होनी चाहिए। वह यीशु का एक चेला, यानी एक ऐसा आदमी था, जिसके दिल में परमेश्वर का राज्य था, ऐसा आदमी जो क्रूस से कायल था, भक्तिपूर्ण और आदरणीय और उदार और दयालु आदमी था। किसी में भी ये सारे गुण एकदम से नहीं आ जाते बल्कि सही निर्णय लेते हुए और अच्छे मन के बन जाने से दिन-ब-दिन बढ़ते हैं। फिर संकट आने पर वह प्रसिद्ध उदाहरण बनकर निकलता है, जिसे सब लोग याद रखते हैं।

क्रूस को देखना (15:47)

समय की सबसे बड़ी घटना अब घट चुकी थी। परमेश्वर के पुत्र यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के बाद दफ़नाया जा चुका था।

बाग में गिरफ्तारी, तेजी तेजी से पेशियां, दु:खदायी क्रूसारोहण और यीशु की मृत्यु और परमेश्वर होने के स्वर्ग की पुष्टि के ईश्वरीय चिह्न आकर चले गए थे। महासभा के सदस्यों और

दो गुप्त चेलों, यूसुफ़ और निकुदेमुस ने, यीशु का शव मांगा और वे इसे पास की एक कब्र में ले गए। जल्दी-जल्दी और भक्तिभाव से उन्होंने यीशु के शव को निजी कब्र में रख दिया। शव को मलमल में लपेटकर कपड़े की परतों के अंदर पचास सेर गंधरस और एलवा रखने के बाद उन्होंने इसे कब्र में पत्थर के ठण्डे बैंच पर रख दिया। फिर उन्होंने कब्र के प्रवेशद्वार पर मोहर लगाने वाला एक बड़ा सा पत्थर लुढ़का दिया। यह सब चौबीस घण्टे से कम समय के अंदर अंदर हो गया।

कुछ स्त्रियां जिन्होंने दर्दनाक मौत और जनाज़ा को देखा था, पीछे-पीछे आती हुईं बैठ गईं और गम्भीर और भक्तिपूर्ण खामोशी के साथ अंदर देखने लगीं। देखते हुए, वे रोती जा रही थीं, और टकटकी लगाए हुए खामोश थीं। मरकुस ने बड़ी हिम्मत करके लिखा कि, ''मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं कि वह कहाँ रखा गया है'' (15:47)। भावनात्मक रूप में टूट चुकी, सुन्न, बेसुध और बेहाल बैठीं वे, यीशु की कब्र के पत्थर को ताक रही थीं।

वह नगर और स्थान जहां हमारे प्रभु को क्रूस पर चढ़ाया गया था सुन्न हो चुका था, शायद अभी उसे पूरी तरह से उस भयानक अपराध का जो हुआ था पता नहीं था। मौत के सन्नाटे में भीड़ जा चुकी थी, शोर थम गया था और चीखें बंद हो चुकी थीं। अंधेरा आकर चला गया था परन्तु शुक्रवार खत्म होने और सब्त का आरम्भ होने पर यह फिर से आ रहा था। चाहे इन स्त्रियों को चौकसी बंद कर देनी चाहिए, पर वे यह कोशिश करते हुए कि जो कुछ हुआ था वह उनकी कुछ समझ में आ जाए, अभी बैठकर देखते जा रही थीं। अपने वहां होने से वे अपने प्रभु के लिए अपना प्रेम जता रही थीं।

जो कुछ हमें नये नियम से यीशु की मृत्यु के विषय में पता चलता है, उसे जानते हुए आइए हम इन स्त्रियों के पास बैठने की कल्पना करें। यदि हम उस सब से जो कुछ हुआ स्तब्ध और भयभीत होकर कब्र की ओर देख रहे होते तो हमारे विचार, हमारे ध्यान और हमारे मन में क्या आता?

1. *यह तो पक्का है कि हम उस सबसे जो हुआ था, प्रभावित हुए थे।* कब्र को देखते हुए हम उस सब पर जो उस दिन हुआ था, विचार कर रहे होते।

हम में से कोई भी क्रूस पर चढ़ाए जाने की कल्पना नहीं कर सकता। यदि हम क्रूस के सामने खड़े होकर, यीशु के दु:खों को देखते हुए, निर्दयता, क्रूरता और धीमी दु:खदायी मृत्यु को देख रहे होते तो उस दृश्य को देखने से हमारे मन टूट जाते। हम जीवन के उस पहलू को देख रहे होना था जिसको समझना हमारी समझ से बाहर है। हम बुतपरस्त और धार्मिक लोगों के मिलकर किए गए असंवेदनशील कामों और घातक योजनाओं से भौंचक्के हो गए होते। किसने कभी सोचा होगा कि यीशु की सेवकाई, प्रेम और उद्धार पर लोग ऐसे प्रतिक्रिया देंगे जैसे उन्होंने दी? कब्र पर बैठकर देखते हुए हमारे दिमाग उस आतंक से चकरा जाते जो संसार ने यीशु के साथ, अर्थात उसके साथ किया था जिसे परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए भेजा था।

2. *उसकी मृत्यु की सच्चाई को जानते हुए, कब्र के पास बैठकर देखते हुए निश्चय ही हम इस पर ध्यान कर रहे होते कि इस सब का क्या अर्थ था।* अपने उद्धारकर्त्ता के विश्राम स्थल को चुपचाप देखते हुए हम अपने दिमाग में उसकी मृत्यु के ईश्वरीय उद्देश्य और जो कुछ हुआ

था, उसके दूरगामी प्रभावों को भक्तिपूर्ण विचार कर रहे होते।

यीशु संसार में मरने के लिए आया। उसे पता था कि लोग उसके साथ क्या करेंगे। अंतिम बार यरूशलेम जाने से पहले उसने अपने प्रेरितों के सामने यह बात कई बार रखी थी (देखें 8:31; 9:31; 10:32-34)। मरकुस ने एक दृश्य बताया है जिसमें यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि आगे क्या होने वाला है:

> तब वह फिर उन बारहों को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो उस पर आनेवाली थीं, "देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे, और अन्य जातियों के हाथ में सौंपेंगे। वे उसको ठट्ठों में उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और उसे घात करेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा" (10:32-34)।

हमारे प्रभु ने भविष्यद्वाणी की कि उसे ठट्ठे किए जाने थे, उस पर थूका जाना था, उसे कोड़े मारे जाने थे और उसे घात किया जाना था। उसे पता था कि धार्मिक और राजनैतिक शक्तियों का उसके लिए चहुंमुखी जवाब यही होना था। उसने उसकी हत्या करने वालों में "प्रधान याजकों," "शास्त्रियों," और "अन्यजातियों" का नाम लिया। जो जो बातें उसने कहीं थीं वे बिल्कुल वैसे ही पूरी हुईं।

बाइबल हमें केवल यह ही नहीं बताती कि यीशु के साथ क्या हुआ बल्कि यह भी बताती है कि यह क्यों हुआ। उसकी मृत्यु मनुष्यों द्वारा उसके साथ किया गया ड्रामा ही नहीं है बल्कि उसका जो वह हमारे लिए कर रहा था एक प्रकाशन है। उसने अपने मृत्यु को उनके लिए जिन्होंने उसके पीछे आना था, छुड़ौती बताया (मत्ती 20:28)। उसने अपने लहू को हमारे पापों की क्षमा के लिए बहाया गया बताया (मत्ती 26:28)। वह अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान दे रहा था (यूहन्ना 10:11)। उसने कहा, "अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।" परमेश्वर की सनातन मंशा के केन्द्र में संसार के पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के लिए यीशु की मृत्यु है।

3. *अपनी आंखों से कब्र को देखकर हम यीशु के पीछे चलने के दृढ़ संकल्प लेने के लिए विवश हो जाते हैं।* अपने मन की गहराई से हम शिष्य बनने के लिए अपने जीवन दे देते। ऐसे समर्पण करने के लिए केवल यीशु की मृत्यु ही विवश कर सकती थी। पेशियां, कोड़े मारे जाना, क्रूस और हमारे प्रभु की मृत्यु से जुड़ी और घटनाओं में खींचने वाली सामर्थ है; उनमें ईश्वरीय प्रेम का दबाव है। यीशु ने कहा, "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा" (यूहन्ना 12:32)। कब्र पर विचार करते हुए हमें उस खींचने वाली सामर्थ को अहसास होता है।

निष्कर्ष: दु:ख, प्रेम, समझ और पश्चात्ताप से विवश होकर हम उसके लिए जो हमारे लिए मर गया कभी न खत्म होने वाली सेवा के लिए अपने मनों को देते हैं। क्रूस पर और कब्र के पास की दो जगहों हैं जहां पर हमें खड़े होकर बैठे रहना आवश्यक है। हम एक पर खड़े होते हैं और दूसरे पर बैठते हैं। क्रूस पर हम उसे देखते हैं जो यीशु ने किया। लहू लाल है और दु:ख विशाल है। कब्र पर हम उस सब पर ध्यान करते हैं जो उसने किया। विचार गहरा है, और याद ताज़ा है।

कब्र पर हमें खामोशी और भक्ति मिलती है, जो उस सब पर विचार करने की जो हमारी ओर से उसने सहा, बिल्कुल सही जगह है। हमें क्रूस और कब्र दोनों की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि हम क्रूस के कदमों के पास खड़े होकर इसे देखें और यह आवश्यक है कि हम कब्र के पास बैठकर इसके अर्थ पर ध्यान करें।

टिप्पणियां

[1]समानांतर विवरण मत्ती 27:1, 2, 11–14; लूका 23:1–3; और यूहन्ना 18:28–38 में हैं। [2]यीशु के साथ पिलातुस की बातचीत के विवरण के लिए, देखें यूहन्ना 18:33–38. मरकुस में उनके बीच हुई बातचीत में से अधिकतर बातें नहीं हैं और न ही मसीह के राज्य की कोई चर्चा है। इन आयतों में पिलातुस का पहले का वह निर्णय, जिसमें उसने यीशु में कोई दोष नहीं पाया (लूका 23:4; यूहन्ना 18:38); उसका यीशु को हेरोदेस के पास भेजना जिसके अधिकार क्षेत्र में गलीली लोग आते थे (लूका 23:6); और उसका सांकेतिक रूप में हाथ धोना होना (मत्ती 27:24, 25) भी नहीं है। (एल. ए. स्टॉफ़र, *मरकुस,* ट्रुथ कॉमैंट्रीज़, गार्डियन ऑफ़ ट्रुथ फ़ाउंडेशन [बाऊलिंग ग्रीन, कैंटकी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1999], 372.) [3]यह पहला शिलालेख है जिसके ऊपर पिलातुस का नाम खुदा हुआ था। शिलालेख में उसे "[प्राफे]क्टस" कहा गया है। (जोसेफ एम. होल्डन ऐंड नॉरमन गीस्लर, *द पॉपुलर हैंडबुक ऑफ़ आर्कियोलोजी ऐंड द बाइबल* [यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 2013], 347.) [4]फिलो *ऑन द एम्बेसी टू गयुस* 38 [301]. [5]जैसा कि जोसेफ़स ने कहा है कि तिबरयुस के समय के बाद तक इन हाकिमों को "प्रोक्यूरेटर" नहीं कहा जाता था। [6]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 18.3.1 [55–56]; *वार्स* 2.9.2–3 [169–71]. [7]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 18.3.2 [60–62]; *वार्स* 2.9.4 [175–77]. [8]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 18.4.2 [85–89]; विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मरकुस,* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1975), 628–29; होलडन ऐंड गेस्लर, 345–47. [9]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 18.4.2 [89]. [10]यूसबियुस *इक्लेस्टिकल हिस्टरी* 7.

[11]प्रेरितों 25:21, 25 में यूनानी शब्द का अनुवाद "महाराजा अधिराज" हुआ है और प्रेरितों 27:1 में इस शब्द का विशेष रूप "औगुस्तुस" है। [12]स्टॉफर, 374. [13]यीशु की पेशियों के दौरान पिलातुस ने कम से कम तीन बार कहा कि मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता (लूका 23:4, 14, 22)। पिलातुस के यीशु में "कोई दोष न" ढूंढ़ने के यूहन्ना के हवाले 18:38; 19:4, 6 में हैं। [14]इन टिप्पणियों में यूहन्ना 19:4–11 में बाद में यीशु के साथ पिलातुस की किसी मुलाकात की बात है। [15]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 1264. [16]मरकुस जहां हन्ना के अधीन यीशु की पेशी को शामिल नहीं करता (देखें यूहन्ना 18:13), वहीं काइफ़ा के अधीन उसकी पेशी मरकुस 14:53–65 में है और पिलातुस के अधीन उसकी पेशी को मरकुस 15:1–15 में दिया गया है। [17]समानांतर विवरण मत्ती 27:15–21; लूका 23:17–19; और यूहन्ना 18:39, 40 में हैं। [18]हैंड्रिक्सन, 635. [19]स्टॉफर, 377. [20]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मत्ती,* अंक 2, द डेयली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 399; द *न्यू बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. जे. डी. डग्लस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़्मैंस पब्लिशिंग कं., 1962), 132–33 में ए. एफ़ वॉल्स, "बरब्बास।"

[21]बार्कले, 399. [22]समानांतर विवरण मत्ती 27:22–26; लूका 23:20–25; और यूहन्ना 19:1 में हैं। [23]*द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 657 में लॉरमन एम. पीटरसन, "पाइलेट।" [24]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री,* अंक 1, *मत्ती ऐंड मरकुस* (डेस मोइनेस: यूजीन एस. स्मिथ, 1875), 243. जोसेफ़स *वार्स* 2.14.9 [306] में यह उदाहरण देखने को मिलता है। [25]रेमंड ई. ब्राउन, द *डेथ ऑफ़ द मसायाह: फ़्रॉम गेथसमनी टू द ग्रेव,* अंक 1, द एंकर बाइबल रेफरेंस लाइब्रेरी (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1994), 851. [26]इन में से कुछ विवरण विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मरकुस,* दूसरा संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1956), 377 में मिलते हैं। और जानकारी "Third Stage of the Roman Trial. Pilate Reluctantly Sentences Him to Crucifixion" से ली गई, 7 फरवरी 2018 को देखा गया, https://www.biblestudytools.com/commentaries/the-

fourfold-gospel/by-sections/third-stage-of-the-roman-trial-pilate-reluctantly-sentences-him-to-crucifixion.html. [27]हैंड्रिक्सन, 639. कहा जाता है कि पिलातुस ने लूका 23:4, 14, 22 (देखें 23:15) और यूहन्ना 18:38; 19:4, 6 में यह कथन दिया था। [28]मैक्गर्वे, 242–43. [29]समानांतर विवरण मत्ती 27:27–31 और यूहन्ना 19:2–16 में हैं। [30]आर. ए. कोल, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मरकुस: ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़्मैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 237.

[31]बार्कले, *मरकुस,* 377. [32]वहीं। [33]फोस्टर, 1269–70. [34]वहीं, 1270. [35]समानांतर विवरण मत्ती 27:32, 33 और लूका 23:26–33 में हैं (देखें यूहन्ना 19:17)। [36]कम से कम दो प्राचीन लेखकों ने कहा है कि दण्ड पाए हुए व्यक्ति को अपना क्रूस उस जगह पर जे जाना होता था जहां पर उसे क्रूस पर चढ़ाया जाना हो। पहली सदी के अंत से दूसरी सदी के आरम्भ का एक लेखक प्लुटार्क था। (प्लुटार्क *डि सेरा न्यूमिनिस विंडिक्टा [ऑन द डिले ऑफ़ द डिवाइन वेंजियंस],* 9), और दूसरा दूसरी सदी के अंत का *आर्टेमिडोरस* डाल्डियानुस था (*आर्टेमिडोरस ओनेरोक्रिटिका [इंटरप्रिटेशन ऑफ़ ड्रीम्स]* 2.56.) सम्भवतया दण्डित व्यक्ति केवल भारी शहतीर ले जाता होगा (द *पेटिबुलम*)। [37]फरीसी लोग ''एक जन को अपने मत में लाने के लिए सारे जल थल में फिरते'' थे (मत्ती 23:15)। इसमें अफ्रीका शामिल था, सो शमौन को उसके अपने परिवर्तन या उसके अपने माता – पिता के परिवर्तन के बाद यहूदी नाम दिया गया होगा। [38]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 14.7.2 [115]. जोसेफ़स के अनुसरार स्ट्रेबो ने यहूदियों को कुरेने के लोगों की चार श्रेणियों में रखा है। [39]यरूशलेम के निकट दफ़नाए जाने वाली एक गुफ़ा में एक मेहराबदार छत वाली कब्र मिली जो कुरेनी यहूदियों के किसी परिवार की है। इसके शिलालेख पर लिखा है, ''शमौन का पुत्र सिकन्दर'' (जेम्स एच. चार्ल्सवर्थ, सम्पा. जीज़स ऐंड आर्क्योलोजी [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एडज़्मैंस पब्लिशिंग कं., 2006], 339–40)। रोमियों 16:13 में पौलुस ने ''रूफुस'' को ''उसकी माता'' के साथ सलाम भेजा। यदि यह वही आदमी था तो वह और उसकी माता मसीही बन गए थे। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि शमौन खुद भी मसीही था। [40]स्टॉफर, 386.

[41]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिलीजेंट (मरकुस),* न्यू टैस्टामैंट कॉमैंट्री (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: डेविड सी. कुक, 1987), 178. [42]देखें मत्ती 16:24; मरकुस 8:34; और लूका 9:23. [43]द *ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी,* सम्पा. मेरिल सी. टेनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 317 में ब्रिग्स पी. डिंगमैन, ''गोलगोथा।'' [44]326 ई. में सम्राट काँसटेन्टाइन की माता हेलेना को यीशु की कब्र सहित ''पवित्र स्थलों'' की पहचान के लिए इस्राएल में भेजा गया। उस स्थान पर जहां उसने यीशु के क्रूसारोहण के स्थान और दफ़नाए जाने का दावा किया, एक चर्च भवन बनाया गया; वह भवन नष्ट हो चुका है और उसे कई बार बनाया गया है। (जी. फ्रैड्रिक ओवन, *जेरूसलेम* [ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1972], 81–83.) [45]समानांतर विवरण मत्ती 27:34–37; लूका 23:33, 34, 38; और यूहन्ना 19:18–25 में दिए गए हैं। [46]नीतिवचन 31:6 की ओर संकेत के साथ इस प्रथा को बेबिलोनियन तालमुड *सेन्हेड्रिन* 43a में बताया गया है। [47]ऐलन ब्लैक, *मरकुस,* द कॉलेज प्रेस NIV कॉमैंट्री (जोपलिन, मिसोरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कं., 1995), 272. [48]बार्कले, *मरकुस,* 380; फोस्टर, 1272. [49]भजन 22 में मसीहा की और भविष्यद्वाणियां क्रूसारोहण की घटनाओं में पूरी हुईं। (देखें 22:1, 16–18, 22.) [50]फोस्टर, 1273.

[51]एल ऐ स्टाफर ने ध्यान दिलाया कि 15:24 वाला ''ऐतिहासिक तोहफ़ा'' अनुवाद बना देता है ''जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे।'' इससे पाठक को ऐसा महसूस होने में सहायता मिलेगी जैसे वह उस कार्यवाही के लिए वहीं हो। (स्टाफर, 386.) [52]जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 3.7.4. [161]. [53]हमारे महायाजक के रूप में यीशु की भूमिका की चर्चा इब्रानियों 3–5 में की गई है। [53]बार्कले, *मरकुस,* 381. [55]ब्राउन, 953. [56]मिलीटो *ऑन द पास्च,* 97. [57]विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है कि यीशु की पेशियां और क्रूसारोहण जल्दी–जल्दी हुए, ताकि बताई गई ये घटनाएं दिए गए समय के अंदर हो सकें। जहां तक मरकुस 15:25 और यूहन्ना 19:14 में दिए गए समयों के बीच अंतर की बात है, समय की यहूदी और रोमी गणना से यह समस्या सुलझ जाती है (हैंड्रिक्सन, 652.) वियर्सबे और फोस्टर ने भी कहा है कि मरकुस में दी गई जानकारी समय की यहूदी गणना के अधार पर है जबकि यूहन्ना रोमी सिस्टम के आधार पर बताता है। (वियर्सबे, 178; फोस्टर, 1280–81.) [58]यूसबियुस *एक्लेस्यिटिकल हिस्टरी* 5.1; सुटोनियुस *टवेल्व सीज़र्स: कलिगुला* 32; सुटोनियुस *टवेल्व सीज़र्स: डोमिशियन* 10. [59]ब्राउन, 963. [60]फोस्टर, 1272.

[61]अरामी सातवीं सदी ईसा पूवज़् में बेबिलोन की दासता की भाषा था। यही कारण है कि यहूदियों के

पलिश्तीन में वापस आने पर जब व्यवस्था को पढ़ा गया तो इब्रानी भाषा का अनुवाद किया गया (देखें नहेम्याह 8:8)। मरकुस में कुछ अरामी अभिव्यक्तियों और शब्दों का अर्थ बताया गया है: ''बुअनरगिस'' (3:17); ''तलीता कूमी'' (5:41); ''कुरबान'' (7:11); ''इप्फत्तह'' (7:34); ''बरतिमाई'' (10:46); ''अब्बा'' (14:36); ''गुलगुता'' (15:22); और ''इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी'' (15:34)। यह तो पक्का है कि यीशु को यूनानी, इब्रानी और अरामी भाषा आती थीं (पवित्र आत्मा की सामर्थ के बिना जिसके द्वारा वह हर भाषाओं को जान सकता था)। आरामी भाषा पलिश्तीन में लगभग चार सौ वर्षों से इस्तेमाल जा रही थी। [62]फोस्टर, 1275. [63]समानांतर विवरण मत्ती 27:38–44; लूका 23:33–43; और यूहन्ना 19:18 में दिए गए हैं। [64]कोल, 240. [65]73 ई. पूर्व में स्पार्टकस की अगुआई में इटली में गुलामों और 70 ई. में युद्ध के अंत में यरूशलेम के लोगों जैसे बड़े विद्रोहों को छोड़कर यह आम तौर पर सही था। [66]यह आरोप कि ''इस ने औरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता'' (मरकुस 15:31) यीशु के विरोध में सबसे बड़ा तर्क बनाने के लिए था, क्योंकि बहुत से लोगों के लिए उसका क्रूस पर मर जाना इसका सबूत था कि वह मसीहा नहीं हो सकता था। परन्तु इस कथन के पहले भाग में अनजाने में मान लिया गया कि यीशु ने सचमुच दूसरों को बचाया था। [67]यीशु का पूर्व ज्ञान इस बात में मिलता है कि उसने और डाकू दोनों ने उसी दिन स्वर्गलोक में मध्यम स्थिति में होना था। [68]हैंड्रिक्सन, 656–57. [69]हैंड्रिक्सन, 651 से लिया गया। [70]समानांतर विवरण मत्ती 27:45–50; लूका 23:44–46; और यूहन्ना 19:28–30 में दिए गए हैं।

[71]ऐसा लगता है कि यीशु योना द्वारा मछली के पेट में बिताए गए तीन दिन और रात की ओर संकेत कर रहा था; उसने इसका इस्तेमाल उस समय के अपने ज्ञान को दिखाने के संकेत के रूप में किया जो उसने कब्र में बिताना था। यहूदी उपयोग में ''तीन रात दिन'' का अर्थ ''एक पूरा दिन, दो पूरी रातें और दूसरे दो दिनों के भाग'' होना था। (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ऐंड फिलिप वाई. पेंडल्टन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हार्मनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 306.) जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने बड़े विस्तार से और निर्णायक ढंग से दिखाया कि अंग्रेज़ी भाषा में इस वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए चाहे समय की ऐसी अवधि का वर्णन नहीं होना था, परन्तु स्पष्ट रूप में यह इसे व्यक्त करने का इब्रानी ढंग था। (मैक्गर्वे, *कॉमैंट्री,* 111–13.) [72]फोस्टर, 1280–82. [73]जी. कैंपबेल मोर्गन ने कहा है, ''[यीशु] के लिए अंधकार वह समय था जब उसने वह सहा जो भी 'तूने मुझे छोड़ दिया' शब्दों का अर्थ हो सकता था [मत्ती 27:46]'' (जी. कैंपबेल मॉर्गन, ''द डार्कनेस ऑफ़ गोलगोथा,'' *ओल्ड पाथ्स मैगज़ीन* 16, फरवरी 19, 2018 को देखा गया, http://www.sermonindex.net/modules/articles/index.php?view=article&aid=20607) । [74]पहला फसह तब हुआ जब इस्राएलियों को उनके पहलौठों की मृत्यु से छूट दी गई, जिसने ''आधी रात के लगभग'' मिस्रियों को मारा था (निर्गमन 11:4)। [75]वियर्सबे, 180. [76]हैंड्रिक्सन, 662. [77]टॉम होलेमैन ऐंड स्टैनली ई. पोर्टर, संपा., *हैंडबुक फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ द हिस्टोरिकल जीज़स,* अंक. 1, *हउ टू स्टडी द हिस्टरोरिकल जीज़स* (बोस्टन: ब्रिल, 2011), 863. [78]बार्कले, *मरकुस,* 383. [79]कई बार यीशु उसी भाषा में बात करता था जो उसने बचपन में सीखी थी (मरकुस 3:17; 5:41; 7:11; 7:34; 14:36)। क्रूस के निकट के कुछ लोगों तथा मरकुस के आरभिक पाठकों में से कुछ के लिए उसकी बातों का अर्थ बताया जाना आवश्यक था।

[80]कोल, 244. [81]फोस्टर, 1283. [82]नये नियम में बताया गया हर रोमी सूबेदार समझदार आदमी लगता है जो मसीह और उसकी कलीसिया का हितैषी था। [83]फोस्टर, 1285. [84]''प्राण'' ἐκπνέω (***ekpneō***) से लिया गया है जिसका अर्थ है *''सांस छोड़ना, दम निकलना, अंतिम सांस, मर जाना''* (जोसेफ़ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962], 199)। [85]समानांतर विवरण मत्ती 27:51–56 और लूका 23:45–49 मैं हैं। [86]जोसेफ़स *वार्स* 5.5.4. [211–14]. [87]मिशना *शेकालिम* 8.5. [88]बेबिलोन ताल्मुड *योमा* 39ख. [89]फोस्टर, 1288. [90]ब्लैक, 280. ''कोल्वेल का नियम'' यह है कि ''क्रिया से पहले आने वाली निश्चित विशेषण संज्ञाओं में आम तौर पर उपपद नहीं होता'' (ई. सी. कोल्वेल, ''ए डेफ़िनिट रूल फ़ॉर द यूज़ ऑफ़ द आर्टिकल इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,'' *जर्नल ऑफ़ बिब्लिकल लिट्रेचर* 52 [1933]): 20.

[91]फोस्टर, 1289. [92]मैक्गर्वे, *कमैंट्री,* 248. [93]लूका 7:5 बताता है कि एक सूबेदार ने यहूदियों के लिए आराधना बनवाया था। बाद में एक और ने पौलुस की जान तब बचाई थी जब सिपाहियों ने प्रेरित को और उसके सब साथी कैदियों को जो जहाज पर सवार थे, मार डालने की कोशिश की थी (प्रेरितों 27:41–43)। [94]कोल, 246. [95]समानांतर विवरण मत्ती 27:57–61; लूका 23:50–55; और यूहन्ना 19:38–42 में हैं। [96]फोस्टर, 1305. [97]वहीं, 1307. [98]इस

पाठ को प्रासंगिक बनाने के लिए अपने इलाके का नाम डाल लें। [99]ज्योफ्री एंकेटेल स्टडर्ट कैनेडी ''इंडिफ्रेंस,'' द *अनअरटेबल ब्यूटी: द कलेक्टेड पोयट्री ऑफ़ जी. ए. स्टडर्ट कैनेडी* (लंदन: हॉडर ऐंड स्टाउटन, 1927), 24 से लिया गया। [100]मत्ती 27:46 इब्रानी नाम ''एली, एली'' (ἠλί ἠλί) इस्तेमाल हुआ है जबकि मरकुस 15:34 में ''हे मेरे परमेश्वर हे मेरे परमेश्वर'' के लिए नाम ''इलोई, इलोई'' (ἐλωΐ ἐλωΐ) है।

[101]पोलिब्युस *हिस्ट्रीज़* 6.24. [102]देखें मत्ती 27:46; मरकुस 15:34; लूका 23:46; यूहन्ना 19:28, 30. 107 [106]गोर्डन एच. गिरोद, *वर्ड्स ऐंड वंडर्स ऑफ़ द क्रॉस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 114. [104]अल्फ्रेड व सम्पा, द *लाइफ एंड टाइम्स ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेट एडि. (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हैंड्रिक सन पब्लिशर्स, 1994), 894. [105]गिरोड, 113–14 से लिया गया। [106]एफ़. जे. ह्यूगल, द *क्रॉस थरू द स्क्रिप्चर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1966), 9–10.